तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष-8, अंक- 1, दिसंबर 2019, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

नन्हे-मुन्ने बाल भी, ऊँची भरें उड़ान
बिना पंख परवाज़ दे, ऐसा गुरु का ज्ञान

देना मालिक साथ

करते हैं हम वंदना, दोनों जोड़े हाथ।
सच्चा पाएँ ज्ञान हम,देना मालिक साथ।।

अच्छाई की राह पर, चलते जाएँ झूम।
भूलें मन से भेद को, अपनेपन की धूम।
कोशिश होगी रात-दिन, मंज़िल आए हाथ।
सच्चा पाएँ ज्ञान हम,देना मालिक साथ।।

मन में सेवा भाव हो, कुछ करने का चाव।
माँ-बापू का मान हो, सबसे खास लगाव।
आदर गुरुओं का करें, विद्या आए हाथ।
सच्चा पाएँ ज्ञान हम, देना मालिक साथ।।

पुस्तक जीवन मीत हो, सब कुछ जाएँ जीत।
ऊँचा जग में नाम हो, गूँजेंगे फिर गीत।

अनुशासन के पेड़ से, फल आएँगे हाथ।
सच्चा पाएँ ज्ञान हम, देना मालिक साथ।।

इक तेरा आशीष हो, इक तेरा अभिमान।
मन से सारे काम हों, लब पर हो मुस्कान।
जीवन बीते मौज में, सिर पर रखना हाथ।
सच्चा पाएँ ज्ञान हम, देना मालिक साथ।।

करते हैं हम वंदना, दोनों जोड़े हाथ।
सच्चा पाएँ ज्ञान हम,देना मालिक साथ।।

राधेश्याम बंगालिया 'प्रीतम'
प्रवक्ता हिंदी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय किरावड़
जिला- भिवानी

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

दिसंबर 2019

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
प्रधान सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. राकेश गुप्ता
राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ. बलकार सिंह
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

प्रदीप कुमार
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

सतिन्द्र सिवाच
संयुक्त निदेशक (प्रशासन),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"वही लोग दुनिया में कमाल करते हैं, जो औरों से हटकर, कुछ अलहदा ख्याल करते हैं।"

» भोपाल मैं म्हारी छोरियाँ का जबरदस्त धमाल 5
» राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2019, कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु 6
» अध्यापक क्षमता संवर्धन कार्यक्रम : चरणबद्ध ढंग से 10
» सीखने की क्षमता को बेहतर बनाती है 'कॉन्सैप्ट मैपिंग' 14
» नंगल में कला-अध्यापकों की कार्यशाला 15
» पंचमढ़ी: जो हमेशा के लिए दिलों में बस गई 16
» प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए एक सुनहरा अवसर 20
» खेल-खेल में विज्ञान 22
» मडलौडा कन्या विद्यालय: जहाँ होता है बेटियों का सर्वांगीण विकास 24
» तीन चित्रकार सहेलियाँ- खुशी, अंजली, मीना 26
» मिट्टी में जान फूँकते हैं प्राध्यापक एकलव्य लखनपाल 27
» बाल सारथी 28
» अविस्मरणीय रही अग्रोहा यात्रा 30
» अनसोशल करता सोशल मीडिया 31
» Does it pay to speak English in India ? 32
» Positioning the Idea of Effective Mentoring... 36
» Snowden 40
» Save that Drop of Oil 42
» Don't Get Scared of Risks 43
» Thermocol from Bane to Boon 44
» How to deal with inferiority complex 45
» Peaceful societies : exploring the role of a teacher 46
» Ode to Mother Earth 48
» Letter from Santa 49
» आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

रचनाशीलता को उर्वर बनाता है मौलिक लेखन

लेखन एक कला है। यह अभिव्यक्ति का एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों को सहेजते हैं। कई बार लेखन दूर-दराज के लोगों को अपने विचार भेजने के लिए होता है तो कई बार हमारे अपने ही विचारों या अनुभव को अपने ही लिए सहेजने के लिए। सच तो यह है कि लेखन अभिव्यक्ति, मौखिक अभिव्यक्ति से ज्यादा कठिन होती है। बोलते समय हम वाक्य विन्यास, शब्दों के चयन या व्याकरण की शुद्धता के प्रति बहुत अधिक सचेत हों या न हों, लेकिन लेखन के समय हमारी लेखनी ज्यादा अनुशासित होती है। हमारे बहुत से अध्यापक गण 'शिक्षा सारथी' के लिए नियमित रूप से लिखते रहते हैं। कुछ अध्यापक जब भी किसी शिविर या यात्रा पर बच्चों के साथ जाते हैं तो उसके अनुभव 'शिक्षा सारथी' के साथ साझा करते हैं। हमारी कोशिश रहती है कि ऐसी रचनाओं को पत्रिका में अधिक से अधिक स्थान दिया जाए। इस अंक में नंगल में कला अध्यापकों की कार्यशालाओं, पंचमढ़ी में लगे राष्ट्रीय एडवेंचर कैंप के साथ-साथ भिवानी जिले के सांगा विद्यालय की नौवीं कक्षा की छात्रा के यात्रा वृत्तान्त को भी स्थान दिया गया है। आप भी शिक्षा के क्षेत्र में अपने द्वारा अपनाए जा रहे नवाचारों एवं शैक्षणिक यात्राओं आदि के साथ-साथ अपनी साहित्यिक रचनाएँ हमें भेजते रहिये। अपने-अपने विद्यालयों में विद्यार्थियों को मौलिक लेखन के लिए प्रोत्साहित करते रहिये। स्वयं भी लिखिए और विद्यार्थियों को भी रचनात्मक लेखन के लिए प्रेरित कीजिए। आपकी रचनात्मक यात्रा में 'शिक्षा सारथी' सदैव आपके साथ है।

-संपादक

भोपाल मैं म्हारी छोरियाँ का जबरदस्त धमाल

राष्ट्रीय बालरंग प्रतियोगिता में चौदह राज्यों की टीमों में हरियाणा का दूसरा स्थान

डॉ. प्रदीप राठौर

भोपाल में 20-21 दिसंबर को आयोजित राष्ट्रीय बालरंग प्रतियोगिता में हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए दूसरा स्थान अर्जित किया। इस प्रतियोगिता में इस वर्ष 14 राज्यों की टीमों ने हिस्सा लिया था। लोक शिक्षण संचालनालय, स्कूल शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश, भोपाल एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, श्यामला हिल्स, भोपाल के तत्त्वावधान में प्रतिवर्ष इस राष्ट्रीय स्तर के उत्सव का आयोजन किया जाता है। इस उत्सव का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय एकता व अखंडता की भावना को प्रोत्साहित करना तथा राष्ट्र के विभिन्न क्षेत्रों के सांस्कृतिक मूल्यों एवं जीवन शैलियों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना है।

प्रतियोगिता में भाग ले रही 14 टीमों में से जिन टॉप तीन टीमों का चयन किया गया, वे क्रमशः हैं- सिक्किम, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश। छत्तीसगढ़ व हिमाचल प्रदेश को सांत्वना पुरस्कार से संतोष करना पड़ा।

हरियाणा की टीम के रूप में भाग ले रही सभी लड़कियाँ राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मुरथल अड्डा, जिला सोनीपत की थीं। गौरतलब है कि दो वर्ष पूर्व इसी विद्यालय की टीम ने इसी उत्सव में प्रथम रहकर पूरे देश के सामने हरियाणवी लोक-संस्कृति का परचम लहराया था। विद्यालय की प्रधानाचार्या संतोष राठी के नेतृत्व में, नृत्य प्रशिक्षक पारूल व वोकल म्यूजिक इंस्ट्रक्टर निधि के मार्गदर्शन में विद्यालय की छात्राओं ने कमाल का प्रदर्शन किया।

'पीली सरसों न्यू लागै जणू नई बहू सरमाई' गीत पर किए गए नृत्य में हरे भरे खेत-खलिहानों में काम कर रहे मेहनतकश किसान, उनके लिए खेतों में 'बोइये' में रख कर 'रोटी' ले जाती बीरबानियाँ आदि के माध्यम से परंपरागत पहनावे के साथ-साथ हरियाणवी लोक संस्कृति को पूरी जीवंतता के साथ मंच पर उतारने का प्रयास किया गया। संगीत भी इतना प्रभावी था कि दर्शक भी झूमने को मजबूर हो गए। विद्यार्थियों का हौसला बढ़ाने के लिए मुख्यालय से सहायक निदेशक नंद किशोर वर्मा व कार्यक्रम अधिकारी प्रमोद कुमार भी टीम के साथ भोपाल पहुँचे थे।

प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश का भगोरिया, छत्तीसगढ़ का थापरा, दादरा नगर-हवेली का तूर, गोवा का मसूल, सिक्कम का मारूणी, आंध्रप्रदेश का दंडालो आदिवासी नृत्य, मणिपुर का छोलम, तेलंगाना का धिमसा, चंडीगढ़ का भांगड़ा और हरियाणा का धमाल देखने को मिला।

राष्ट्रीय स्तर की इस बालरंग प्रतियोगिता ने काफी प्रतिष्ठा अर्जित की हुई है। गीत-संगीत का यह महोत्सव हर वर्ष दिसंबर या जनवरी माह में आयोजित किया जाता है। वास्तव में यह महोत्सव बच्चों में अपने देश और संस्कृति के प्रति सम्मान की भावना पैदा करने का एक बेहतरीन जरिया है तथा बच्चों में छिपी प्रतिभा को सामने लाने का यह एक सशक्त प्रयास है। ऐसे आयोजन निश्चित रूप से बच्चों के भावात्मक विकास के साथ-साथ उन्हें राष्ट्रीय एकता के सूत्र में भी बाँधते हैं। बच्चे न केवल अपने प्रदेश की संस्कृति का प्रदर्शन करते हैं, बल्कि दूसरे राज्यों की संस्कृतियों के विविध रंगों से भी परिचित होते हैं।

प्रतियोगिता में प्रतिभागी टीमों को प्रतियोगिता के नियमों व निर्देशों का कठोरता से पालन करना होता है। प्रतियोगिता की पहली शर्त तो यही है कि इसमें प्रतिभागी टीमों को अपने-अपने राज्य के परंपरागत नृत्य का प्रदर्शन करना होता है। गत वर्षों की प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को पुनः अगले वर्षों की प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति नहीं दी जाती। प्रत्येक राज्य की टीम में अधिकतम 15 विद्यार्थी व 5 अध्यापक/प्रबंधकों को भाग लेने की अनुमति होती है। टीमों को अपनी-अपनी प्रस्तुति के लिए 10 मिनट का समय दिया जाता है। विशेष बात यह है कि प्रस्तुति लाइव म्यूजिक पर होती है, सीडी/डीवीडी आदि की अनुमति नहीं होती।

विद्यालय शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव डॉ. महावीर सिंह व निदेशक डॉ. बलकार सिंह ने छात्राओं की इस शानदार उपलब्धि पर उन्हें तथा उनके अध्यापकों को बधाई दी।

drpradeeprathore@gmail.com

राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2019, कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु

प्रमोद कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर चार साल के गहन अध्ययन, मंथन, चर्चा-विमर्श के उपरान्त अन्ततः मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा 55 पृष्ठों का एक नोट तैयार कर लिया है। आशा है राष्ट्रीय शिक्षा नीति को संसद के शीतकालीन अधिवेशन में यह प्रस्तुत कर दिया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर कार्य करने के लिए जून 2017 में गठित कमेटी द्वारा कुल 14 बैठकें की गईं जिनमें 74 संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, अन्तरराष्ट्रीय संस्थानों, ट्रस्ट, संगठन, विभाग, आयोग, प्रशिक्षण संस्थानों, फाउंडेशन के साथ-साथ यूनीसेफ से चर्चा की गई, 217 प्रतिष्ठित व्यक्तियों से विचार लिए गए। समिति की सचिव शकीला शम्सु द्वारा अध्यक्ष कस्तूरी रंगन जी की अनुमति से 650 पृष्ठों का ड्राफ्ट जारी किया जिसके उपरान्त इसे सितम्बर मास में कैब कमेटी की बैठक में सभी राज्यों के शिक्षा मन्त्रियों के समक्ष प्रस्तुत किया गया। अब अन्ततः उस 640 पृष्ठों के ड्राफ्ट से 55 पृष्ठों का नोट बनाया गया। अगर इसका स्कूल शिक्षा के नजरिये से अवलोकन किया जाए तो पहले 24 पृष्ठों पर आठ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं का जिक्र किया गया है।

सिद्धांत- देश में ऐसे शिक्षण संस्थान उपलब्ध करवाना जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी का स्वागत हो। उसे सुरक्षा का अहसास हो, जहाँ उसे अनुभव से सीखने के पूरे अवसर प्राप्त हों, स्कूल में हर ढाँचागत सुविधा उत्कृष्ट हों। शिक्षा व्यवस्था में लचीलापन हो ताकि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी क्षमता और रुचि के अनुसार अपने सीखने के रास्ते का चुनाव कर सके। जहाँ पाठ्य क्रियाओं और सहपाठ्य क्रियाओं में भेद न हो, कौशल शिक्षा और शैक्षणिक पाठ्यक्रम साथ-साथ चलें, साइंस, आर्ट, सामाजिक विज्ञान, खेलकूद, मनोविज्ञान आदि साथ-साथ चलें, जहाँ रटने की अपेक्षा अवधारणा को समझने पर बल दिया जाए, जहाँ सृजनात्मकता और विश्लेषण को बढ़ावा दिया जाता हो, जो नवाचार को बढ़ावा देता हो, ऐसा विद्यालय जो जीवन मूल्यों और सिद्धांतों, आदर्शों, जीवन कौशलों जैसे सहयोग, संगठन, समूह में काम करना, सम्प्रेषण जैसे गुणों का नेतृत्व एवं विकास के अवसर उपलब्ध करवाता हो। समता और समानता, एकीकरण एवं समावेश, विभिन्नता एवं अनेकता को खुले मन से

समझने की प्रेरणा देता हो, एक ऐसा विद्यालय जो ऐसे नागरिक तैयार करे जो स्वार्थ लालच जैसे विषयों से हटकर 'सबका साथ, सबका विकास' करने को तैयार रहें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्कूल शिक्षा के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा से बारहवीं तक का उल्लेख किया गया है जिसमें फाउंडेशन ऑफ लर्निंग में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए व्यवस्था बनाई गई है। अब विद्यार्थी सीधे पहली कक्षा में नहीं जाएँगे, उन्हें तीन वर्ष की औपचारिक शिक्षा लेनी होगी। पूर्व प्राथमिक शिक्षा लचीली होगी जो खेल-खेल में गतिविधि आधारित खोज के सिद्धांत पर होगी तथा जिसमें अंक, शब्द, भाषा, गिनती, रंग, आकार, पेंटिंग, डांस, ड्रामा, कहानी, कठपुतली, संगीत आदि का समावेश होगा। इसके लिए एनसीईआरटी द्वारा पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाएगा और आँगनवाड़ी केन्द्रों के माध्यम से पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों की मदद से दी जाएगी। कक्षा तीसरी से पाँचवीं के तीन वर्षों को फाउंडेशन लिटरेसी एंड न्यूमरेसी के नाम से जाना जाएगा। इसमें मुख्यतः पढ़ना, लिखना, बोलना, गिनना, गणित तथा गणित के माध्यम से अनुमान, आकलन एवं समझ का विकास करना, जो जोड़, घटाव, गुणा-भाग से परिचय करवाता हो और उसे जीवन में उपयोग में सक्षम बनाता हो, शामिल किया गया है। विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य को भी अधिमान दिया गया है जिसमें पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवाने के लिए मध्याह्न भोजन के साथ नाश्ता भी दिया जाना प्रस्तावित है।

ड्रॉप आउट कम करना तथा स्कूल उपलब्ध करवाना- इसके सन्दर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्पष्ट उल्लेख है कि कक्षा पहली में दाखिल होने वाला प्रत्येक विद्यार्थी अनिवार्य शिक्षा पूरी करे। बच्चे स्कूल बीच में न छोड़ें। आज पहली कक्षा में दाखिल बच्चों का 51 प्रतिशत ही कक्षा बारहवीं तक पहुँचता है और अगर बीए पास होने के स्तर को देखा जाए जो हरियाणा जैसे प्रगतिशील राज्य में भी 28 प्रतिशत के आसपास है। अतः निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के दायरे को आठवीं से बढ़ाकर बारहवीं तक किए जाने का प्रस्ताव दिया है। पाठ्यक्रम तथा शिक्षा शास्त्र में बदलाव करके शिक्षा को समग्र, एकीकृत, रुचिकर तथा आनन्दपूर्ण बनाने पर जोर दिया गया है। हालांकि प्रदेश में चलाए जा रहे जॉयफुल सैटरडे से शुरुआत पहले से ही हो गई थी, पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने इस पर मोहर लगा दी है। आयु के अनुसार कक्षाओं की बाँट भी अलग की गई है जिसके अन्तर्गत 3 से 8 वर्ष आयु वर्ग के लिए पूर्व प्राथमिक से दूसरी तक की कक्षा, 8 से 11 वर्ष आयु वर्ग के लिए तीसरी से पाँचवीं कक्षा, 11 से 14 वर्ष आयु वर्ग के लिए छठी से आठवीं कक्षा, तथा 14 से 18 वर्ष आयु वर्ग के लिए नौवीं से बारहवीं कक्षा का निर्धारण किया गया है। पूर्व की व्यवस्था जिसमें 6 से 18 वर्ष की आयु के लिए 5+3+4 कक्षाएँ थीं, अब 3 से 18 वर्ष की आयु के लिए 5+3+3+4 बनाई गई है। सीखने

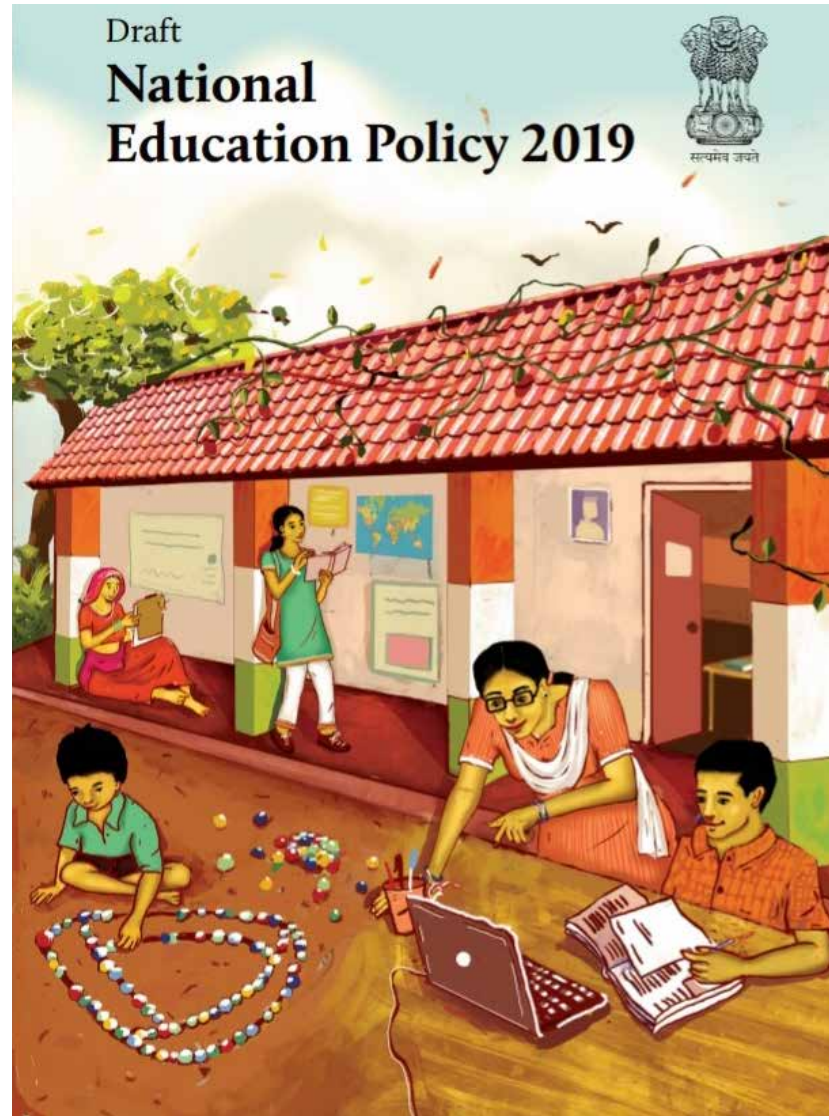

की अवधारणा में पाठ्यक्रम को महत्त्व न देकर कौशलों, दक्षता (Competency) आधारित शिक्षण अधिगम पर बल दिया गया है। एक ओर प्राथमिक कक्षाएँ जहाँ नींव मजबूत करने पर बल देंगी, वहीं दूसरी ओर वरिष्ठ माध्यमिक कक्षाएँ रोजगार के अवसरों पर केन्द्रित होंगी। इसमें समग्र शिक्षा और शिक्षा से समग्र विकास के लिए ऐसे शिक्षा शास्त्र पर बल दिया गया है जो यह सिखाये कि कैसे सीखा जाता है। आज के रट्टा लगाकर पढ़ने के तरीकों से दूर लेकर जाए और विद्यार्थी को 21वीं सदी के कौशलों के लिए तैयार करे। पाठ्यक्रम और पाठ्य सामग्री को कम करने पर भी राष्ट्रीय शिक्षा नीति में जोर दिया गया है क्योंकि वर्तमान पाठ्यक्रम को पूरा करवाने के दबाव में अध्यापकों को विद्यार्थियों को जीवन कौशल सीखाने का समय नहीं मिलता। अतः नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में समग्र सोच, खोज आधारित, चर्चा आधारित तथा विश्लेषणात्मक पठन-पाठन को मुख्यतः स्थान दिया गया है। पाठ्य सामग्री का पूरा जोर अब अवधारणा, विचार, अपनाना, करके देखना तथा समस्या समाधान करना पर केन्द्रित होगा। प्रश्न पूछने की परम्परा को मजबूत किया जाएगा, जिज्ञासा पैदा की जाएगी, ज्ञान पिपासु बनने के अवसर खोले जाएँगे।

बच्चे अपनी दक्षता, क्षमता, रुचि के अनुसार विषयों का चयन करने के लिए स्वतन्त्र होंगे। सम्पूर्ण विकास के लिए तथा समग्र विकास के लिए अवसर उपलब्ध होंगे। कक्षा आठवीं तक बच्चे की मातृ भाषा में ही शिक्षण अधिगम होगा। उसके उपरान्त मातृ भाषा एक भाषा के रूप में पढ़ाई जाएगी। अध्यापकों को दो भाषाओं में कक्षा में शिक्षण के लिए प्रेरित किया जाएगा।

एक से अधिक भाषा का जहाँ तक प्रश्न है जीवन के आरम्भ के वर्षों में इन्हें सीखना सरल है। भाषाओं को परस्पर संवादात्मक तरीके से सिखाने पर बल दिया जाएगा। ड्रामा, कविता, संगीत, गाने आदि का समावेश किया जाएगा। जहाँ तक तीन भाषा फार्मूले का सम्बन्ध है, इसे लागू रखा जाएगा। किसी भी प्रकार से किसी भाषा को थोपा नहीं जाएगा। इसमें व्यापक लचीलापन होगा, प्रत्येक विद्यार्थी एक प्रोजेक्ट लेगा जो रुचिकर होगा तथा जिसमें भारत की, अपने गृह राज्य से दूर के किसी राज्य की भाषा को सीखेगा। हरियाणा राज्य में यह जॉयफुल सैटरडे का भाग होगा तथा इसके लिए उसे प्रोजेक्ट में अंक भी मिलेंगे। संस्कृत जैसी शास्त्रीय भाषा को, उसके साहित्य को जो प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है जिसमें गणित, दर्शनशास्त्र, व्याकरण, संगीत, राजनीति शास्त्र, आयुर्वेद, वास्तुकला, धातु विज्ञान, ड्रामा, कविता, कहानी शामिल हैं, को विद्यार्थियों तक पहुँचाया जा सकता है। शास्त्रीय भाषाओं में तेलगू, कन्नड़, मलयालम, उड़ीया, पाली, फारसी, प्राकृत के साहित्य को भी स्कूल स्तर पर बढ़ावा देने पर बल दिया गया है। विद्यार्थी जब अपने विषय का चयन करें, उसमें वे अच्छे नागरिक बनें जो सबके साथ सहज रहकर सहनशीलता से नवाचार को बढ़ावा दें तथा देश की उन्नति में हमेशा अपना बेहतर योगदान दें। वे केवल भाषा ही न सीखें अपितु उनका वैज्ञानिक दृष्टिकोण हो, सत्य आधारित सोच बनाएँ, जीवन में नवाचार और सृजनात्मकता हो, साँझी तथा सामूहिक सोच हो, अच्छे नागरिक के गुण हों, संविधान के मूल्यों के प्रति आदर हो। विद्यार्थी 21वीं सदी के कौशलों Artificial Intelligence, Designing, Thinking, Organic Living and Sustinable Development, Machine Learning, Data Sciences आदि पर भी ध्यान केन्द्रित करें।

पूरे देश में एक जैसी पुस्तकें हों जिनका निर्माण एनसीईआरटी द्वारा किया जाए तथा उसमें स्थानीय विषयों, सन्दर्भों, उदाहरण एवं उत्सवों, रिवाजों और परम्पराओं को विशेष स्थान दिया जाए। इसका उद्देश्य देश के विद्यार्थियों को सस्ती दरों पर एक जैसी उच्च गुणवत्ता की पुस्तकें उपलब्ध करवाना हो। विद्यार्थी विकास के लिए मूल्यांकन व्यवस्था में भी बदलाव करने की वकालत पॉलिसी में की गई है। यह व्यवस्था विद्यार्थी का कौशल विकास आँकने, अध्यापक के अध्यापन को आँकने और पूरे विद्यालय को अपनी पठन पाठन प्रक्रिया के बदलाव में मदद करें। बोर्ड परीक्षा समग्र विकास के लिए हो, उसमें रटने की प्रक्रिया को समाप्त करने के प्रयास हों, बोर्ड परीक्षा को आसान बनाया जाए, विद्यार्थी बिना नकल के पास हों, ऐसा विश्वास बने। एनसीईआरटी इसके लिए 2022 तक अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करे तथा 2020 में NCF नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या बनाए। उच्च स्तर के प्रवेश के लिए परीक्षाओं का आयोजन एनटीए यानी नेशनल टेस्टिंग एजेंसी द्वारा किया जाए और प्रवेश परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों का चुनाव इस प्रकार करें जो रटने की प्रक्रिया को समाप्त करता हो। ऐसे विद्यार्थी जिनकी प्रतिभा

प्रखर है उनके लिए अलग व्यवस्था हो। उनकी प्रतिभा को सींचना, पालना और फलदायक बनाये जाने के प्रयास हों। ऐसी प्रतिभा की पहचान करके विशेष कार्यक्रम बनाया जाए, विषय आधारित, परियोजना आधारित क्लब और सर्कल बनाए जाने को प्रोत्साहन दिया जाएगा जिसमें साईंस सर्कल, गणित सर्कल, संगीत प्रदर्शन सर्कल, शतरंज सर्कल, काव्य, भाषा, नाटक, वाद-विवाद आदि बनाकर इनके लिए धन उपलब्ध करवाकर विद्यार्थियों को शामिल किया जाएगा। प्रत्येक विद्यार्थी की रुचि तथा उसकी प्रतिभा को सींचने का कार्य किया जाएगा। पूरे राष्ट्र में ओलंपियाड तथा अन्य प्रतियोगिताओं को बढ़ावा दिया जाएगा। क्षेत्रीय और राष्ट्रीय ओलंपियाड के परिणामों को आईआईटी तथा एनआईटी जैसे संस्थान दाखिले के समय वरीयता देंगे। क्विज़ क्लब का गठन होगा तथा ऑनलाइन क्विज़ प्रतियोगिताओं को बढ़ावा दिया जाएगा।

अध्यापक नियुक्ति आदि के लिए पॉलिसी में काफी कुछ कहा गया है, विशेषकर अध्यापक की गुणवत्ता, उसकी शिक्षा का स्तर, उसके कौशलों का स्तर, उसका साक्षात्कार तथा प्रतिभा प्रदर्शन अवलोकन उपरान्त नियुक्ति ऐसे विषय हैं जो इसमें शामिल किए गए हैं। अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों, न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता आदि भी इसमें शामिल हैं जैसे बीएड का चार वर्षीय पाठ्यक्रम बनाना, अध्यापकों की सुविधा के लिए आवास व्यवस्था उपलब्ध करवाना, ग्रामीण क्षेत्रों से अधिक अध्यापक नियुक्त हों अथवा सभी गाँवों तक, पढ़ाने के लिए अध्यापक पहुँचें, अध्यापकों की कमी को दूर करने हेतु प्रयास किए जाएं। अध्यापकों के स्थानान्तरण पर बहुत ही शानदार बात कही गई है कि इनका स्थानान्तरण जल्द न किया जाए। अध्यापक लम्बे समय तक एक विद्यालय में रहेगा तो समाज के साथ उसका लगाव, जुड़ाव, दायित्व मजबूत होगा और एक स्कूल भवन को संस्थान में परिवर्तित करेगा। स्थानान्तरण केवल तभी किया जाए जब अति आवश्यक हो जैसे पारिवारिक कारण, पदोन्नति आदि।

टीचर एलीजिबिलिटी टैस्ट को अधिक मजबूत और समग्र बनाया जाए जो अध्यापक के कौशलों और अभिप्रेरण के स्तर का भी आँकलन करे। स्कूल कॉम्पलेक्स व्यवस्था आदि में स्थानीय ज्ञान, भाषा को भी शामिल किया जाए। क्लस्टर व्यवस्था में एक अध्यापक के कौशलों का प्रयोग क्लस्टर के बाकी विद्यालयों में भी कर सकें। स्थानीय कला, क्राफ्ट, खेती, उद्यम को बढ़ावा दिया जाए। कार्यस्थल पर अच्छा वातावरण उपलब्ध करवाने के प्रयास पर भी बल दिया जाएगा ताकि अध्यापक, विद्यार्थी और अभिभावकों का एक अच्छा समाज समूह मददगार बन सके। स्कूलों में सुरक्षित ढाँचागत सुविधा जिसमें साफ-सुथरे शौचालय, शुद्ध पेयजल, पठन-पाठन के लिए रुचिकर कक्षा कक्ष, बिजली व्यवस्था, कम्प्यूटर, इंटरनेट, पुस्तकालय, प्रयोगशाला तथा प्रचुर मात्रा में

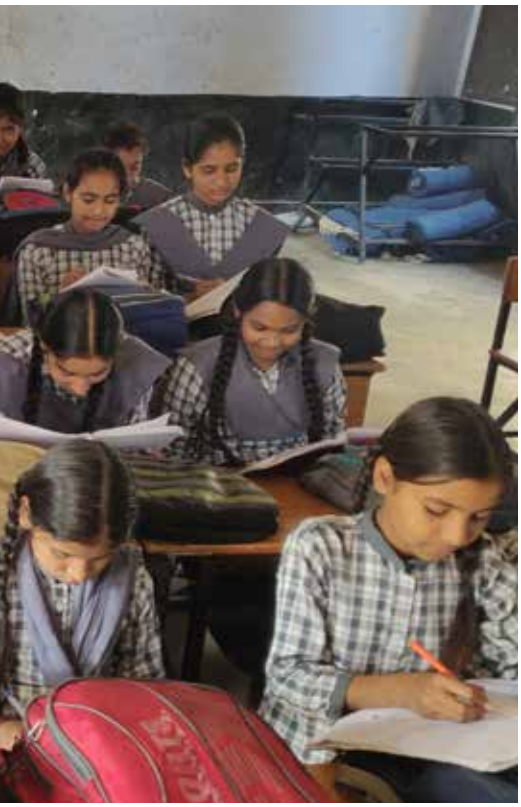

शिक्षण अधिगम सामग्री, खेल का सामान उपलब्ध होगा।

स्कूल कॉम्पलेक्स जिसमें आसपास के स्कूलों का समूह होगा जो आज के क्लस्टर स्कूल जैसा ही होगा। इसमें स्कूल के संसाधन और मानव संसाधन आपस में आवश्यकतानुसार साँझे किए जा सकेंगे। इसमें परामर्शदाता तथा विशेष प्रशिक्षक आदि लगाए जाएँगे जो पूरे कलस्टर के लिए होंगे। इसमें स्कूल प्रबन्धन समिति के साथ काम्पलेक्स/कलस्टर के लिए भी एक कमेटी होगी जो साँझे संसाधनों के आवश्यकतानुसार वितरण के लिए प्रबन्धन करेगी।

अध्यापकों के गैर शैक्षणिक कामों पर खर्च होने वाले समय को कम किया जाएगा। अध्यापक केवल पठन-पाठन पर ही केन्द्रित रहेगा। इसमें इन्हें लम्बी चुनाव ड्यूटी जैसे बीएलओ आदि के कार्य से मुक्ति, मध्याह्न भोजन के कार्यों से मुक्ति तथा विभिन्न प्रशासनिक कार्यों से अलग रखा जाएगा। अध्यापक को उसकी पठन-पाठन प्रक्रिया और शिक्षा-शास्त्र में अधिक स्वतन्त्रता प्रदान की जाएगी। अध्यापक अपनी व्यावसायिक योग्यता निरन्तर बढ़ाते रहें, उसे उन्नत करते रहें इसके लिए वातावरण बनाया जाएगा। इस कार्य हेतु राष्ट्रीय स्तर पर ऑनलाइन मंच उपलब्ध करवाया जाएगा जहाँ अध्यापक अपने उत्कृष्ट प्रयोगों को अन्य राज्यों के अध्यापकों के साथ साँझा कर सकेंगे। प्रत्येक अध्यापक को प्रतिवर्ष 50 घंटे का सीपीडी यानी कॉन्टिन्यूस प्रोफेशनल डिवेल्पमेंट करना होगा। स्कूल मुखिया और कॉम्पलेक्स/क्लस्टर मुखिया के लिए भी ऐसी ही व्यवस्था होगी।

इस पॉलिसी में एक नया बिन्दु शामिल किया गया है। ऐसे अध्यापक जो उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं उन्हें उनके प्रदर्शन के आधार पर अधिक वेतनमान तथा विशेष लाभ उपलब्ध करवाए जाएँगे। अध्यापक के पूरे कार्यकाल का रिकार्ड देखा जाएगा जिसके आधार पर उसे पदोन्नति दी जाएगी। इसके आधार पर ही उन्हें बीआरसी आदि बनाया जाएगा।

अध्यापक शिक्षा में भी बदलाव का प्रस्ताव दिया गया है जैसे 2030 तक 4 वर्षीय प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू करना, पाठ्यक्रम में कक्षा आधारित प्रशिक्षण को वरीयता देना, सभी अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्रों को उच्चतर शिक्षा के क्षेत्राधिकार में शामिल करना तथा नियन्त्रित करना आदि शामिल हैं।

सभी के लिए शिक्षा का सिद्धांत इस पॉलिसी में व्यापक रूप से शामिल किया गया है। लाभ से वंचित वर्ग जिसमें दलित, पिछड़े, बालिकाएँ, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, ग्रामीण, टपरीवास, आदिवासी, ट्रांसजेंडर को यूआरजी यानी अंडर रिप्रिजेंटिड ग्रुप के नाम से सम्बोधित किया गया है। उनके दाखिले, ठहराव तथा अवस्थांतर पर पूरा ध्यान दिया जाएगा। दाखिले के उपरान्त ड्रॉप आउट रेट को शून्य पर लाना और उच्चतर शिक्षा में दाखिला सुनिश्चित करना अनिवार्य बनाने पर बल दिया जाएगा। आउट ऑफ स्कूल और नॉन स्टार्टर की संख्या शून्य हो, इसलिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा का प्रस्ताव दिया गया है। स्कूल पहुँचने तक निःशुल्क यातायात, साइकिल व्यवस्था तथा सुरक्षा उपलब्ध करवाई जाएगी। भारत सरकार के स्तर पर जीईएफ (Gender Inclusion Fund) बनाया जाएगा जो राज्यों में बालिका शिक्षा के लिए खर्च किया जाएगा। यूआरजी के बच्चों की शिक्षा आधारित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अध्यापकों, स्कूल मुखिया, परामर्शदाताओं को प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा।

क्लस्टर स्कूल अथवा कॉम्पलेक्स स्कूल के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाएगा जिसमें 8 से 10 स्कूलों के समूह में एक बड़ा स्कूल होगा जिसमें सभी प्रकार की सुविधा, संसाधन होंगे। सभी विषयों में पढ़ने की व्यवस्था होगी। विद्यार्थी निःशुल्क यातायात सुविधा प्राप्त करके बड़े स्कूल में पढ़ेंगे। ये स्कूल सभी सुविधाओं से सुसज्जित होंगे। छोटे स्कूल विद्यार्थियों के विकास में ज्यादा लाभदायक नहीं रहे हैं, वहाँ पर समूह से सीखने के अधिक अवसर नहीं हैं, अतः छोटे स्कूलों को बन्द किया जाएगा तथा 2025 तक इसके लिए व्यवस्था बनाई जाएगी।

स्कूलों के नियन्त्रण एवं मान्यता के लिए भी पॉलिसी में बहुत कुछ कहा गया है। आज स्कूलों को मान्यता देने का, सरकारी स्कूलों को चलाने का तथा योजना बनाने का काम एक ही संस्था स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा किया जा रहा है जो डीईओ/डीईईओ के माध्यम से होता है। यह व्यवस्था शिक्षा के व्यापारीकरण को नियन्त्रण करने में सफल नहीं हुई है। इसके लिए पॉलिसी में प्रस्ताव दिया गया है। स्कूलों को नियन्त्रण करने के लिए एक अलग संस्था एसएसआरए होगी जो बच्चों की सुरक्षा, अनिवार्य ढाँचा, छात्र अध्यापक अनुपात (विषयवार-कक्षावार) ईमानदारी तथा शासन की निष्पक्ष व्यवस्था के लिए जिम्मेदार होगी। एससीईआरटी इसके लिए मार्ग दर्शिका का निर्माण करेगी। पर्यवेक्षण और निजी निर्माण का कार्य स्कूल शिक्षा विभाग के पास रहेगा। सभी प्रकार के शैक्षणिक मामले जैसे पाठ्यक्रम निर्माण, मूल्यांकन आदि एससीईआरटी द्वारा ही नियन्त्रित किए जाएँगे जो एनसीईआरटी के मार्गदर्शन में बनाए जाएँगे तथा बीआरसी, डाइट आदि के माध्यम से अग्रेषित होंगे। परीक्षा लेने का कार्य तथा प्रमाण पत्र देने का कार्य शिक्षा बोर्ड द्वारा किया जाएगा।

सरकारी और प्राइवेट स्कूलों को एक जैसे मापदण्डों के आधार पर ही नियन्त्रित किया जाएगा। इसमें पारदर्शिता को प्राथमिकता दी जाएगी। स्कूलों को सभी प्रकार की सूचना जन अवलोकनार्थ अपनी वेबसाइट पर उपलब्ध करवानी होगी। स्कूलों की फीस वृद्धि पर नियन्त्रण रखने के लिए व्यवस्था बनाई जाएगी। स्कूलों के मापदण्ड पहले शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के अनुसार बनाए गए हैं जिनको अब पुनः अवलोकन कर वांछित बदलाव किए जाऐंगे। सभी विद्यार्थी विशेषकर यूआरजी के बच्चे पूर्व प्राथमिक शिक्षा से बारहवीं तक की निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा ग्रहण करें। इसके लिए शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 का विस्तारीकरण किया जाएगा। अधिनियम की धारा 12(1) (सी) को समुचित रूप से लागू करने के लिए बदलाव किया जाएगा ताकि लाभ से वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को समुचित लाभ मिल सके। पूरी शिक्षा व्यवस्था के हालात को जानने के लिए नेशनल एचीवमैंट सर्वे जो एनसीईआरटी द्वारा करवाया जाता है उसे समय-समय पर करवाया जाना चाहिए। राज्य अगर चाहें तो अपना इस प्रकार का टैस्ट करवा सकते हैं ताकि स्कूलों को अपने लक्ष्यों के निर्धारण में मजबूती मिल सके। विद्यार्थी को इस पूरी प्रक्रिया में शामिल रखना अति आवश्यक है क्योंकि पूरी शिक्षा व्यवस्था उन्हीं के लिए बनाई गई है। विद्यार्थियों की सुरक्षा, उनके अधिकार, उनके किशोरावस्था के पेचीदा मामले का बेहतर समाधान करना, लड़कियों के साथ किसी प्रकार के भेदभाव के मामले बिना देरी के समुचित समाधान तक पहुँचाने अनिवार्य हैं। पूरी शिक्षा व्यवस्था भयमुक्त, बाल केन्द्रित, बाल मित्रवत्, रुचिकर, सरल, गतिविधि आधारित हो जो केवल अक्षर ज्ञान देने तक सीमित न हो अपितु राष्ट्र के लिए सच्चे, ईमानदार, मेहनती नागरिक तैयार करे जो मानव मूल्यों को गम्भीरता से समझें और संवेदनशीलता से उनकी रक्षा करेंगे।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय सैकेंडरी शिक्षा विभाग, हरियाणा

अध्यापक क्षमता संवर्धन कार्यक्रम : चरणबद्ध ढंग से

अजय बलहरा

'किसी राष्ट्र का विकास अपने शिक्षकों के शैक्षणिक स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता' - यह कहावत राष्ट्र के विकास में एक महत्त्वपूर्ण घटक को इंगित करती है- शिक्षा का स्तर। भावी नागरिक जिस प्रकार से शिक्षित होंगे यही बात राष्ट्र के विकास की दशा और गति तय करती है। किन्तु भावी नागरिकों को प्राप्त होने वाली शिक्षा की गुणवत्ता को तय कौन करता है? पुस्तकें, ढाँचागत सुविधाएँ, शिक्षा का प्रशासनिक प्रबंधन या कोई और?

ध्यान से देखें तो जान पड़ता है कि बहुत उत्कृष्ट भवनों में, वातानुकूलित कक्षों में बेहतरीन किताबों को उपलब्ध करवाने मात्र से बालक अर्थात् भावी नागरिक गुणवत्तापरक शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते। यदि उन्हें पढ़ाने वाले शिक्षकों को सही शिक्षण विधियों, बाल मनोविज्ञान, शिक्षा के सामाजिक सरोकारों अथवा शिक्षाशास्त्रीय सिद्धांतों का और बालकों व समुदाय से अर्थपूर्ण संवाद कैसे स्थापित किया जाये आदि बातों का समुचित ज्ञान न हो। निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि राष्ट्र का विकास भावी नागरिकों के शैक्षणिक व भावनात्मक विकास पर निर्भर करता है, चूँकि भावी नागरिकों का यह विकास स्वयं शिक्षक के स्तर पर निर्भर है, तो अंततः राष्ट्र का विकास शिक्षकों के स्तर व शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है । यदि हम इस बात पर सहमत होते हैं तो इस बात पर सहमति बनना अत्यंत सरल है कि राष्ट्र को अपनी पूरी ताकत अपने शिक्षकों के विकास पर झोंक देनी चाहिए ।

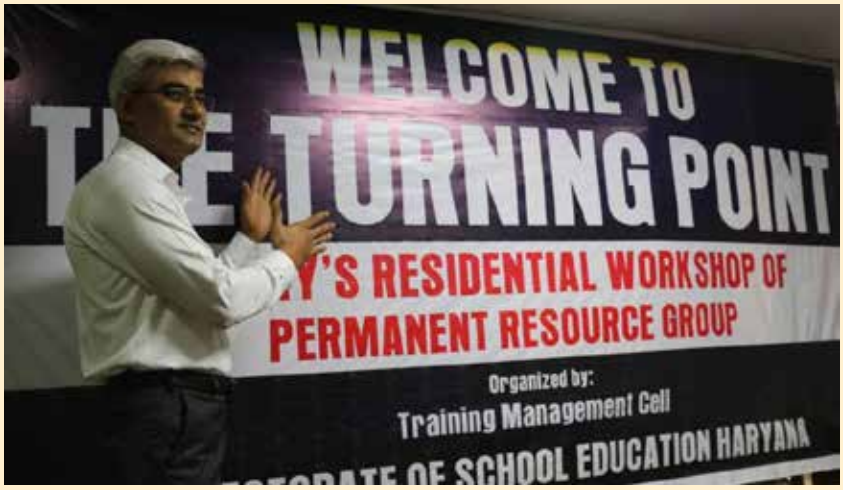

ऐसा नहीं है कि कोई राष्ट्र अपने शिक्षकों को उच्च कोटि के शिक्षण हेतु तैयार करने का प्रयास ही नहीं करता,वरन प्रत्येक राष्ट्र पुरातन समय से ही इस दिशा में सचेत प्रयास करता आ रहा है। किन्तु प्रश्न यह है कि क्या यह प्रयास आधुनिक समय के विकास की माँग के साथ कदमताल कर रहे हैं? यदि थोड़ा ध्यान से देखें तो भारत में ही शिक्षक प्रशिक्षण का इतिहास काफी पुराना है । 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध से प्रारम्भ होकर स्वतंत्रता तक भारत के लगभग 650 शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान स्थापित हो चुके थे। किन्तु चिंता का विषय यह है कि हमारा शिक्षक आज भी पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित नहीं है। और इसका कारण है शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम व तौर-तरीकों में समयानुसार वांछित बदलाव न किया जाना।

आज का बालक 21वीं सदी का नागरिक है, जो कि 20वीं सदी के विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहा है और उन्हें शिक्षा प्रदान करने वाला शिक्षक 19वीं सदी के पुराने तरीके से प्रशिक्षित हैं । ऐसे में राष्ट्र को जिस प्रकार के नागरिकों की आवश्यकता है वो भला कैसे तैयार हो पायेंगे? यदि यह स्वीकार कर भी लिया जाए कि हाँ, हमारा शिक्षक पर्याप्त रूप से तैयार नहीं है, तो बड़ा सवाल यह उठता है कि जो शिक्षक दो-तीन दशक पहले से 'आउटडेटिड' सेवापूर्व व सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से गुजर कर 'पक' चुका हो उसको नए साँचे में कैसे ढालें?

भारत में आज भी 10 से 12 % शिक्षक अप्रशिक्षित हैं। किन्तु यदि हम हरियाणा प्रदेश की बात करें तो हमें इस बात पर गर्व होगा कि हमारे प्रदेश में एक भी शिक्षक 'अप्रशिक्षित' नहीं है। लेकिन क्या प्रशिक्षित होने का लेबल पर्याप्त है? गत डेढ़ से अधिक दशक में शिक्षक प्रशिक्षण क्षेत्र में निजी महाविद्यालयों एक बड़ी खेप आई है । और यह अब किसी से छुपा नहीं है कि उन 'फैक्ट्रियों' में निर्मित शिक्षक किस प्रकार के ज्ञान व अनुभव से लैस होकर निकल रहे हैं । हालांकि क्योंकि निजी संस्थानों को दोष देना आसान होने के कारण हम पूरी भड़ास इन्हीं पर निकाल कर अपना अफारा' हल्का कर लेते हैं, किन्तु सत्य यह है कि शासकीय शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की हालत भी कोई ख़ास अच्छी नहीं है।

ऐसी स्थिति में राज्य के पास दो ही विकल्प बचते हैं-

1. अभी से सभी शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का वांछनीय दिशा में संजीदा सुधार आरम्भ करके भविष्य के शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण प्रदान करते हुए 21वीं सदी के शिक्षक तैयार किये जाएँ।

2. वर्तमान में सेवारत सभी शिक्षकों का नियमित प्रशिक्षण द्वारा नए सिरे से क्षमता संवर्धन हो ।

उपर्युक्त दोनों ही कार्यों के निष्पादन हेतु विद्यालय शिक्षा विभाग को अपने राज्य के सभी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों को सक्रिय प्रशिक्षण केन्द्रों यानी एक्टिव ट्रेनिंग हब्स के रूप में तैयार करना होगा, जहाँ कार्यरत सभी शिक्षक तराशे हुए प्रशिक्षक की तरह से कार्य करते हुए एक साथ मिशन मोड में शिक्षक प्रशिक्षण आरम्भ करें ताकि एक-डेढ़ लाख शिक्षकों का क्षमता संवर्धन प्रतिवर्ष नियमित रूप से किया जाना संभव हो सके।

हालांकि राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान वर्ष 1973 से इस कार्य में लीन है किन्तु शिक्षकों की इतनी बड़ी संख्या का नियमित सेवाकालीन प्रशिक्षण केवल एक प्रशिक्षण केंद्र पर संभव ही नहीं है , अतः डाइटों को इस काम में शामिल करते ही राज्य के पास 20 से 25 उच्च कोटि के शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र उपलब्ध होंगे जिनमें एक साथ लगभग 2500 शिक्षक प्रशिक्षित किया जाना संभव होगा।

यहाँ यह ध्यान देने योग्य है कि डाइटों को एक्टिव ट्रेनिंग हब के रूप में लाने के लिए दो पक्षों पर मुख्यतः काम करने की आवश्यकता है-

क) सभी डाइट्स में 50-50 शिक्षकों के दो समूहों के एक साथ प्रशिक्षण हेतु दो प्रशिक्षण हाल तैयार करना जो प्रशिक्षण हेतु आवश्यक सभी आधुनिक तकनीक व यंत्रों से लैस हों।

ख) सभी डाइटों के सभी शिक्षकों को एक उच्च कोटि के प्रशिक्षक के रूप में तैयार करना जिसमें एक बहुत ही प्रभावशाली वक्ता के गुण होने के साथ-साथ अपने विषय के शिक्षणशास्त्रीय सिद्धांतों व तौर-तरीकों का पूरा ज्ञान हो!

उपरोक्त के आलोक में वर्ष 2018 में विद्यालय शिक्षा विभाग ने बिंदु 'क' पर विभाग 'टीचर एजुकेशन' शाखा के माध्यम से व बिंदु 'ख' पर 'प्रशिक्षण प्रबंधन प्रकोष्ठ' यानी टीएमसी का गठन (8 अगस्त 2018) करके कार्य प्रारम्भ किया।

टीएमसी द्वारा इस कार्यक्रम के महत्त्व को देखते हुए तुरंत प्रभाव से अपना प्रस्ताव विभाग के समक्ष प्रस्तुत किया जिसमें सर्वप्रथम 'मुख्य प्रशिक्षकों' और तत्पश्चात् डाइट्स में कार्यरत सभी शिक्षकों को एक कुशल प्रशिक्षक के रूप में प्रशिक्षित करना मुख्य थे।

टीएमसी द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम के तीन चरण हैं-

क) मुख्य प्रशिक्षकों को तैयार करना

ख) डाइट के प्रवक्ताओं का प्रशिक्षण, डाइट प्रवक्ताओं का विषय विशेष शिक्षा शास्त्र प्रशिक्षण

ग) डाइटों में नियमित रूप से शिक्षक प्रशिक्षण

प्रथम चरण -

राज्य भर में प्रत्येक जिले व खंड के लिए कुशल मुख्य प्रशिक्षक तैयार करना, राज्य स्तर पर भी अत्यंत कुशल प्रशिक्षकों की एक टीम तैयार करना व राज्य की सभी डाइटों के सभी प्रवक्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान करके शिक्षक प्रशिक्षण के योग्य बनाना एक पहाड़ जैसा लक्ष्य था। इसलिए सही रणनीति, उपयुक्त संसाधन व्यक्ति व चुस्त-दुरुस्त व्यवस्था के बिना लक्ष्य तक पहुँचना असंभव सा लग रहा था।

शिक्षक राज्य की शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ हैं और उन्हें सही प्रशिक्षण प्रदान करना प्रशिक्षकों की चुनौती। अतः यह कार्य हर किसी को नहीं सौंपा जा सकता। टीएमसी के प्रस्ताव पर विभाग ने निर्णय लिया कि इस कार्य के लिए केवल उन्हीं शिक्षकों में से चुनाव किया जाए जो इस तरह के कार्य में रुचि रखते हैं न कि पूर्ववत 'कोई भी दस आदमी भेज दो' वाले तरीके से। इसी के मद्देनज़र विभाग ने इच्छा की अभिव्यक्ति यानी एक्सप्रेशन के माध्यम से इस क्षेत्र में रुचि व अनुभव रखने वाले शिक्षकों से आवेदन आमंत्रित किये। आरम्भ में केवल 160 संसाधन व्यक्ति तैयार किया जाना प्रस्तावित थी। अतः 160 ही आवेदन मांगे गए जिसके समक्ष लगभग 1000 आवेदन प्राप्त होना यह दर्शाता है कि शिक्षक यह कार्य अपनी इच्छा से करने के लिए कितने लालायित हैं।

दूसरी चुनौती थी स्थान का चुनाव। यह विचार किया गया कि लम्बी अवधि की कार्यशाला हेतु स्थान ऐसा होना चाहिए जहाँ प्रतिभागियों का मन शांत तो रहे ही साथ ही आसपास कुछ ऐसे स्थल भी हों जो ऐतिहासिक अथवा शैक्षिक महत्त्व रखते हों ताकि जब भी समय मिले प्रतिभागी वहाँ भ्रमण हेतु जा सकें।

अतः कई स्थानों पर विचार करने के उपरान्त कुरुक्षेत्र को चुना गया और वहाँ भी ब्रह्मसरोवर का किनारा! बाद में यह अहसास हुआ कि यह निर्णय कितना

महत्त्वपूर्ण था। दिन रात पढ़ने-लिखने से थके प्रतिभागी अल सुबह और देर रात तक सरोवर के किनारे सैर भी करते और वहीं बैठ कर दिए गए सबक याद करना और उन पर समूहों में चर्चा करना देखते ही बनता था। इसके अतिरिक्त प्रतिभागी धरोहर, कल्पना चावला तारामंडल, थानेसर तीर्थ व अन्य बहुत से स्थलों का भ्रमण भी कर पाए।

प्रशिक्षण मुख्यतः डॉ. अजय बलहरा द्वारा प्रदान किया गया किन्तु अन्य स्थानों से संसाधन व्यक्ति भी सत्र लेने के लिए आमंत्रित किये गए, जिनके नाम निम्न प्रकार हैं -

1. प्रोफेसर डॉ राजबीर हुड्डा, Faculty of Behavioural Sciences, SGT University Ggn
2. श्री अशोक कुमार ठाकुर, फाउंडर ऑफ़ मुन्नी इंटरनेशनल स्कूल, न्यू दिल्ली
3. श्री अभिमन्यु सिंह, रंगकर्मी, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी, पंजाब
4. श्री विवेक अत्रेय, अभिप्रेरक व वक्ता, सेवा निवृत आईएएस
5. डॉ. हनीफ, थिएटर आर्टिस्ट
6. श्री रमेश, थिएटर आर्टिस्ट
7. श्री विरेन, थिएटर आर्टिस्ट

यह पहला चरण था जिसका मुख्य ध्येय चुनिंदा शिक्षकों को कुशल वक्ता बनाना! इसके लिए लगभग 2 वर्ष तक विश्व के सर्वश्रेष्ठ वक्ताओं के वक्तव्यों, बोलने के तरीकों, हाव-भाव, अभिव्यक्ति, भंगिमाओं और आवाज़ के उतार-चढ़ाव का विस्तृत अध्ययन किया गया 2000 से अधिक वक्ताओं को देखने-सुनने के पश्चात सिखाने का मसौदा तैयार किया गया जिसे कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों को सिखाया गया व तदुपरांत उन्हें शिक्षा से जुड़े कुछ महत्त्वपूर्ण विषयों को तैयार करके

प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए कहा गया। इसका दुहरा लाभ हुआ एक ओर जहाँ शिक्षकों ने अच्छे वक्ता बनने के गुर सीखे वहीं दूसरी ओर उन्होंने शिक्षा से जुड़े महत्त्वपूर्ण विषयों पर भी महारत प्राप्त की। ऐसे लगभग 45 मुद्दे जिनमे प्राचीन काल से अब तक शिक्षा के इतिहास और विकास को गहनता से समझा जा सके, चुने गए थे। इनके अतिरिक्त कार्यशाला में शिक्षा विभाग का ढाँचा व मुख्य योजनाओं पर भी चर्चा की गई और बाल मनोविज्ञान, ज्ञान मीमांसा, शिक्षण की अनेक नूतन विधियों व शिक्षा अधिकार अधिनियम पर भी बात हुई। अहिंसक वार्तालाप, स्कूल मोनिटरिंग, कार्यशाला आयोजन व परासंज्ञानात्मक चिंतन पर भी विस्तृत विमर्श किया गया । कुल मिला कर एक शिक्षक को एक बढ़िया प्रेरक व कुशल प्रशिक्षक बनने हेतु जिस भी सामग्री की आवश्यकता होती है, वह सभी कुछ शिक्षकों ने इन कार्यशालाओं में सीखा। कार्यशाला के इस प्रथम चरण के पहले भाग में कुल 216 प्रतिभागियों ने शिरकत की। जिनमें से टॉप 50 प्रतिभागियों को आगे के इस से भी कड़े प्रशिक्षण हेतु चुनना स्वयं में एक चुनौती थी। इसके लिए एक विश्व स्तरीय टूल की मदद ली गई जिसमें प्रतिभागियों की प्रस्तुति के आधार पर उनका मूल्यांकन किया गया। मूल्यांकन का भी एकदम निराला तरीका अपनाया गया। जब एक प्रतिभागी अपनी प्रस्तुति दे रहा होता तो बाकी के सभी 39 प्रतिभागी उसका मूल्यांकन करके उसको अंक प्रदान कर रहे होते, जिसे बाद में जोड़ कर औसत द्वारा क्रम में लगाया गया व सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले प्रथम 50 प्रतिभागियों को प्रथम चरण के अगले प्रशिक्षण के लिए चुना गया।

बेस्ट ऑफ़ बेस्ट

चुने हुए प्रतिभागी इस दस दिवसीय कड़े प्रशिक्षण को पूरा करके चुने जाने के कारण अत्यंत प्रफुल्लित थे किन्तु उन्हें यह ज्ञात ही नहीं था कि उनकी असल परीक्षा तो अब शुरू होनी थी। प्रशिक्षण के दूसरे राउंड हेतु इन 50 प्रतिभागियों को मोरनी की पहाड़ियों में 15 दिन तक अपने ही साथियों से कड़ी चुनौती मिलने वाली थी क्योंकि इस के उपरान्त इन 50 में से केवल 20 प्रतिभागी ही मुख्य प्रशिक्षक बनाए जाने थे, इसलिए 15 दिवसीय इस प्रशिक्षण के पहले दिन पहले घंटे से ही प्रतिभागियों ने जीत के लिए कमरतोड़ मेहनत का एक अनंत सिलसिला आरम्भ कर दिया! दिन क्या और रात क्या। खाना-पीना, नहाना-धोना सब त्याग कर बस तैयारी, तैयारी और तैयारी। कई बार तो प्रस्तुतियों का सिलसिला 25 से 30 घंटे लगातार बिना रुके भी चल जाता था। प्रतिभागी कहते इतनी पढ़ाई इस लगन के साथ पहले कर ली होती तो आईएएस के टॉपर

होते और अब तक कहीं कमिश्नर बने बैठे होते किन्तु उन्हें यह भी अहसास हुआ कि शिक्षकों के प्रशिक्षकों का प्रशिक्षक बनना इतना आसान भी नहीं है। और इस तरह वो 20 प्रशिक्षक चुने गए जिन्हें अब पूरे राज्य के डाइट प्रवक्ताओं व वरिष्ठ प्रवक्ताओं (असिस्टेंट व असोसिएट प्रोफेसर्स) को प्रशिक्षित करना था !

विशेष बात यह थी कि इन 20 मुख्य प्रशिक्षकों में से अधिकतर प्राथमिक शिक्षक थे जिन्हें अपने से कहीं वरिष्ठ पदों के प्राचार्यों व प्रवक्ताओं को प्रशिक्षित करना था।

द्वितीय चरण (i)-

जनवरी 2019 की कड़ाके की ठण्ड में कुरुक्षेत्र में डाइट फैकल्टी का प्रशिक्षण शुरू हुआ! एक साथ चार समूहों में 50-50 डाइट प्रवक्ता व वरिष्ठ प्रवक्ता बुलाये गए जिन्हें अगले दस दिन में इन 20 मुख्य प्रशिक्षकों द्वारा उसी तरह प्रशिक्षित करना था जिस तरह उन्हें टीएमसी द्वारा प्रशिक्षित किया गया था।

प्रशिक्षण के शुरू होने तक यह संशय सभी के मन में था कि क्या ये मुख्य प्रशिक्षक, जिनमें ज्यादातर प्राथमिक शिक्षक हैं, इतने वरिष्ठ प्रवक्ताओं को प्रशिक्षित कर पायेंगे? क्या वो लोग इनकी बात सुनेंगे और मानेंगे? किन्तु संशय के एकदम विपरीत प्रशिक्षण जबरदस्त सफल रहे और नए मुख्य प्रशिक्षकों के हौसले अब सातवें आसमान पर थे।

दस-दस दिन के केवल दो शिविरों में ही इस टीम ने डाइट के लगभग 400 प्रवक्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान किया तथा उनसे तारीफ़ भी बटोरी। लोगों को कहते सुना गया कि शुरू में तो हमें बुरा लग रहा था कि ये जेबीटी अब हमें प्रशिक्षण देंगे? किन्तु अब हम कह सकते हैं कि

हीरे तराशे गए हैं ..भई वाह!

इस प्रकार पीआरजी कार्यशालाओं का प्रथम चरण 555 प्रतिभागियों के शानदार क्षमता संवर्धन के साथ संपन्न हुआ और माननीय अतिरिक्त मुख्य सचिव के अनुमोदन उपरान्त विभाग द्वारा 210 मुख्य प्रशिक्षकों की सूची जारी की गई। जिस में राज्य के सभी खण्डों की संख्या के बराबर, जिला स्तर व राज्य स्तर के मुख्य प्रशिक्षकों की जानकारी विभाग के सभी जिला मुख्यालयों, शिक्षा बोर्ड व एससीईआरटी को भेजी गई तथा यह अनिवार्य किया गया कि भविष्य में सभी प्रकार के प्रशिक्षण इन्हीं के द्वारा प्रदान किये जायेंगे।

(ii) विषय विशेष शिक्षाशास्त्र प्रशिक्षण -

डाइट्स को 'एक्टिव ट्रेनिंग हब' में तब्दील करने के लिए वहाँ के प्रवक्ताओं को न केवल कुशल वक्ता बनाना पर्याप्त था बल्कि उन्हें अपने-अपने विषयों में पारंगत करना भी जरूरी था ताकि वो विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को उनके विषयों पर भी प्रशिक्षण प्रदान कर सकें।

इसके लिए उनके कुरुक्षेत्र के दस दिवसीय प्रशिक्षण के उपरान्त शिक्षाशास्त्र पर प्रशिक्षण हेतु सात दिवसीय विषयवार कार्यशालों का आयोजन भारत के सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री 'रोहित धनखड़' के संस्थान 'दिगंतर' से करवाना निश्चित हुआ! यह संस्थान लगभग 50 वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में शोध व प्रशिक्षण में अनुभव प्राप्त है।

अब तक कुल 10 विषय-विशेष पर शिक्षाशास्त्र की कार्यशालाओं का सफल आयोजन दिगंतर द्वारा करवाया जा चुका है जिसमे हिंदी, अंग्रेजी, विज्ञान, गणित व सामाजिक अध्ययन पर क्रमशः दो-दो कार्यशालाएँ पूरी की जा चुकी हैं तथा जनवरी 2019 तक बाकी पाँच कार्यशालाओं को भी पूरा कर लिया जाएगा।

इन कार्यशालाओं में देश के विख्यात शिक्षाविदों ने प्रशिक्षण प्रदान किया जो निम्न प्रकार हैं :

1. Rohit Dhankar, Director School of Education, AzimPremji University, Bengaluru
2. Abhijeet Bardapurkar, AzimPremji University, Bengaluru
3. Giridhar Rao, AzimPremji University, Bengaluru
4. Manoj Kumar,AzimPremji University, Bengaluru
5. Swati Sircar,AzimPremji University, Bengaluru
6. Hriday Kant Dewan, AzimPremji University, Bengaluru
7. Rajesh Kumar, AzimPremji Foundation
8. Kuldeep Garg, AzimPremji Foundation

इन कार्यशालाओं के माध्यम से न केवल कुशल मुख्य प्रशिक्षक ही तैयार हुए बल्कि डाइट्स में कार्यरत सभी प्रवक्ताओं को भी बतौर शिक्षक प्रशिक्षक तैयार किया गया।

शीघ्र ही तीसरे चरण में सभी डाइट्स में नियमित शिक्षक प्रशिक्षण आरम्भ होगा और प्रदेश के सभी शिक्षकों को प्रतिवर्ष उनके विषय में प्रशिक्षित कर शिक्षा की गुणवत्ता का संवर्धन सुनिश्चित किया जाएगा।

इंचार्ज
प्रशिक्षण प्रबंधन प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

दस दिवसीय प्रशिक्षण जो कि आरम्भ में अत्यंत लम्बी अवधि का प्रतीत हो रहा था, छोटा पड़ गया। अमूमन देखा यह जाता है कि सरकारी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में और वो भी शिक्षकों के प्रशिक्षण में, देर से आना जल्दी जाना एकमात्र ऐसा नियम है जो वर्षों से धर्म की तरह निभाया जाता रहा है और बड़े- बड़े धुरंधर अभी तक इस बीमारी के विषाणु का कोई 'एंटीडॉट' तैयार नहीं कर पाए हैं इसीलिए इसे नियति मान कर मूक सहमति प्रदान की जा चुकी है। किन्तु यह क्या, इस कार्यशाला में तो सब उल्टा-पुल्टा दिखा। सुबह यदि समय 9:00 बजे का है तो शेड्यूल में यह सुबह 08:59 लिखा हुआ है और सिर्फ लिखा हुआ ही है। प्रतिभागी तो नियम तोड़ने के माहिर होते हैं, तो आखिर ये नियम क्यूँकर बचता? लेकिन हाँ, वो देर से नहीं, बल्कि समय से पहले ही पहुँच जाते थे! और जाने का समय भले ही सायं 5:30 लिखा गया हो, रात के खाने के बाद तक अधिकतर निशाचर प्राणी वही प्रशिक्षण हाल में विचरते पाए जाते थे। हर रात, कुछ गिने चुने प्रतिभागियों को छोड़कर (जिनकी अगले दिन दिए गए टॉपिक पर प्रस्तुति होती थी) बाकी सब के सब नाच-गाना और धमाल करते और सुबह फिर से अगले दिन के लम्बे सत्रों के लिए एक दम तैयार।

तीन दिन रुके तो बदल जाओगे वापस वैसे नहीं बन पाओगे।

प्रशिक्षण के पहले दिन प्रतिभागियों को यह 'चेतावनी' दी जाती थी कि आप आँख मूँद कर यह विचार करें कि आज अभी तक आप कैसे शिक्षक हैं और हम आपको यह चुनौती देते हैं कि आप इस प्रशिक्षण के तीसरे दिन से बालकों से अगाढ प्रेम करने वाले और रचनावादी सोच के शिक्षक बने बिना नहीं रह सकेंगे।

और कार्यशाला के अंतिम दिन प्रतिभागी स्वयं यह कहकर जाते थे कि आपने ठीक कहा था अब हम वो पारंपरिक लकीर के फ़कीर रोज़ी-रोटी के लिए नौकरी करने वाले मास्टर नहीं रहे, बदल गए और अब कोशिश भी करें तो दुबारा वैसे नहीं बन पायेंगे। किन्तु सर, इस कार्यशाला को कम से कम 05 दिन और बढ़ा दो प्लीज़।

सीखने की क्षमता को बेहतर बनाती है 'कॉन्सैप्ट मैपिंग'

कान्सैप्ट मैपिंग की रणनीति बच्चों की समझते हुए पढ़ने की क्षमता बेहतर बनाने में सहायक होती है। इसमें किसी पाठ की केंद्रीय जानकारी और अन्य विशेषताओं को दर्शाया जाया जाता है। इसे अवधारणा मानचित्र के नाम से भी जाना जाता है।राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय क्योड़क में हिन्दी प्राध्यापक डॉ विजय चावला द्वारा हिन्दी भाषा शिक्षण में नवाचारी कॉन्सैप्ट मैपिंग शिक्षण विधि की रणनीति का प्रयोग किया गया। कक्षा दसवीं के बच्चों को कान्सैप्ट मैपिंग की रणनीति का प्रयोग करते हुए हिन्दी भाषा का ज्ञान प्रदान किया गया। बच्चों ने समूह में कार्य करते हुए काव्य सौन्दर्य पर खुद कॉन्सैप्ट मैप बनाए। कक्षा दसवीं के बच्चों ने हिंदी भाषा शिक्षण के तहत काव्य सौंदर्य विषय पर कॉन्सैप्ट मैपिंग के माध्यम से पढ़ाई की। दसवीं कक्षा के छात्र-छात्राओं ने सामूहिक कार्य करते हुए अवधारणा मानचित्र बनाए।

ललिता व उसकी टीम ने काव्य-सौंदर्य पर बनाए अवधारणा चित्र का प्रयोग करते हुए अपनी प्रस्तुति दी और प्रथम स्थान हासिल किया। सिमरन व प्रिया की टीम ने दूसरा स्थान तथा रजनी की टीम ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। बच्चों द्वारा आपने अपनी प्रस्तुति जिस तरह से की गई वह अति सराहनीय रही। चावला ने बताया कि इस तरह कॉन्सैप्ट मैप के माध्यम से सामाजिक विज्ञान व गणित विषयों में भी यदि पढ़ाई कराई जाए तो उसके बेहतर परिणाम देखने को मिलेंगे। अवधारणा मानचित्रण का उपयोग सीखने की क्रिया को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है। बातचीत और बहस के माध्यम से अवधारणा मानचित्रण, सीखने की क्रिया को बढ़ावा दे सकता है। यह एक उद्देश्यपूर्ण क्रियाकलाप होता है। यह एक शक्तिशाली मूल्यांकन साधन है, जिससे शिक्षक अपने विद्यार्थियों की समझ को उजागर कर सकते हैं और जान सकते हैं कि वे अवधारणाओं को किस प्रकार जुड़ा हुआ देखते हैं। यह निःसंदेह एक उपयोगी शिक्षण कार्यनीति है। सभी शिक्षकों को इसका उपयोग शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में करना चाहिए।

-शिक्षा सारथी डेस्क

अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन, इंदौर में प्राध्यापक कुणाल शर्मा सम्मानित

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बलदेव नगर, अम्बाला शहर के अंग्रेजी विषय के प्राध्यापक श्री कुणाल शर्मा को उनके लघुकथा लेखन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन, इंदौर में सम्मानित किया गया। पूरे देश से सम्मानित होने वालों 4 लघुकथाकारों में बरेली से लघुकथाकार श्री सुकेश साहनी, पंजाब से श्री श्याम सुंदर अग्रवाल, नाथ द्वारा से श्री माधव नागदा व हरियाणा से श्री कुणाल शर्मा रहे। देश के विभिन्न राज्यों से पधारे लगभग 150 लघुकथाकारों ने इस कार्यक्रम में शिरकत की। विद्यालय के प्राध्यापक श्री कुणाल शर्मा की इस उपलब्धि पर विद्यालय प्राचार्य श्री सुरेंद्र मोहन ने उन्हें बधाई दी और बताया कि कुणाल शर्मा अंग्रेजी विषय के साथ साथ हिंदी साहित्य के लघुकथा लेखन में भी सक्रिय है और उनकी राष्ट्रीय स्तर पर यह उपलब्धि समस्त विद्यालय परिवार के लिए गौरव का विषय है। अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन में सम्मान प्राप्त करने पर विद्यालय के सारे स्टाफ ने एवं अम्बाला जिले के शिक्षकों ने उन्हें मुबारकवाद दी।

-शिक्षा सारथी डेस्क

नंगल में कला-अध्यापकों की कार्यशाला

भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड प्रतिवर्ष अखिल भारतीय स्तर पर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन करता है ताकि बच्चों के माध्यम से पूरे समाज में ऊर्जा संरक्षण का संदेश पहुँचाया जा सके। हरियाणा के विद्यालयों के विद्यार्थियों की इस प्रतियोगिता में बहुत भागीदारी होती है। बीते दिनों बोर्ड द्वारा नंगल में हरियाणा के कला-शिक्षकों व प्रतियोगिता के जिला संयोजकों के लिए दो दिवसीय कार्यशाला व बैठक का आयोजन किया। मकसद था कि पेंटिंग प्रतियोगिता के माध्यम से अधिक से अधिक विद्यार्थियों को सार्थक ढंग से कैसे जोड़ा जाए, पेंटिंग प्रतियोगिता कार्यक्रम को एक शिक्षाप्रद व कलात्मक आन्दोलन में कैसे तबदील किया जाए।

बैठक में भाग लेने के लिए हरियाणा के प्रत्येक जिले से प्रतिभागी योजनानुसार 16 सितंबर को सुबह 11 बजे सतलुज सदन विश्राम गृह, नंगल (पंजाब) पहुँच गए। वहाँ पर बीबीएमबी के अधिकारियों ने हमारा स्वागत किया। खाना तैयार था, सबसे पहले खाना खाया तथा मीटिंग के लिए कांफ्रेंस हाल में एकत्र हुए। इस मौके पर इंजीनियर वीरेन्द्र शर्मा, एडी एक्सियन मनवेन्द्र सिंह, सुभाष ने बारी-बारी सम्बोधन किया। शिविर के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला तथा भाखड़ा बाँध के निर्माण के रोचक तथ्य बतलाए गए। कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार ने बताया कि ये बहुत बड़ी बात है कि पिछले वर्ष पेंटिग प्रतियोगिता में हरियाणा भर से 19 लाख बच्चों ने भाग लिया, जो एक रिकार्ड है। पूरे देश में हरियाणा के विद्यार्थियों की संख्या सबसे अधिक थी। ये सभी जिला संयोजकों की मेहनत, शिक्षा अधिकारियों का सहयोग तथा पेंटिग के प्रति बच्चों की रुचि का ही कमाल था। इंजीनियर वीरेन्द्र शर्मा, मनवेन्द्र सिंह व सुभाष ने हरियाणा शिक्षा विभाग के उच्चाधिकारियों, सभी जिला संयोजकों, जिला शिक्षा अधिकारियों का धन्यवाद किया और अबकी बार भी पूरे सहयोग की उम्मीद की तथा बारी-बारी सभी ने अपने विचार रखे तथा अनुभव साझा किये।

दोपहर बाद बीबीएमबी के अधिकारी हम सभी को बस में बिठाकर भाखड़ा बाँध दिखाने ले गए। दो-चार मिनट के सफर के बाद ही चैकपोस्ट आई। यहाँ से आगे जाने वालों की चैकिंग होती है तब आगे जाने दिया जाता है। आम व्यक्तियों को भाखड़ा बाँध जाने की इजाजत नहीं है। अधिकारियों ने हमारे लिए तो पहले ही अनुमति ले ली थी। यहीं से पहाड़ों की चढ़ाई, हरियाली, टेढ़े-मेढ़े घुमावदार रास्ते, ठण्डी हवा के झोंके आरम्भ हो जाते हैं। हम ब्यास-सतलुज नदी के किनारे-किनारे चलते गए, प्राकृतिक नजारों का आनंद उठाते गए। करीब आधे घंटे के सफर के बाद हम भाखड़ा बाँध के बाईं ओर बने संग्रहालय में पहुँच गए। यहाँ फोटो खींचना सख्त मना हैं। अधिकारियों ने पहले ही सभी को आग्रह कर दिया था। उतरते ही दायीं ओर पहाड़ी पर भारत के पहल प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की विशाल प्रतिमा लगी हुई हैं क्योंकि इसके निर्माण में नेहरू का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। वे यहाँ बार-बार आते-जाते भी रहे। अधिकारियों ने संग्रहालय दिखाया। संग्रहालय में भाखड़ा बाँध व अन्य कई बांधों के निर्माण की यादों को समेटा गया है तथा निर्माण व कार्य करने, बिजली उत्पन्न होने की तकनीक भी बताई गई है। उसके बाद हमें कई किलोमीटर वापिस आकर, नदी पार करके भाखड़ा बाँध के दूसरी ओर ले जाया गया जहाँ हमने गोविन्द सागर झील में नौका बिहार किया। ये हमारे लिए नई सुन्दर, गजब की तथा यादगार अनुभूति थी। बीबीएमबी परिवार के सदस्य सुभाष ने बताया कि ये झील करीब 90 किलोमीटर लम्बी है। इसकी चौड़ाई व गहराई कहीं कम कहीं ज्यादा है। सुभाष ने बताया कि इस झील में असंख्य छोटी-बड़ी मछलियाँ है। बाँध से दूर जाकर लोग मछलियाँ पकड़ते है तथा बेचकर अपना निर्वाह भी करते हैं। कुछ देर नौका-विहार का आनन्द उठाने के उपरान्त हम वापिस विश्राम गृह में आ गए। आते समय पता चला कि नंगल से भाखड़ा तक एक रेल भी चलती है जो मात्र भाखड़ा कर्मचारियों के लिए हैं। अगले दिन सुबह फिर नाश्ते के बाद मीटिंग थी। इस मीटिंग में भाखड़ा ब्यास प्रबन्ध बोर्ड के अतिरिक्त चीफ इंजीनियर हुसन लाल कम्बोज, मुख्य वित्तीय अधिकारी केके कचोरिया, इंजीनियर अनिल धवन रू-ब-रू हुए। उन्होंने अपने सम्बोधन में सकारात्मक सोच के साथ नई ऊर्जा से काम करने पर बल दिया तथा अधिक से अधिक भागीदारी के लिए माध्यमिक शिक्षा विभाग, हरियाणा का धन्यवाद दिया। इस मीटिंग के बाद बीबीएमबी की ओर से सभी ने एक-एक पौधा लगाया। बीबीएमबी के अधिकारियों ने सभी जिला संयोजकों को सम्मानित भी किया। उसके बाद सभी ने खाना-खाया तथा पेंटिंग प्रतियोगिता की एक ऊर्जावान सफल, अभियान बनाने का संकल्प लिया। यहाँ की कुछ मधुर यादों को समेटकर नए जोश के साथ सभी अपने-अपने घर की ओर लौट चले। करनाल से आए डीओसी सीयाराम शास्त्री, रेवाड़ी के प्रदीप यादव, करनाल के श्रवण कुमार ने इस मीटिंग को जिला संयोजकों का सम्मान बताते हुए यादगार कार्यक्रम बताया तथा पंचकूला के भीम सिंह, पानीपत के प्रदीप मलिक, पलवल की शारदा पराशर, करनाल की दीपा ने भाखड़ा ब्यास प्रबन्ध बोर्ड के अधिकारियों व रामकुमार का धन्यवाद किया कि उन्होंने मीटिंग व शिविर का आयोजन इतनी सुन्दर जगह किया, हमें भाखड़ा बाँध संग्रहालय देखने व झील में नौका-विहार करने का अवसर मिला।

डॉ.ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

पंचमढ़ी : जो हमेशा के लिए दिलों में बस गई

1 से 7 नवंबर 2019 तक लगा राष्ट्रीय एडवेंचर कैंप, प्रदेश भर के विद्यार्थियों ने लिया भाग

डॉ. सिकंदर सिंह सिद्धू

अनुभव जिंदगी जीने की लालसा को और तीव्र कर देते है। यही लालसा लेकर हमने 31 अक्टूबर, 2019 को अपना सफर शुरू किया। एक नवम्बर से सात नवम्बर तक होने वाले राष्ट्रीय एडवेंचर कैंप पंचमढ़ी में भाग लेने हेतु हम ट्रेन में सवार हुए तो कई तरह के विचार मन को बेचैन कर रहे थे। सफर कैसा होगा, बच्चे कैसे होंगे, पंचमढ़ी जाकर खाना कैसा मिलेगा। इन सब बातों के चलते जैसे ही सफर आगे बढ़ा, बच्चों के साथ बातचीत हुई। कुछ अपनापन लगा। अब धीरे-धीरे बच्चे समझने लगे थे और हम बच्चों को समझने लगे। जैसे-जैसे यात्रा आगे बढ़ी, मन की भावनाएँ उस सुखद यात्रा की प्रतीक्षा कर रही थीं। बच्चों के साथ बातचीत से यह एहसास हुआ कि इन बच्चों के साथ यात्रा अच्छी बीतेगी। बातों ही बातों में बच्चों की प्रतिभा का पता चला और खुशी हुई कि अगला सफर और यह कैंप एक यादगार कैंप होने वाला है। इसी उम्मीद और आज का सफर आगे बढ़ा। निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन पर जाकर ट्रेन रुकी। वहाँ पर सियाराम जी हरियाणा कंटिजेंट लीडर से मिलना हुआ। उनकी नेचर और बात करने के ढंग से सुखद एहसास हुआ। साथ में श्रवण जी की मोटिवेशन से लगा कि ये 10 दिन जिंदगी के कुछ खास लम्हों में से एक होंगे।

इतने में व्हाट्सएप्प पर ग्रुप में मैसेज डाला गया कि सभी साथी एकत्रित होंगे। सभी जिलों से आए अध्यापकों से मिलना हुआ। बातचीत हुई और ट्रेन की टिकट सभी को बाँट दी गई। इन सबके बीच एक परिवार के मिलन की शुरुआत हो चुकी थी। इतने में दोपहर का खाना आ गया। बच्चों को भूख बहुत लगी थी, वहीं बच्चों के साथ बैठकर खाया खाना, जिसमें एक मोहब्बत थी। गुरुजनों के आदर के साथ-साथ एक परिवार के मेंबरों का एहसास था। खाना खाने के बाद घूम फिर कर बच्चों से मिले बातचीत शुरू हुई। पता चला कि ट्रेन का वक्त हो गया है। सभी बच्चों को उनके सीट नंबर बता दिए गए थे। ट्रेन आई, सभी उसमें सवार होकर अपने-अपने साथी के साथ बैठकर बातें करने लगे। सिरसा के साथ-साथ दूसरे जिलों से आया हुआ स्टाफ भी अब एक दूसरे से बात करने लगा था। पहचान करने लगा था। बातचीत से उनके व्यवहार के बारे में पता चला। ट्रेन चल पड़ी सभी अपनी अपनी सीटों पर बैठकर एक दूसरे की तरफ देख रहे थे और अब कई अजनबी आपस में बात भी करने लगे थे। बच्चे अपनी मस्ती में झूमने लगे। शाम का खाना आ गया। सभी ने साथ मिलकर खाना खाया। बच्चों ने मिलकर खा लिया उसमें से कुछ प्लेट बची रह गयीं। सुखद अहसास हुआ कि बच्चों ने अपना खाना ट्रेन में दूसरे यात्रियों के साथ शेयर किया। रात गहरी हो चुकी थी, सभी अपनी सीटों पर गुनगुना रहे थे। इस गुनगुनाने में पता नहीं नहीं चला कि कब नींद ने अपनी आगोश में ले लिया।

लगभग 4 बजे ट्रेन पिपरिया स्टेशन पर रुकी। सभी विद्यार्थियों ने समान उतारा और वहाँ पर खड़ी बसों में

सवार होकर हम अगले सफर की ओर चल पड़े। अनजान धरती पर कुछ सपने लेकर उतरे। कुछ ख्वाब संजोए बस पर सवार होकर चल पड़े। हमारी मंजिल यह रास्ता पहाड़ियों में से होते हुए छोटी सी सड़क पर आगे बढा और हम एक नवम्बर को लगभग 10 बजे नेशनल एडवेंचर इंस्टिट्यूट पंचमढ़ी में दाखिल हुए। वहाँ का वातावरण देखकर रात की कम नींद भी हमारी आँखों की चमक को रोक न सकी। सभी को अपना अपना टेंट अलॉट हो चुका था। सामान रखा। कुछ देर आराम करने के बाद खाना खाने के लिए चले गए। खाना लेने के बाद सभी को कैंप फायर वाली जगह पर इकट्ठा किया गया कुछ बातें हुई कुछ जानकारियाँ साँझी हुई बताया गया कि इन 7 दिनों में हमने कब कहाँ और क्या करना है। सभी से जान पहचान हुई। बातचीत करने से पता चला कि गुजरात व झाँसी से कुछ बच्चे और स्टाफ और आर्मी स्कूल के बच्चे भी शामिल थे। हरियाणा के कुरुक्षेत्र, रेवाड़ी, सिरसा,फरीदाबाद, पंचकूला के बच्चे इस ग्रुप में शामिल थे। पूरे कैंप में लगभग 400 बच्चे थे। उन 400 बच्चों को चार ग्रुप में बाँटा गया। हर एक ग्रुप की एक्टिविटी का नोटिस नोटिस बोर्ड पर लगा था। वहाँ से हमने अपनी एक्टिविटी नोट की और साथ ही बच्चों के फॉर्म मेडिकल सर्टिफिकेट आधार कार्ड के साथ उनकी एक लिस्ट ऑफिस में जमा करवा दी। भारत स्काउट एंड गाइड डिप्टी डायरेक्टर एडवेंचर इंस्टिट्यूट पंचमढ़ी ने बच्चों को इंस्ट्रक्शन दी कि किस प्रकार रहना है, खाना कब लगेगा। प्लास्टिक-फ्री एनवायरनमेंट बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया। हमें दूसरे ग्रुप में शामिल किया गया। बच्चे आनंदित महसूस कर रहे थे।

आज सबसे पहले ग्रुप फोटो होना था। उसके बाद बच्चों ने घूम कर पूरा इंस्टिच्यूट देखा। यह एक्टिविटी करते हुए शाम कब हो गई पता ही नहीं चला। अब बारी थी कैंप फायर की, जिसका हम बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। आज पहला कैंप फायर होने के कारण हम अपनी मनपसंद रचनाएँ वहाँ पेश कर सकते थे। इस कैंप में गुजराती, हरियाणवी, पंजाबी गतिविधियों ने पिछली रातों की नींद को नजदीक फटकने भी नहीं दिया। ऐसा लग रहा था कि लंबे समय तक यह कैंप फ़ायर चलता रहे बच्चे खूब इंजॉय कर रहे थे, मगर वक्त ज्यादा होने के कारण लगभग 9 बजे इसकी समाप्ति कर दी गई और अगले दिन की गतिविधियों के बारे में बच्चों को बता दिया गया। साथ में कल के कैंप फायर के लिए अपने अपने नामों की सूची देने के लिए भी कहा गया।

खाना खाने के बाद सोने का वक्त हो गया था। बातों ही बातों में हम कैंप में शामिल साथियों के साथ उनके घर परिवार के बारे में जानने लगे। अब काफी रात हो चुकी थी। नींद ने सभी को अपने आगोश में समा लिया।

दो नवम्बर को सुबह 5:30 बजे का अलार्म बजा उठने को मन तो नहीं कर रहा था, लेकिन कुछ नया पाने के लिए उजालों की जरूरत होती है। हम सब उठ गए। अपना सामान सम्भाला और नहा धोकर कैंप द्वारा दी गई स्काई ब्लू टी-शर्ट और ब्लू कैप, जिस पर भारत एंड स्काउट का लोगो लगा हुआ था, पहन कर आगे सफर की तैयारी कर ली। ब्रेकफास्ट करने के बाद एक जगह एकत्रित किया गया। आज हमारा बी फॉल जाने का प्रोग्राम था। सभी ने अपना सामान बैग में डाला। पानी की बोतल ली और आगे सफर के लिए रवाना हो गए। हसीन वादियों व जंगलों में होते हुए हम अपने सफर की तरफ बढ़ रहे थे। खूबसूरत वादियाँ, चारों तरफ हरियाली, पत्थरों का सीना फाड़ कर उगे हुए फूल हमें अपनी तरफ खींच रहे थे। कभी-कभी मन करता कि इनके पास बैठ जाएँ और घंटों बातें करते रहें और उनको बताएँ कि हम तुमसे

मिलने कितनी दूर से चलकर आए हैं। पत्थरों पर बड़ी सहजता से कदम बढ़ाते हुए सभी बच्चों के साथ हम छोटे झरने पर पहुँचे। वहाँ का नजारा देखकर बच्चे मंत्रमुग्ध हो गए। वहाँ पर पानी से हाथ मुँह धोया और पानी पिया। ऐसे लग रहा था कि पानी नहीं, अमृत था, जिसने हमारी थकावट को दूर करके नई ऊर्जा का संचार कर दिया था। अब आगे का रास्ता सीढ़ियों से उतरना था। कुछ बच्चे थोड़ी थकावट महसूस कर रहे थे। हमारे साथ आए हुए भारत स्काउट एंड गाइड के कमांडर हमें मोटिवेट करते हुए लेकर आगे बढ़े। सीढ़ियाँ उतरते ही ऊँचाई से गिरता हुआ झरना दिखाई दिया। पानी की बूंदे हमें सहलाने लगीं। पूरे सफर की थकावट पंख लगा कर उड़ गई। पानी में हाथ डालते ही ऐसे लगा जैसे किसी ने अपने आगोश में ले लिया हो उस ठंडे झरने की आवाज में संगीत था। उस पानी की ताजगी देख कर उसे छूने को बार-बार मन कर रहा था। मन हुआ कि जहाँ बैठकर आनंद लिया जाए लगभग एक घंटे तक हम वहीं रुके रहे। बार-बार बच्चों को कहा गया कि अब वक्त हो गया है, वापस चलो। मगर किसी का भी मन नहीं था वहाँ से वापस आने का। धीरे-धीरे बच्चों को वहाँ से वापसी की तरफ ले जाया गया और आज बी फॉल से वापस आते हुए लग रहा था कि हमने दुनिया का कोई बहुत ही खूबसूरत नजारा देखा हो। झरनों की दुनिया इतनी खूबसूरत हो सकती है इसका सपना भी कभी लिया था। वापसी का सफर आसानी से तय हो गया। दिन का वक्त निकल चुका था, दोपहर के खाने के वक्त हम कैंप साइट पर पहुँचे। वहाँ पर बच्चों ने आराम किया, खाना खाया इसके बाद शाम को बच्चों ने घुड़सवारी, राइफल शूटिंग, आर्चरी के मजे लिए। बच्चे आनंदित महसूस कर रहे थे, क्योंकि इससे पहले उन्होंने इस तरह की एक्टिविटी कभी नहीं की थी। फोटोग्राफी के साथ-साथ बच्चों ने निशाने लगाने और घुड़सवारी का आनंद लिया। एक्टिविटी में शाम होने में वक्त नहीं लगा। शाम को फिर बच्चों को इंतजार था कैंप फायर का। बच्चों ने अपनी वेशभूषा में हरियाणवी, पंजाबी डांस करने की तैयारी कर ली थी। इतने में कैंप फायर का सायरन बजा, बच्चे एकत्रित हुए, प्रोग्राम शुरू हुआ तो गीतों के साथ बच्चे झूमने लगे स्काउटिंग क्लैप बच्चों के लिए आनंदित होने का खूबसूरत मौका था। सभी ने अपनी-अपनी प्रस्तुति दी। वक्त कब गुजर गया पता ही नहीं चला। दूसरा दिन समाप्त हो गया था। बच्चों ने शाम का दूध पिया और सोने के लिए अपने टेंट में चले गए। वहाँ बैठकर दिन भर की गतिविधियों पर चर्चा की और बिस्तर पर लेटते ही नींद आ गई। कैंप में आए हुए 2 दिन हुए थे ऐसा लग रहा था कि सालों से यही पर रह रहे हैं, इन्हीं वादियों में इन्हीं जंगलों में।

तीन नवम्बर को हमारे कैंप तीसरे दिन की शुरुआत रॉक क्लाइम्बिंग, रॉक डाउनिंग, रॉक क्रॉसिंग से हुई। सुबह होते ही ब्रेकफास्ट करने के बाद हम रॉक क्लाईबिंग की साइट पर चले गए। वहाँ पर बच्चों ने ही नहीं उनके साथ आए हुए सभी स्टाफ सदस्यों ने भी आनंद लिया। रॉक क्लाइम्बिंग का अपना ही मजा है। फिजिकल एक्टिविटी के साथ दिमाग और शरीर का संतुलन काफी महत्वपूर्ण है। सभी बच्चों ने एक-एक कर अनुशासन में रहते हुए इस एक्टिविटी में हिस्सा लिया। लगभग 11 बजें चुके थे। कैंप साइट पर आकर बच्चों ने थोड़ा आराम करने के बाद दोपहर का भोजन ग्रहण किया। आगे का हमारा सफर बेसन ला म्यूजिक और पांडव केव देखने का था। हमने अपना सामान बाँधा, पानी की बोतल साथ में रखीं और चल पड़े। अगले सफर की तरह सभी बच्चों में जोश था कुछ नया देखने की ललक थी। काफी देर चलने के बाद हम वेसन लॉ पहुँचे, वहाँ पर बच्चों ने फोटो खिंचवाई और और म्यूजिक देखने के बाद हम वहाँ से निकले और पांडव केब की तरफ बड़े और ऊपर पहुँचकर पहाड़ी की चोटी पर पहुँचे और वहाँ से पूरे शहर का खूबसूरत नजारा दिखाई दे रहा था। पार्क में घूमते लोग नजर आ रहे थे। बच्चों ने कुछ देर वहाँ बैठकर आनंद लिया शाम ढल चुकी थी, वापस चलने के लिए बोला गया। बच्चों ने वापसी तेजी से कदमों के साथ पूरी

की। हम कैंप साइट पर पहुँच चुके थे, कैंप फायर का वक्त हो चुका था। कैंप फायर में बच्चों ने खूब आनंद लिया। रात काफी हो चुकी थी, बच्चों ने खाना खाया और अपने-अपने टेंट में सोने के लिए चले गए।

पंचमढ़ी में चार नवम्बर को हमारी चौथे दिन की शुरुआत हो चुकी थी। धूप निकल आई हमने ब्रेकफास्ट लिया। आज हमने जटाशंकर धाम देखने को जाना था। रोज की तरह सभी बच्चों ने अपना सामान बाँधा, पानी की बोतल साथ ली। निकल पड़े नए सफर की ओर। उत्सुकता अभी भी कम न हुई थी काफी देर चलने के बाद दो पहाड़ियों को काटकर बनी हुई सड़क पर हम आगे बढ़ चले। आगे बढ़ कर देखा कि दो पहाड़ियाँ एक दूसरे पर झुकी हुई थी। इन झुकी हुई पहाड़ियों के बीच में से एक रास्ता जटाशंकर की तरफ जाता था। वहाँ से हम उसके अंदर दाखिल हुए, अंदर दाखिल होकर हमने अपने जूते उतारे और नीचे सीढ़ियाँ उतरकर जटाशंकर धाम में दाखिल हुए। वहाँ पर दो पहाड़ियों के बीच में पड़ रही रोशनी एक अद्भुत नजारा पेश कर रही थी। बच्चे जूते उतार कर नीचे चले गए वहाँ पर ठंडे पानी में पैरों को भिगोया तो एक अद्भुत एहसास हुआ। शरीर में ऊर्जा का आगमन हुआ। तरोताजा होकर हमने वहाँ पर फोटोग्राफी की। बच्चों ने तस्वीरें खिंचाईं। अब वापसी में आज बच्चों के लिए मार्केट में जाने का दिन था। चाय पीने के बाद सभी बच्चों ने मार्केट में घूम कर अपने घर परिवार के लिए कुछ यादगार चीजें लीं। वहाँ से वापसी की। तब तक दोपहर के भोजन का वक्त हो चुका था। भोजन ग्रहण करने के बाद कुछ देर आराम करने के लिए चले गए। शारीरिक गतिविधियों में भाग लेने के बाद उक्त दिन भी गुजर चुका था। अब यहाँ से वापस जाने की बातें होने लगी थीं, लेकिन मन था कि यह कैंप कुछ दिन और चले और हम इसी तरह इस कैंप को इंजॉय करते रहें। शाम को कैंप फायर शुरू हुआ। अगले दिन के ग्रैंड कैंप फायर के बारे में बातें की गईं। उसकी तैयारी के लिए सभी सदस्यों को बोला गया। रात काफी हो चुकी थी। सभी बच्चे जल्दी सो गए, क्योंकि सुबह का हमारा कार्यक्रम धूपगढ़ जाने का था। धूपगढ़ में बच्चों ने यू-ट्यूब पर सर्च कर रखा था उसके बारे में बातें करते-करते नींद आ गई।

कैंप के आखिरी दिन की शुरुआत हुई। हमने अपना ब्रेकफास्ट किया। साथ में दोपहर के भोजन को पैक करके बैग में डाल लिया। पानी की बोतल लेकर लंबे सफर की ओर चल पड़े। आज की ट्रैकिंग काफी हार्ड थी, क्योंकि हमने धूपगढ़ की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँचना था। कुछ देर सड़क के रास्ते चलते रहे गुनगुनाते हुए सड़क का सफर बड़ी आसानी से गुजर गया। आगे चलकर सभी को एक जगह इकट्ठा किया गया और आगे की ट्रैकिंग के बारे में बताया गया। अब ट्रैकिंग पगडंडियों के द्वारा पत्थरों के ऊपर थी और बच्चों के लिए नया अनुभव था। मन में बहुत से विचार थे कि अब मुश्किल रास्ता कैसे पार होगा, लेकिन हौसलों में उड़ान थी। दिल में जज्बा था और कुछ नया देखने और करने

का हौसला लिए हम चल पड़े। पत्थरों पर एक-दूसरे की सहायता से कदम बढ़ाते हुए हम आगे बढ़ने लगे। कुछ देर, बैठते फिर चलते। धीरे-धीरे हमारी पानी की बोतल समाप्त होने लगी। मगर सफर अभी भी बाकी था। एक दूसरे को हौसला देते हम आगे बढ़ चले काफी मुश्किल से पत्थरों पर पैर जमाते हुए बच्चे एक दूसरे को सहारा देते हुए आगे बढ़ रहे थे। कहते हैं कि हौसलों के आगे जीत होती है और उसी हौसले के चलते हम धूपगढ़ की ऊपरी चोटी पर पहुँच चुके थे। वहाँ का नजारा देखकर सफर की थकान और मुसीबतें जैसे हम भूल ही गए थे।

एक घंटे तक बच्चों ने आराम किया फोटो खींची। धूपगढ़ की ऊपरी पहाड़ी को देखा। उस पहाड़ी के बारे में जानकारियाँ एकत्रित कीं। सूर्यास्त और सूर्य उदय वाली दोनों जगहों को हमने देखा। कुछ देर बैठने के बाद खाना खाया। लगभग दो घंटे बीत चुके थे। तभी सीटी की आवाज़ सुनाई दी और वापसी के सफर की शुरुआत हो चुकी थी, चढ़ने से उतरना थोड़ा आसान था, मगर बच्चों को पहले ही बताया जा चुका था कि किसी को पकड़ें नहीं। किसी को धक्का नहीं देना। इन सब बातों के चलते बच्चे अनुशासन में धीरे-धीरे पहाड़ी से नीचे उतरने लगे। नीचे उतरते-उतरते शाम ढल चुकी थी। पहाड़ी के नीचे आकर हम सब ने पानी पिया और फिर गाते-गुनगुनाते हम अपने कैंप की ओर रवाना हो गए। जब कैंप साइट पर पहुँचे तो 5 बजे चुके थे। अभी ग्रैंड कैंप फायर की तैयारियाँ बाकी थीं। बच्चों को तैयारी के लिए बुलाया गया। बच्चों ने अपनी तैयारी की और ग्रैंड कैंप फायर शुरू हो गया जिसमें गुजराती गरबा, हरियाणवी और पंजाबी गीतों की प्रस्तुतियाँ दी गईं। ग्रैंड कैंप फायर में आज के मुख्य अतिथि पंचमढ़ी स्काउट ट्रेनिंग सेंटर के हेड थे। उन्होंने प्रस्तुतियों को देखा और सराहना की। सभी स्टेट से आए हुए कंटिजेंट लीडर को सम्मानित किया गया।

सात नवम्बर को सोने के बाद हम जल्दी उठे, क्योंकि आज हमारी घर वापसी थी। आठ बजे समापन समारोह शुरू हुआ। आज स्काउट का फाउंडेशन-डे मनाया जाना था। फाउंडेशन-डे पर डिप्टी डायरेक्टर ने सभी बच्चों को बधाई दी और स्काउटिंग को जीवन में अपनाने देश सेवा और समाज सेवा के कार्यक्रम में भाग लेने की शपथ दिलाई। बच्चों ने पूरे राष्ट्रीय एडवेंचर कैंप के बारे में अध्यापकों से बातचीत की। अपने मन के विचार साँझा किए। सर्टिफिकेट बच्चों को बाँटे गए और बच्चों को अपना सामान बाँधकर तैयार रखने को कहा गया। दो बजे बस में सवार होकर हमने घर वापसी का सफर शुरू कर दिया। यह सफर इतना आसान नहीं था। बच्चों का मन लग गया था और वहाँ से आने को मन नहीं कर रहा था। यादों को संजोए हुए सभी ने सफर की शुरुआत कर ली थी। पिपरिया से ट्रेन का का टाइम टेबल 7:50 का था। जैसे ही ट्रेन आई, सभी ने अपना सामान ट्रेन में रखा। सीट नंबर अलॉट हो चुके थे। वापसी का सफर जाने वाले सफर से काफी भिन्न था। सब बातों में थके हुए बच्चे जल्दी ही खाना खाकर सो गए। सुबह 5 बजे आँख खुली तो सभी ने अपना अपना बिस्तर समेटकर बैग में रख लिया। अब हम सभी बैठ कर बातें करने लगे। अब बच्चों में नया जोश था। वह आपस में बातें कर रहे थे और आने वाले कैंप की प्लानिंग में लगे हुए थे।

सभी ने एक-दूसरे को अलविदा कहा। सभी स्टाफ सदस्य एक परिवार की तरह मिल रहे थे। आँखें नम थी। दिल में फिर से मिलने की उम्मीद लेकर सभी अपनी ट्रेन में सवार हो गए। सिरसा की तरफ जाने वाली ट्रेन स्टेशन पर आ चुकी थी। हमने अपना सामान रखा और उस पर सवार हुए। बच्चों का लगाव देखते ही बन रहा था। ट्रेन सिरसा रेलवे स्टेशन पर रुकी। बच्चे भावुक हो रहे थे। निश्चित तौर पर ऐसे शिविर बच्चों के विकास के लिए बहुत जरूरी हैं।

ऐसे किसी शिविर में भाग लेने का फिर मौका फिर कब आएगा, इसी उम्मीद, इसी सोच के साथ।

राजकीय उच्च विद्यालय केवल
तहसील कलांवाली, खंड ओढ़ां, जिला सिरसा

प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए एक सुनहरा अवसर
नेशनल मीनस-कम-मैरिट स्कॉलरशिप स्कीम

प्रमोद कुमार

विभाग द्वारा गुणवत्ता संवर्धन के अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिनमें लर्निंग आउटकम्स अर्थात कक्षा अनुसार अधिगम स्तर को प्राप्त करना मुख्य है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राफ्ट का अध्ययन करें तो उसमें एक महत्त्वपूर्ण पहलू का विस्तार से उल्लेख किया गया है कि प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए अलग से कुछ ऐसी व्यवस्था की जाए ताकि ये प्रखर बुद्धि विद्यार्थी अपनी ज्ञान पिपासा को, अपनी अध्ययन क्षमता को तदनुसार दोहन कर नवाचार तथा अन्य प्रयोगों के माध्यम से राष्ट्र को अपना उच्च योगदान दे सकें। इसके लिए ऐसे विद्यार्थियों की खोज करना, पहचान करना, चुनाव करना तथा आरम्भ के वर्षों से ही समुचित वातावरण बनाना और संसाधन उपलब्ध करवाना अनिवार्य है।

विभाग द्वारा राजकीय विद्यालयों में पढ़ रहे प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए गत वर्ष सुपर-100 नाम से कार्यक्रम आरम्भ किया जिसमें लाभ से वंचित वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का चयन किया तथा विशेष प्रशिक्षण का प्रबन्ध किया ताकि ये विद्यार्थी इसके उपरान्त जेईई मेन/एडवांस तथा नीट की परीक्षा पास कर सकें। इसी वर्ष एनटीएसई के लिए भी प्रयास किया गया जिसमें विद्यार्थियों को चिह्नित करके विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त भी गुणवत्ता संवर्धन के अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। यहाँ इस बात का उल्लेख करना अनिवार्य है कि 'अर्ली इंटरवेंशन' शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐसा पहलू है कि यदि इस पर कार्य किया जाए तो परिणाम बहुत बेहतर आते हैं। इन प्रतिभाशाली छात्रों जिनके लिए ग्यारहवीं में अथवा इसके बाद विभाग अच्छी शिक्षा/बेहतर परिणाम की कल्पना करता है, उन्हें कक्षा आठवीं से ही चिह्नित किए जाने की आवश्यकता है। यदि प्रारम्भिक स्तर पर ही ऐसे विद्यार्थियों की पहचान कर ली जाए तो सैकेण्डरी शिक्षा के दौरान ही एक अच्छी प्रतिस्पर्धा को बनाया जा सकता है। नेशनल मीनस-कम-मैरिट स्कॉलरशिप स्कीम इसके लिए एक अच्छा साधन है, जो कक्षा आठवीं के दौरान एक टैस्ट के माध्यम से चयनित होकर प्राप्त किया जा सकता है।

बारह हजार रुपये प्रतिवर्ष मिलने वाली इस छात्रवृत्ति के लिए यह विशेष परीक्षा ली जाती है, जिसमें ऐसे सभी विद्यार्थी भाग लेते हैं जो वर्तमान में कक्षा आठवीं में पढ़ रहे हैं तथा कक्षा सातवीं में न्यूनतम 55 प्रतिशत अंक लेकर पास हुए हैं। हालांकि अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए 5 प्रतिशत की छूट भी है। इस परीक्षा में विद्यार्थियों को डेढ़ घंटे का समय मिलता है, जिसमें 90 बहुविकल्पी प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। छात्रवृत्ति कक्षा 9वीं से 12वीं के लिए मिलती है, परन्तु प्रत्येक कक्षा में 60 प्रतिशत अंक लेना अनिवार्य होता है।

एनएमएमएस के लिए प्रदेश की एससीईआरटी गुरुग्राम द्वारा ही परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इस समय प्रदेश के 2337 विद्यार्थियों को यह छात्रवृत्ति उपलब्ध है। जिलावार इसका वितरण स्कीम के आरम्भ में जिले की छात्र संख्या के आधार पर किया गया था। इसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि विद्यार्थी उस संख्या में आवेदन ही नहीं करते जिसके कारण जो विद्यार्थी यह छात्रवृत्ति प्राप्त करते हैं उनकी गुणवत्ता, उनके बौद्धिक स्तर को लेकर उनकी आगामी उपलब्धियों को लेकर कोई आकलन करना संभव नहीं है।

उच्च स्तर की प्रतियोगिता के बिना चयनित विद्यार्थी किस प्रकार प्रदर्शन करेंगे, इस बारे कोई सटीक

आकलन नहीं किया जा सकता। इस एनएमएमएस कार्यक्रम को अधिक व्यापक, रुचिकर, सहज-सुलभ तथा व्यवस्थित किए जाने की आवश्यकता है। जिस प्रकार जवाहर नवोदय विद्यालय में आवेदन हेतु परीक्षा के लिए स्कूल स्तर पर कार्यक्रम होता है, उसी प्रकार राज्य के प्रत्येक सरकारी विद्यालय में जहाँ आठवीं कक्षा में विद्यार्थी पढ़ रहे हैं उन्हें आवेदन के लिए तैयार किया जाए। एक अध्यापक और स्कूल मुखिया होने के नाते आपके कुछ दायित्व हैं जैसे -

1. एनएमएमएस छात्रवृति का व्यापक प्रचार-प्रसार- इसके लिए सबसे पहले एससीईआरटी की वेबसाइट को अपडेट कर दिया गया है। वहाँ पर हर प्रकार की सामग्री जैसे मार्गदर्शिका, अभ्यास पुस्तिका, अध्यापक के लिए सामग्री, विद्यार्थी के लिए सामग्री, समय सारणी आदि मुख्य जानकारी उपलब्ध करवाई जा रही है तथा विद्यार्थी इस छात्रवृत्ति परीक्षा के लिए आवेदन कर रहे हैं।

2. जिला एवं खण्ड स्तरीय अधिकारियों का प्रशिक्षण- राज्य के सभी डीईओ, बीईओ, डाइट प्रिंसिपल, डीएसएस, डीएमएस, एपीसी आदि को इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन बारे में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाई गई है तथा इसके उपरान्त प्रत्येक स्कूल मुखिया को इसका प्रशिक्षण प्रदान किया जाए ताकि इस समय कक्षा आठवीं में पढ़ रहा प्रत्येक विद्यार्थी इस परीक्षा के लिए आवेदन करे। आवेदनों की संख्या में बढ़ोतरी सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है क्योंकि जितनी अधिक संख्या में विद्यार्थी आवेदन करेंगे उतनी ही कड़ी प्रतियोगिता होगी।

3. विद्यार्थी अभ्यास पुस्तिका तैयार करना तथा उपलब्ध करवाना- परीक्षा में सैट/मैट के प्रश्नों के समरूप अनेक ऐसे प्रश्न तैयार करके विद्यार्थियों को अभ्यास पुस्तिका उपलब्ध करवाई जा रही है जिस पर विद्यार्थी तैयारी करके मुख्य परीक्षा में बैठेंगे और कड़ी प्रतिस्पर्धा देंगे। इसके लिए एससीईआरटी द्वारा गत वर्षों में जो प्रश्न पत्र जारी किए गए हैं उनका समावेश भी कर दिया गया है। एससीईआरटी द्वारा यह पुस्तक उपलब्ध करवाई जा रही है।

उपरोक्त कार्यक्रम में इस वर्ष आठवीं कक्षा में पढ़ रहे 2,12,836 विद्यार्थियों में से 81 प्रतिशत विद्यार्थी ऐसे हैं जो अनुसूचित जाति, पिछड़ा वर्ग तथा मुस्लिम हैं, जोकि शिक्षा से वंचित वर्ग की श्रेणी में आते हैं। बाकी 19 प्रतिशत विद्यार्थी जो सामान्य वर्ग के हैं, उसमें से भी अधिकतर बीपीएल परिवारों से हैं। अतः राजकीय विद्यालयों में इस प्रकार के कार्यक्रम किए जाने अति आवश्यक हैं ताकि इन श्रेणियों के बच्चों को भी प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार किया जा सके।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

'रिंग द बेल फॉर वॉटर' कैंपेन

केरल के स्कूलों में बजती है वॉटर बेल, ताकि बच्चों को पानी पीने की याद दिलाई जा सके

बच्चों को स्कूलों में सिर्फ़ साफ़ पानी मुहैया करवाना ही पर्याप्त नहीं, उन्हें वक़्त पर पानी पिलाना भी ज़रूरी है। बच्चे खेल-कूद, पढ़ाई में मग्न रहते हैं और अक्सर खाने-पीने का ध्यान नहीं रखते। सरकार ने खाने की समस्या से निपटने के लिए मीड डे मील तो शुरू कर दिए पर पानी पिलाने के लिए क्या किया जाए? पानी की कमी से बच्चे अक्सर डिहाईड्रेशन का शिकार होते हैं।

केरल के सरकारी स्कूलों ने बच्चों को बीमारियों से बचाने के लिए नई पहल शुरू की है। इसके तहत बच्चों को पानी पिलाने के लिए वॉटर ब्रेक दिया जा रहा है। इतना ही नहीं, इसके लिए दिन में तीन बार घंटी भी बजाई जा रही है। इसे वॉटर बेल का नाम दिया गया है। घंटी बजने पर स्कूल में सभी बच्चों को पानी पीना होता है। पहली घंटी सुबह 10.35 बजे बजती है। दूसरी घंटी दोपहर 12 बजे और तीसरी घंटी 2 बजे बजाई जाती है।

अब तमिलनाडु तेलंगाना और कर्नाटक सरकार केरल के इस तरीके को अपनाने लगी हैं। ये निर्णय अभिभावकों की शिकायत के बाद लिया गया। अभिभावकों ने शिकायत की थी कि बच्चे पानी की बोतल ले जाते हैं पर पानी नहीं पीते।

एक रिपोर्ट के मुताबिक, पानी की कमी और डिहाइड्रेशन से कई बच्चे बीमार पड़ते हैं। इसे लेकर डॉक्टरों का कहना है कि खास तौर पर लड़कियाँ समय पर जरूरी मात्रा में पानी नहीं पीती हैं। बच्चों और किशोर-किशोरियों को दिन में कम से कम 1.5 से 3 लीटर पानी पीना चाहिए। यह मात्रा उम्र, कद और वज़न के अनुसार बदलती है। समस्या का तोड़ केरल सरकार ने निकाल लिया है। यह निर्णय देश के सभी राज्यों में ले लिया जाए तो कितना अच्छा हो।

- शिक्षा सारथी डेस्क

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

खेल-खेल में विज्ञान शृंखला में विद्यार्थियों को करवायी जा सकने वाली कुछ विज्ञान पाठ्यक्रम आधारित गतिविधियाँ प्रस्तुत हैं। इन गतिविधियों को करने से विद्यार्थी विज्ञान नियम सिद्धांतों संबंधित उपजी विभिन्न जटिलताओं का सरलीकरण कर सकेगा और उसको लाभ होगा।

1. मैग्नीशियम धातु को पहचानना व उसका दहन करना

बात दिवाली के पटाखों से शुरू हुई। अनार नाम के पटाखे को जलाने पर पर उसमें रंग-बिरंगी बिरंगी चिंगारियाँ कैसे निकलती हैं? यहाँ बच्चों की इस जिज्ञासा को शांत करना बहुत जरूरी था। विभाग द्वारा प्रदत्त विज्ञान किट में मैग्नीशियम रिबन का एक पूरा रोल दिया गया है। उस मैग्निशियम रिबन का दहन करके दिखाया गया, जिससे सफेद चमकदार प्रकाश निकला। इसके लिए सबसे पहले एक 4 इंच के मैग्नीशियम रिबन के टुकड़े को रेगमार से अच्छी तरह से रगड़कर चमका लेते हैं फिर उसे चिमटी से पकड़ कर मोमबत्तियाँ स्प्रिट लैंप की ज्वाला के ऊपर लाते हैं। कुछ देर में वह मैग्निशियम रिबन तेजी से सफेद चमकदार रोशनी के साथ जलने लगता है और सफेद रंग की राख भी बनती है। जोकि मैग्नीशियम ऑक्साइड है, जिसका जलीय घोल क्षारीय विलयन के गुण प्रकट करता है। इस प्रकार अन्य बहुत सी धातु के चूर्ण रूप अनार व अन्य पटाखों के मसाले के साथ मिक्स कर दिए जाते हैं। जब इन पटाखों को आग लगाई जाती है तो रंग-बिरंगी चिंगारियाँ धातुओं के इस चूर्ण के जलने पर उत्पन्न होती है। बच्चे यह जानकारी बहुत हैरान हुए कि धातुएँ भी जल सकती हैं। मैग्नीशियम और एल्यूमीनियम धातुचूर्ण (पाउडर) के प्रयोग से सफेद स्पार्क्स उठते है। इनके अलावा स्ट्रोंटियम धातु (लाल, हरे, नीले और पीले स्पार्क्स), बेरियम (हरे), तांबा (नीले), सोडियम से (पीले) स्पार्क्स उठते हैं। जब उन्होंने मैग्नीशियम रिबन के दहन को देखा तो उन्हें संतुष्टि हुई।

2. ऊष्मा अवशोषण, काली सफेद बोतल

काँच की दो एक जैसी बोतलें लेकर, एक बोतल पर सफेद रंग का पेंट किया और दूसरी बोतल पर काले रंग का पेंट किया। दोनों बोतलों में पानी भरकर लकड़ी के स्टूल पर उचित दूरी पर धूप में रख दिया। धूप में रखने के लगभग 2 घंटे के बाद दोनों बोतलों के तापमान को थर्मामीटर से नाप कर नोट किया तो देखा कि काली बोतल वाले पानी का तापमान अधिक था और

सफेद रंग की बोतल वाले पानी का तापमान कम था। बच्चों ने इस तापमान को 4 डिग्री सेल्सियस के अंतर पर नोट किया। जिससे सिद्ध हुआ कि काला रंग ऊष्मा का अच्छा अवशोषक होता है और सफेद कम। इस प्रयोग से

बच्चों को बहुत सी जिज्ञासाओं को शांत करने का मौका मिला। वे जान गए कि सर्दियों में गहरे रंग के कपड़े और गर्मियों में सफेद रंग के कपड़े क्यों पहने जाते हैं।

3. कलाईडोस्कोप बनाना।

कलाईडोस्कोप/बहुमूर्तिदर्शी /बहुरूपदर्शक एक ऐसा प्रकाशीय खिलौना है जिसे विद्यालय जाने वाला हर बच्चा बनाना चाहता है। बहुमूर्तिदर्शी बनाने के लिए विद्यार्थियों को मुझसे कुछ सीखने की जरूरत नहीं पड़ी। उनकी पाठ्यपुस्तक में इसे बनाने की विधि दी हुई है। विद्यार्थी अपनी पाठ्यपुस्तक से देखकर विद्यालय में एक बहुत सुंदर बहुमूर्ति दर्शी बनाकर लाया। जिसमें थोड़े से सुधार की आवश्यकता को पूरा करके सभी विद्यार्थियों को यह बहुमूर्ति दर्शी दिखाया तो बच्चे उसमें काँच की चुड़ियों के टुकड़ों से तरह-तरह के समरूप डिजाइन पैटर्न देखकर बहुत प्रसन्न हुए। तीन समतल दर्पण की आयताकार पट्टियों को आपस में टेप के द्वारा त्रिभुजाकार शेप में जोड़कर उसे एक गत्ते के सिलेंडर में में फिट किया। इसके आगे की तरफ बटर पेपरटेप से लगाकर के बीच में रंग-बिरंगी काँच की चूड़ियों के छोटे-छोटे टुकड़े रखकर बटरपेपर के द्वारा ही बंद कर दिया गया। बेलन के दूसरे सिरे पर गत्ते के टुकड़े में एक सुराख बनाकर टेप से चिपका दिया गया। चूड़ियों वाले सिरे को रोशनी की तरफ करके सुराख पर नेत्र लगाकर देखने पर और गोल-गोल घुमाने पर बहुत सुंदर समरूप पैटर्न प्रतिबिंब दिखाई दिए। इससे बच्चे बहुत खुश हुए।

4. पेरिस्कोप/परिदर्शी बनाया

जब पनडुब्बी का जिक्र चला तो स्वाभाविक था कि बच्चों ने मुझसे पूछा कि जब पनडुब्बी पानी के अंदर होती है तो उससे बाहर की वस्तुएँ अन्य पानी के जहाज टार्गेट आदि कैसे देखे जाते हैं? तब पेरिस्कोप/ परिदर्शी का जिक्र आया। यह गतिविधि बच्चों को ब्लैकबोर्ड पर पेरिस्कोप बनाने की विधि को मात्र एक रेखाचित्र द्वारा बनानी सिखाई गई। ठीक दो दिन के बाद कई बच्चे

पेरिस्कोप को बनाकर विद्यालय में ले आए। उन्होंने अपने पेरिस्कोप को बहुत ही कम लागत मात्र 10-15 खर्च करके बनाया। इसके लिए उन्हें समतल दर्पण के दो आयताकार टुकड़े, गत्ता, पिन व ब्राउन सेलोटेप की आवश्यकता पड़ी। 45 डिग्री पर दोनों समतल दर्पण को चिपकाने में थोड़ी सी सहायता मिलने पर उनका पारदर्शी पूर्णतयाकाम कर रहा था। बच्चों ने दीवार के एक तरफ से दूसरी तरफ छुपकर उधर का नजारा देखा और खुश हुए। उन्हें इस प्रकाशीय खिलौने को बनाकर बहुत कुछ सीखने को मिला। याद रहे कि पेरिस्कोप भी एक ऐसा ही प्रकाशीय उपकरण है जिसे हर बच्चा बनाना चाहता है।

5. प्यूपा मिला, इसे पालेंगे

न जाने किस पेड़ की पत्ती पर चिपके हुए प्यूपा/ कोकून को पत्ती समेत तोड़कर बच्चे मेरे पास ले आए और कहने लगे देखो सर यह क्या है? यह क्या है? मैंने कहा कि यह किसी कीट की प्यूपा अवस्था है तो अचानक उन्हें पाठ में पढ़े रेशम के कीट का जिक्र याद आ गया जो उन्हें याद दिला रहा था कि अंडा, लारवा, प्यूपा और पूर्ण कीट अवस्था में उन्होंने यह पढ़ रखा है। किसी कीट के प्यूपा को देख कर वह बहुत उत्साहित थे और कहने लगे कि हम इसे पालेंगे और इसमें से कीट निकलता हुआ देखेंगे। मैंने बच्चों की भावनाओं को महत्त्व देते हुए उन्हें एक 500 मिलीलीटर का एक बीकर दिया और कहा कि वह इसके ऊपर जालीदार कागज लगाकर उसमें कुछ पत्तियाँ रखकर इसे उसके ऊपर रखकर पाल सकते हैं। कुछ बच्चे यह चाहते थे कि इस पत्ती को फिर से पेड़ पर ही सेलोटेप की सहायता से चिपका दिया जाए। आपसी चर्चा में बच्चे कुछ दिन उसे बीकर में रखने और कुछ दिन बाद उसे फिर से पेड़ पर लगाने पर रजामंद हुए। 3 दिन बीकर में पत्तियों के ऊपर रखा गया। उसके बाद सेलोटेप की मदद से उस पत्ती को उन्हें पौधे पर ही चिपका दिया। रोज निरीक्षण करने पर एक दिन देखा कि प्यूपा फटा हुआ है। तो क्या? उसमें से एक कीट निकल कर उड़ चुका था? बच्चे आपस में बहस रहे थे कि बीकर में होता तो हम वह कीट भी देख सकते थे। इसमें से कौन सा कीट निकला। सभी एक दूसरे पर चिल्ला रहे थे और मैं मन ही मन मुस्कुरा रहा था।

तो फिर मिलते हैं आगामी अंक में, फिर नई विज्ञान गतिविधियों के साथ

विज्ञान अध्यापक एवं विज्ञान संचारक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप
खंड-जगाधरी, जिला-यमुनानगर

अनुकरणीय

मडलौडा कन्या विद्यालय: जहाँ होता है बेटियों का सर्वांगीण विकास

शिक्षा के साथ-साथ छात्राओं के सर्वांगीण विकास पर दिया जाता है बल

प्रदीप मलिक

ग्रामीण अंचल की प्रतिभाओं को तराशने व निखारने के साथ ही सरकारी शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए अध्यापक जी-तोड़ मेहनत करते नजर आते हैं। बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ कहावत को चरितार्थ करते हुए राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मतलौडा के अध्यापकों की टीम बेटियों को सबल व सशक्त बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती। पानीपत जिले से लगभग 18 किलोमीटर दूरग्रामीण इलाके में स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मडलौडा में बेटियों के सर्वांगीण विकास के लिए अध्यापक जी-तोड़ मेहनत कर रहे हैं। बात करें शिक्षण विधि में नवाचार से सिखाना, खेल का मैदान हो, सांस्कृतिक कार्यक्रमों से अग्रणी रहने की पहल हो, नाटक मंचन के माध्यम समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों को समाप्त करने की हो- हर क्षेत्र में राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक मडलौडा की बेटियों ने परचम लहराया है। जब विद्यालय में सुंदर परिसर, भयमुक्त माहौल, व्यवस्थित एवं प्यारे बगीचे, कर्मठ अध्यापकों की टीम हो, हर किसी का पढ़ने का मन होता है। इन्हीं विशेषताओं एवं उपलब्धियों की बदौलत राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मडलौडा में शैक्षणिक माहौल बना हुआ है जहाँ कई गाँव की छात्राएँ पढ़ने आती हैं। विद्यालय में कला व विज्ञान संकाय में छात्राओं को पारंगत किया जाता है। विद्यालय में सुबह व शाम को छात्राएँ नियमित कबड्डी का अभ्यास करती हैं जिससे उनके मनोबल में वृद्धि होती है।

छात्राओं की प्रतिभा निखारने के लिए होते हैं विभिन्न कार्यक्रम

राजकीय कन्या स्कूल मडलौडा में समय समय पर विभिन्न महापुरुषों के जन्मदिन, राष्ट्रीय पर्व, बालिका मंच आदि के माध्यम से बेटियों को मंच दिया जाता है जिससे उनके मनोबल को ऊँचा उठाया जा सके। बेटियों के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए उन्हें प्रार्थना सभा में अपने भाव विचार रखने का मौका मिलता है।

युवा संसद प्रतियोगिता में राज्यभर में रहे प्रथम स्थान पर

अध्यापकों के उचित मार्गदर्शन, अथक प्रयासों एवं छात्राओं की कठिन मेहनत की बदौलत राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मडलौडा की बेटियों ने एससीईआरटी गुरुग्राम द्वारा आयोजित युवा संसद प्रतियोगिता में वर्तमान समय के ज्वलंत विषयों को छूते हुए संसद कार्यप्रणाली को दर्शाया। उन्होंने सभापति से लेकर प्रधानमंत्री, मंत्रियों के कार्यों व जिम्मेदारियों का बखूबी दिखाकर दर्शकों की वाहवाही ली, जिसके बलबूते राजकीय कन्या स्कूल मडलौडा की टीम ने विगत वर्ष राज्यभर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसके लिए शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों ने प्राचार्य रणधीर सिंह एवं विद्यालय टीम की खूब प्रशंसा की। ग़ौरतलब है कि इससे पूर्व भी प्राचार्य रणधीर सिंह के नेतृत्व में उनके पूर्व विद्यालय आसन कलाँ की टीम ने भी युवा संसद प्रतियोगिता में राज्य में प्रथम पुरस्कार जीत पानीपत का नाम रोशन किया था। कुमारी सीमा को बेस्ट वक्ता के पुरस्कार से नवाजा जा चुका है।

सांस्कृतिक क्षेत्र में अग्रणी है कन्या स्कूल मतलौडा

छात्राओं को प्रदेश की सभ्यता व संस्कृति का ज्ञान कराने, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए सांस्कृतिक विधाओं का आयोजन किया जाता है। छात्राओं का उचित मार्गदर्शन करने में सांस्कृतिक कार्यक्रम इंचार्ज एवं संस्कृत अध्यापिका रश्मि का सराहनीय योगदान मिलता है जिससे बेटियों को नृत्य, रागनी, नाटक, साँझी, मेहंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेने का मौका मिलता है। विगत वर्ष आयोजित खंड स्तर सांस्कृतिक उत्सव में एकल नृत्य, समूह नृत्य, रागनी प्रतियोगिता, साँझी प्रतियोगिता में परचम लहराया। जिला स्तर पर भी स्कूल टीम ने समूह नृत्य में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। कक्षा ग्यारहवीं की कुमारी तमन्ना विभिन्न मंचों पर नृत्य में वाहवाही बटोर रही है।

ये हैं विद्यालय की कुछ उपलब्धियाँ -

1. विद्यालय की टीम ने युवा संसद प्रतियोगिता में पिछले वर्ष राज्यभर में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है जिसमें तत्कालीन निदेशक एससीईआरटी गुरुग्राम श्रीमती ज्योति चौधरी जी ने टीम को नकद पुरस्कार, स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।
2. स्तनपान विषय पर आयोजित नाटक प्रतियोगिता में राज्य में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है।
3. गीता जयंती पर कुरुक्षेत्र में आयोजित राज्य स्तरीय भाषण प्रतियोगिता में हरियाणा राज्य में तृतीय स्थान मिला।
4. हरियाणा सर्कल कबड्डी व क्रिकेट की राज्य टीम में विद्यालय की छात्राओं का चयन। कुमारी मीनू को बेस्ट खिलाड़ी के खिताब से नवाजा गया।
5. स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम में पेंटिंग प्रतियोगिता में विद्यालय की छात्रा राखी ने प्रथम स्थान जीतकर 11000 रुपए इनाम प्राप्त किया।
6. लीगल लिटरेसी कार्यक्रम के तहत आयोजित प्रतियोगिता में विद्यालय की चार छात्राओं ने जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया।
7. सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विभिन्न समूह नृत्य प्रतियोगिताओं में 40,000 रुपए का पुरस्कार प्राप्त किये।
8. हरियाणा सर्कल कबड्डी की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर परिवहन, आवास एवं कारागार मंत्री श्री कृष्णलाल पँवार ने 31,000 रुपए पुरस्कार से छात्राओं को सम्मानित किया।
9. कक्षा दसवीं व बारहवीं में विद्यालय की 23 मैरिट।
10. पॉलीथिन मुक्त हरियाणा विषय पर पेंटिंग प्रतियोगिता में हरियाणा में प्रथम पुरस्कार, 11000 हजार की राशि पुरस्कार के रूप में प्राप्त की।

अपनी बेटियों जैसा भाव है इन छात्राओं से - रश्मि

छात्राओं की मार्गदर्शक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की इंचार्ज संस्कृत अध्यापिका रश्मि बताती है कि अपने विद्यालय की छात्राओं के साथ वे अपनी बेटियों जैसा लगाव व जुड़ाव रखती हैं जिससे उनमें अपनापन भी बढ़ता है। साथ ही छात्राएँ भी बेहिचक अपनी बात उनसे साँझा करती हैं। उनकी प्रतिभा को तराशने के लिए हम जी-तोड़ प्रयास भी करते हैं। छात्राओं की मेहनत का सुखद परिणाम ये है कि हमारे विद्यालय की टीम विभिन्न मंचों पर सम्मान प्राप्त करती हैं।

छात्राओं को भरपूर अवसर देना है लक्ष्य - प्राचार्य रणधीर सिंह

विद्यालय की उपलब्धियों एवं विशेषताओं के बारे में अनुभव साँझा करते हुए प्राचार्य रणधीर सिंह ने बताया कि विद्यालय में जिस प्रकार से अध्यापक एक मजबूत टीम के रूप में जो प्रयास कर रहे हैं वह काबिलेतारीफ है। इसके साथ ही समाज में बेटियों को सबल व सशक्त बनाने व उन्हें अपने सपने साकार करने के लिए विद्यालय द्वारा भरपूर अवसर प्रदान किये जा रहे हैं ताकि वे अपनी काबिलियत के दम पर अपने जीवन को सँवार सकें। विद्यालय का प्रयास है कि हम उस धारणा को झूठा साबित करें जिसमें कहा जाता है कि बेटियाँ बेटों से पीछे हैं। विभिन्न मंचों पर विद्यालय एवं अपने इलाके का नाम रोशन करने वाली बेटियों को असीम शुभकामनाएँ एवं ढेर सारा आशीर्वाद।

म्हारी बेटी, म्हारी शान हैं - डीपीसी कौशल्या आर्य

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मडलौडा की उपलब्धियों पर बधाई देते हुए समग्र शिक्षा अभियान में जिला परियोजना संयोजक पानीपत कौशल्या आर्य ने कहा कि बेटियों को अगर समान अवसर हम देते हैं तो वो आसमाँ को छूने की ताकत रखती हैं। उन्होंने कहा कि सच में राजकीय कन्या स्कूल मतलौडा आज छात्राओं के सर्वांगीण विकास में निरंतर प्रयासरत है। विद्यालय की टीम अपने कर्तव्य को बखूबी निभाते हुए बेटियों को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर रही है। अच्छा परीक्षा परिणाम, सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अव्वल प्रदर्शन, खिलाड़ियों को भरपूर सुविधाएँ इस बात की परिचायक हैं कि विद्यालय सुपथ पर अग्रसर है।

विद्यालय टीम एवं प्राचार्य रणधीर सिंह को असीम बधाई।

कला अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
इसराना, पानीपत

तीन चित्रकार सहेलियाँ
खुशी, अंजली, मीना

डॉ.ओमप्रकाश कादयान

विश्वविख्यात चित्रकार पिकासो ने कहा था- 'मैं किसी भी बड़े कलाकार की नकल कर सकता हूँ, किन्तु बच्चों की कला की नकल नहीं कर सकता।' उन्होंने ये इच्छा भी जाहिर की थी कि मैं बच्चों जैसा चित्र बनाना चाहता हूँ। चित्रकार पिकासो की इस इच्छा से ज्ञात होता है कि वे बच्चों को साधारण चित्रकार नहीं मानते थे। उनका मानना था कि बिना किसी दबाव या प्रभाव के नितान्त मौलिक ढंग से चित्र बनाना बालमन से ही सम्भव है। बच्चों द्वारा बनाए चित्र कई मायने में उल्लेखनीय होते हैं। बच्चों के चित्रों के पीछे भी एक तार्किकता होती है तथा इनके मनोवैज्ञानिक अध्ययन से उनकी मनोवृति का स्पष्ट आभास मिल सकता है। चित्र बनाते समय बच्चों को आनन्दानुभूति होती है, नई स्फूर्ति जागृत होती है। बच्चे जो करते हैं मन से करते हैं। इसलिए जो कृति मन से सृजित होती हैं वह अधिक सुंदर होती है। बच्चों के चित्र चाहे देखने में अधिक सुंदर न हों, किन्तु उनमें भाव बड़े सुन्दर होते हैं। बच्चे जो देखते हैं, महसूस करते हैं जो सोचते हैं वही उनके चित्रों में होता है। बच्चे प्रकृति के अधिक निकट होते हैं इसलिए मोर तोता, चिड़िया, पशु, नदी, नाले, झील, सरोवर, पर्वत, जंगल, झरने, तितलियाँ तथा फूल, सूरज, चाँद, सितारे उनकी पेंटिंग का हिस्सा होते हैं। हजारों बच्चों में से किसी-किसी बच्चे की पेंटिंग बनाने की कला अद्भुत होती है। किसी कुशल चित्रकार की तरह कुछ बाल चित्रकारों की कूची जादू की तरह चलती है। ऐसी ही तीन बच्चे हैं- खुशी, अंजली व मीना।

फतेहाबाद के गाँव मोहम्मदपुर रोही के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की सातवीं कक्षा में पढ़ने वाली ये तीनों छात्राएँ सुन्दर चित्र बनाती हैं। इन तीनों छात्राओं को प्रकृति से खास तरह का लगाव है। यही कारण है कि ये अपने चित्रों में अधिकतर प्राकृतिक नजारों को स्थान देती हैं। तीनों बाल चित्रकारों की पेंटिंग में गगन चुम्बी ग्लेशियरों से ढके पर्वत, गहरी खाइयाँ, आकर्षक वादियाँ, हरे-भरे मन को लुभाते जंगल, झरने, परोपकारी नदियाँ, कलात्मक मकान, झोपड़ियाँ, रंग-बिरंगे पक्षी, पशु, सूर्योदय या सूर्यास्त के अनुपम नजारे देखने को मिलते हैं।

वैसे इनके चित्रों में बिगड़ते पर्यावरण की चिन्ता भी है तो कुछ सामाजिक मुद्दे भी। कुरीतियों के खिलाफ आवाज़ उठाती पेंटिंग भी बनाई हैं तथा ऊर्जा व जल बचाने का प्रयास भी इन्होंने किया है। खुशी का लक्ष्य शिक्षक बनकर विद्यार्थियों का भविष्य सुधारने का है। पेंटिंग करना, खेलना, पढ़ना व संगीत सुनना खुशी को अच्छा लगता है। खुशी ने गायन, पेंटिंग, रंगोली प्रतियोगिताओं में अनेक इनाम जीते हैं। पिछले दिनों नेशनल एडवेंचर कैम्प में भी खुशी ने पेंटिंग प्रतियोगिता में प्रथम इनाम जीता था। ये हर बार परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करके कक्षा में प्रथम स्थान पर रहती है। कई नाटकों में भी भाग ले चुकी है। खुशी अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता मक्खन देवी व राजेश कुमार तथा अपने शिक्षकों को देती है।

राजेन्द्र प्रसाद व कृष्णा देवी की पुत्री मीना अपनी कक्षा में दूसरा स्थान प्राप्त करती आई है तो बलबीर सिंह व वर्षा देवी की पुत्री अंजली भी यहाँ अपनी कक्षा में तीसरा स्थान प्राप्त करती है। साथ ही ये कुशल चित्रकार भी है। मीना व अंजली दोनों छात्राएँ अनेक प्रतियोगिताओं में बहुत से इनाम जीत चुकी हैं वहीं अंजली का लक्ष्य डॉक्टर बनना एवं मीना की इच्छा शिक्षिका बनना है। स्वतन्त्रता दिवस व गणतन्त्र दिवस व अन्य खास मौकों पर इन तीनों बाल चित्रकारों की अहम भूमिका रहती है। स्कूल प्राचार्य रोहताश कुमार का कहना है कि ये तीनों छात्राएँ बहुमुखी प्रतिभाशाली हैं। सामान्य बच्चों से इसलिए अलग है कि ये हर गतिविधियों में भाग लेकर बेहतर प्रदर्शन करती हैं। ऐसे विद्यार्थी जीवन में बहुत कुछ करने की अद्भुत क्षमता रखते हैं।

राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

मिट्टी में जान फूँकते हैं प्राध्यापक एकलव्य लखनपाल

सत्यवीर नाहड़िया

यदि कला के प्रति समर्पण सच्चा हो तो किसी नई विधा में भी पारंगत हुआ जा सकता है। सैंड आर्ट में माहिर कलाकार लखनपाल की साधना को देखकर यह कहा जा सकता है।जिले के गाँव खोरी स्थित राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में समाजशास्त्र के प्राध्यापक लखनपाल ने सैंड आर्ट का कहीं से कोई प्रशिक्षण नहीं लिया, किंतु एकलव्य की भाँति वे बचपन से ही निरंतर इस कला में साधनारत रहे, जिसका परिणाम है कि आज भी विभिन्न प्रकार की अनूठी कलाकृतियाँ बनाकर नाम कमा चुके हैं।

महेंद्रगढ़ जिले के गाँव बेवल में जन्मे लखनपाल बताते हैं कि बचपन में रेत में खेलते- खेलते बनाई गई कलाकृतियों पर वाहवाही मिलने से धीरे-धीरे कला के प्रति समर्पण बढ़ता गया,किंतु न तो इस संदर्भ में कोई मार्गदर्शन करने वाला था तथा न ही कहीं से प्रशिक्षण प्राप्त हो पाया। केवल पत्र-पत्रिकाओं तथा टीवी के माध्यम से सैंड आर्ट की जानकारी लेकर बस बनाता चला गया। कॉलेज तथा विश्वविद्यालय के छात्र जीवन में इस कला का प्रदर्शन करने का मौका मिला। महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय के छात्र के रूप में वहाँ आयोजित किए जाने वाले युवा उत्सवों में उनकी कलाकृतियों को विशेष रूप से सराहा गया।

सैंड आर्टिस्ट बताते हैं कि उन्होंने रेत से अनूठी कला कृतियाँ समय-समय पर बनाई हैं, जिनमें क्रिकेट विश्व कप की जीत, पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषणरहित तीज-त्योहार, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, मतदान का महत्व, चंद्रयान अभियान आदि प्रमुख हैं। उनकी दिली इच्छा है कि वे देश के दिग्गज सैंड आर्टिस्ट से मिलें ताकि उनसे इस कला की बारीकियाँ सीख पाएँ। वे भविष्य में भी सामाजिक चेतना के लिए मिट्टी से अनूठी कलाकृतियाँ विभिन्न अवसरों पर बनाकर नैतिक दायित्व का निर्वहन करेंगे और विद्यार्थियों को भी इस कला से जोड़ेंगे।

प्राध्यापक रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
खोरी, जिला-रेवाड़ी, हरियाणा

मैं विज्ञान पढ़ाता हूँ

मैं विज्ञान पढ़ाता हूँ
चुनौतियों को अवसर में
बदलना सिखाता हूँ
हाँ मैं विज्ञान पढ़ाता हूँ।

बच्चों को पैसा कमाने की
मशीन नहीं
तार्किक, वैज्ञानिक दृष्टि वाला
इन्सान बनाता हूँ
हाँ मैं विज्ञान पढ़ाता हूँ।

चुनौतियों से पलायन नहीं
धैर्यपूर्वक मुकाबला करना
सिखाता हूँ
हाँ मैं विज्ञान पढ़ाता हूँ।

धर्म के धंधेबाजों द्वारा
परोसा जा रहा अंधविश्वास
इस अंधश्रद्धा को
विज्ञान से परास्त कराता हूँ
हाँ मैं विज्ञान पढ़ाता हूँ।

प्रगति की अवरोधक
धर्म जाति की बेड़ियाँ
इन बेड़ियों को
विज्ञान से कटवाता हूँ
हाँ मैं विज्ञान पढ़ाता हूँ।

सुनील अरोरा
पीजीटी विज्ञान
राउ विद्यालय समलेहड़ी, पंचकूला
हरियाणा

क्या आप जानते हैं?

प्यारे बच्चो! बरसात के मौसम में अक्सर आप आकाश में इंद्रधनुष को देखते हैं? जानते हैं यह इंद्रधनुष कैसे बनता है? अगर नहीं तो आइये! मैं आपको बताती हूँ-

प्रकाश जब एक माध्यम से दूसरे माध्यम में प्रवेश करता है सो यह अपने निश्चित पथ से थोड़ा मुड़ जाता है प्रकाश का यह गुण अपवर्तन कहलाता है। अपवर्तन के समय प्रकाश में उपस्थित अलग-अलग रंग अपनी-अपनी प्रवृत्ति के हिसाब से कम ज्यादा मुड़ते हैं, अतः प्रकाश अपने सात रंगों में बँट जाता है। हवा, पानी, काँच आदि अलग-अलग माध्यम है जिसमे एक से दूसरे में प्रवेश करते समय अपवर्तन की क्रिया होती है। बरसात के दिनों में बादलों से टपकती बूँदों से सूर्य का प्रकाश टकरा कर आकाश में भी ठीक इसी तरह इन्द्रधनुष का निर्माण कर देता है।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूंगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

प्रश्न-1. किस नेता का 'राष्ट्रपिता' कहा जाता है?

उत्तर- महात्मा गांधी

प्रश्न-2. हमारे देश के पहले राष्ट्रपति कौन थे?

उत्तर- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

प्रश्न-3. मानव शरीर में सबसे ज्यादा संवेदनशील अंग कौन सा है?

उत्तर- त्वचा

प्रश्न-4. भांगड़ा किस प्रदेश का नृत्य है?

उत्तर- पंजाब

प्रश्न-5. हमारे देश के पहले प्रधानमंत्री का नाम क्या था?

उत्तर- पं. जवाहरलाल नेहरू

प्रश्न-6. सोना और चाँदी में से भारी धातु कौन सी है?

उत्तर- सोना

प्रश्न-7. किस हिस्से को कंप्यूटर का दिमाग कहा जाता है?

उत्तर- सीपीयू

प्रश्न- 8. विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप कौन सा है ?

उत्तर- आस्ट्रेलिया

पहेलियाँ

1.यह प्रकृति की एक प्रक्रिया, नाम जरा बतलाओ।
इसमें छोटे जलकण लटके, सदा हवा में पाओ।।

2.कण बारीक पदार्थों जो, पाए वायु में जाएँ।
ये कण बतलाओ तो बच्चो, आखिर क्या कहलाएँ।।

3.जब ईंधन जीवाश्म जले हैं, गैसें भी कुछ निकलें।
तभी राख के कण ये छोटे, बाहर आकर फिसलें।।

4.गर्म वायुमंडल जब होता, ताप अधिक हो जाए।
उस दौरान क्रिया यह जग में, नाम कौन-सा पाए।।

5.पौधों के तमाम भागों से, जब वाष्पित हो पानी।
क्या कह इसे बुलाया करते, घटना बड़ी पुरानी।।

6.एल्फा, बीटा, गामा किरणें, निकलें इसके कारण।
नाम बताओ इस घटना का, घटना है साधारण।।

7.भार, संहति और समय के, होते मापक जैसे।
ध्वनि-प्रबलता बोलो किससे, मापी जाती वैसे।।

8.चहुँदिस से मानव-शरीर पर, हवा डालती दाब।
कहने में खराब हो लेकिन, बिल्कुल नहीं खराब।।

9.एक यंत्र ऐसा भी होता, दाब वायु का मापे।
नम देखना अपने मुख से, पहले कौन अलापे।।

10.कभी क्रिया को तेज़ करें ये, कभी क्रियाएँ मंद।
कभी क्रिया में भाग न लेते, क्या पदार्थ ये चंद।।

उत्तर :- 1.कोहरा 2.ऐरोसॉल 3.फ्लाई ऐश 4.ग्रीन हाउस प्रभाव 5.वाष्पोत्सर्जन 6.रेडियो एक्टिवता 7.डेसीबल 8.वायुमंडलीय दाब 9.बैरोमीटर 10.उत्प्रेरक

- डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल
सेवानिवृत्त अध्यापक, शिक्षा विभाग हरियाणा

बंदर का कलेजा

किसी नदी के किनारे एक बहुत बड़ा पेड़ था। उस पर एक बंदर रहता था। उस पेड़ पर बड़े मीठे-रसीले फल लगते थे। बंदर उन्हें भरपेट खाता। एक दिन एक मगर उधर आया और बंदर से बोला - मैं मगर हूँ। बड़ी दूर से आया हूँ। खाने की तलाश में घूम रहा हूँ।

बंदर ने उसे खाने के लिए फल दिए। मगर ने उन्हें चखकर कहा- वाह, ये तो बड़े मजेदार हैं।

अब तो मगर रोज आने लगा। मगर और बंदर दोनों भरपेट फल खाते और बड़ी देर तक बातचीत करते रहते। एक दिन बंदर ने कुछ फल मगर की पत्नी के लिए भी दे दिये।

मगर की पत्नी को फल बहुत पसंद आए। उसने सोचा, अगर वह बंदर रोज-रोज इतने मीठे फल खाता है तो उसका मांस कितना मीठा होगा। यदि वह मिल जाए तो कितना मजा आए।

उसने एक तरकीब सोची। उसने बीमारी का बहाना किया। पत्नी बोली- मैं बहुत बीमार हूँ। मैंने जब वैद्य से पूछा तो उसने बताया कि वह कहता है कि जब तक मैं बंदर का कलेजा नहीं खाऊँगी तब तक मैं ठीक नहीं हो सकती हूँ। अपने मित्र बंदर का कलेजा लाकर मुझे खिलाओ।

मगर ने दुखी होकर कहा, यह भला मैं कैसे कर सकता हूँ। मेरा वही तो एक मित्र है।

पत्नी ने कहा- अच्छी बात है। अगर तुमको तुम्हारा दोस्त ज्यादा प्यारा है तो तुम उसी के पास जाकर रहो। तुम तो चाहते हो मैं मर जाऊँ।

मगर संकट में फँस गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। मगर ने काफी सोच-विचार के बाद तय किया कि वह अपनी पत्नी का जीवन जैसे भी हो बचाएगा।

यह सोचकर वह बंदर के पास गया। उसने कहा - मेरी पत्नी ने आज तुम्हें घर पर बुलाया है।

बंदर खुश हुआ। उसने कहा- मैं भी भाभी से मिलना चाहता था।

मगर बंदर को अपनी पीठ पर बैठाकर अपने घर ले चला। नदी के बीच में पहुँच कर उसने रास्ते में उसने बंदर को सारी बात बता दी। उसकी बात सुन कर पहले तो बंदर भौंचक्का रह गया। फिर उसने सोचा, केवल चालाकी से अपनी जान बचाई जा सकती है।

उसने कहा, मेरे दोस्त यह बात तुमने पहले क्यों नहीं बताई। मैं तो भाभी को बचाने के लिए अपना कलेजा खुशी-खुशी दे देता। लेकिन वह तो नहीं किनारे पेड़ पर टँगा है। तुमने पहले ही बता दिया होता तो मैं उसे साथ ले आता। चलो वापिस चलो में अपना कलेजा ले आता हूँ।

मगर तेज़ी से किनारे पर पहुँच गया। बंदर छलाँग मारकर पेड़ पर चढ़ गया। उसने मगर से कहा- जाओ मूर्खराज अपने घर लौट जाओ। अपनी दुष्ट पत्नी से कहना कि तुम दुनिया के सबसे बड़े मूर्ख हो। भला कोई अपना कलेजा निकालकर अलग रख सकता है।

सीख: दोस्तों के साथ कभी भी धोखेबाजी नहीं करनी चाहिए और संकट के समय अगर धैर्य के साथ सोचा जाए तो बड़ी से बड़ी मुश्किल भी दूर हो सकती है।

-पंचतंत्र से

कौआ

काँव-काँव चिल्लाता कौआ।
नहीं किसी को भाता कौआ।
बच्चों के हाथों की रोटी
छीन-झपट कर खाता कौआ।

काम समय पर करता कौआ।
किसी से नहीं डरता कौआ।
देश-प्रदेश में अलग-अलग
नामों से जाना जाता कौआ।

देख घड़े में थोड़ा पानी।
कंकड़ से रच नई कहानी।
देखो, कितनी चतुराई से
अपनी प्यास बुझाता कौआ।

भले हो उसकी कर्कश वाणी।
कौआ है सामाजिक प्राणी।
सारे कौए शोक मनाते
जब कोई मर जाता कौआ।

बलवन्त
ग्राम- जूड़ी, पोस्ट- तेन्दू, राबर्ट्सगंज
जनपद- सोनभद्र- 231216,
उत्तर प्रदेश

स्कूटी की सवारी

नई स्कूटी लेकर आया राजू भालू,
उसका दोस्त चिम्पू बंदर है बहुत चालू।
मीठी बातों से राजू को बहकाता,
रोज उसकी स्कूटी मजे से चलाता।।
एक दिन चिम्पू का चौराहे पर कटा चालान,
बिन हैलमेट पहने स्कूटी चलाता सीना तान,
करी बहुत मिन्नतें मिट्ठू तोता हवलदार की,
पर फिर भी तोते ने उसकी बात ना मानी,
चिम्पू ने चालाकी से राजू नाम से चालान कटाया।
बाद में चालान भरूँगा ये कहकर मिट्ठू को
स्कूटी के पेपर पकड़ाकर घर वापस आया।।
नोटिस आने पर चिम्पू बन गया अनजान,
चालान भरा राजू ने फिर दोनों की बरसों की
अच्छी खासी दोस्ती को लगा विराम।
चालाकी से दोस्ती कभी भी ना चल पाती।
आज नहीं तो कल वो खत्म हो ही जाती।।

नीरज त्यागी
ग़ाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश)

अविस्मरणीय रही अग्रोहा यात्रा

काफी

मैं इस समय राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सांगा की 9वीं कक्षा की छात्रा हूँ। विद्यालय की ओर से 15 नवम्बर को हम भ्रमण पर अग्रोहा (हिसार) गए हुए थे। जब हम स्कूल से निकले तो प्राचार्य जी निहाल सिंह ने हमें अनुशासन व अच्छे प्रकार से रहने को कहा। हम सब ने एक लंबी लाइन बनाई और अपने नम्बर से बस में बैठ गए। हमारे साथ हमारी अध्यापिकाएँ रेणु, पूनम, शालिनी मैडम थीं व श्री रामचन्द्र सर थे। कुछ देर बाद रेणु मैडम व पूनम मैडम ने चलती हुई बस से हाजिरी ली। जब हम भिवानी पहुँचे थे तब रामचन्द्र सर व भाई संदीप (चपरासी) ने सब्जी मण्डी में से फल की कुछ पेटियाँ लीं और बस चल पड़ी। कुछ देर बाद रेणु मैडम ने फोन से गाना बजाया। गाना बहुत अच्छा था। हम भी साथ गाने लगे। थोड़ी देर बाद रेणु मैडम ने कहा कि जिसका मन करे वह नाच सकती है। तब ग्यारहवीं-ए की छात्राएँ नाचने लगीं। रेणु मैडम ने मुझे भी कहा पर मैंने मना कर दिया। जब मुझे दूसरी बार कहा तो मैं भी नाचने लगी। रामचन्द्र सर ने हमारी वीडियो बनाई। एक घंटे बाद हम हिसार पहुँचे तो पूनम मैडम ने बैंकिंग वाले बच्चों को उतरने को कहा। पूनम मैडम बैंकिंग वाले बच्चे के बैंक में ले गई। वहाँ पर बच्चों ने बैंक के बारे में बहुत कुछ जाना। हम सब छात्राएँ पूनम मैडम की प्रतीक्षा कर रहे थे। थोड़ी देर बाद पूनम मैडम आ गई। और बस चल पड़ी। हम सब बच्चे हिसार कंप्यूटर लैब में पहुँचे तो वहाँ के छात्र-छात्राएँ हमारी तरफ देखने लगे। रेणु मैडम ने हमें एक लम्बी लाइन बनाने को कहा। हम सभी छात्र-छात्राएँ उत्सुक थे। जब हम लैब में पहुँचे तो वहाँ पर बहुत सारे कंप्यूटर रखे हुए थे। हम सब ने कंप्यूटर के बारे में बहुत कुछ जाना। हम सब छात्र-छात्राएँ नीचे आ गए तो रामचन्द्र सर ने हमें नीचे सीढ़ियों पर बैठने को कहा। हम सब नीचे बैठ गए। हम सभी ने फोटो खिचवाए और बस की ओर चल पड़े। रेणु मैडम ने हम सब बच्चों को खाना खाने को कहा हम सब बच्चों ने खाना खाया और हम अग्रोहा के लिए तैयार हो गए। रास्ते में हमारे साथ सभी अध्यापकों ने हँसी-मजाक की। हम सब बहुत खुश थे। जब हम अग्रोहा पहुँचे तो हमें जूते उतार कर बस से उतरने के लिए कहा गया। शालिनी मैडम ने हमें पार्क में घेरा बनाकर बैठने को कहा। रेणु मैडम व रामचन्द्र सर ने हमें फल दिए। हम सभी ने फल खाए और मंदिर की ओर चल पड़े।

हमें विशाल मंदिर दिखाई दिया जो महालक्ष्मी व अग्रसेन महाराज को समर्पित है। मंदिर किसी महल जैसा लगता है। प्रवेश गेट के दोनों तरफ हाथी की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ है। बीच में महालक्ष्मी, पश्चिम में सरस्वती तथा पूर्व में महाराज अग्रसेन का मंदिर है। दर्शन के बाद हम गुफा की ओर चल पड़े। हम बहुत ज्यादा खुश थे। हम सब ने वहाँ पर फोटो खिंचवाए। हम सब बच्चे खूब आनंदित हुए। घर आते समय रास्ते में हमने एक दूसरे से खूब हँसी-मज़ाक किया। मैंने अपने मम्मी और पापा को सारी बात बताई ।

अगले दिन स्कूल पहुँचे तो हमने अपने हिन्दी के अध्यापक श्री आनन्द प्रकाश जी को बताया तो उन्होंने सब बच्चों से कहा कि अपना-अपना यात्रा-वृतांत लिखकर दिखाओ। जो छात्रा सबसे अच्छा लिखेगी उसका लेख शिक्षा विभाग हरियाणा की पत्रिका **'शिक्षा-सारथी'** में छपने के लिए भिजवाएँगे। बहुत सी छात्राओं ने अपने लेख लिखकर उन्हें दिखाए। उनमें से मेरे लेख का चयन किया और पत्रिका को भिजवाने के लिए कहा। मैं अपने विद्यालय के प्राचार्य श्री निहाल सिंह जी, हिन्दी के अध्यापक श्री आनन्द प्रकाश जी और अन्य शिक्षकों का धन्यवाद करती हूँ। अब मैं उम्मीद कर रही हूँ कि मेरा यह लेख **'शिक्षा-सारथी'** में छपेगा।

सुपुत्री श्री राजेश सिंह
कक्षा 9वीं-ए
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सांगा
जिला-भिवानी

अनसोशल करता सोशल मीडिया

व्हाट्सएप, फेसबुक, इन्स्टाग्राम, टेलीग्राम इत्यादि की आभासी दुनिया में हम इतना खो गए हैं कि हमें आभास ही नहीं है कि हमारे आस-पास एक वास्तविक दुनिया भी है।

आजकल हमें जैसे ही किसी पर्व के आगमन का आभास होता है, उसी समय से हमारे पास बधाई संदेशों की भरमार होने लगती है। इन बधाई संदेशों में बहुत से सन्देश उन मित्रों के होते हैं जो त्योहार आने तक हमसे कई बार मिलेंगे। यहाँ भी कमाल देखिए कई बार मिलने के बावजूद न हमारी तरफ से न उनकी तरफ से प्रत्यक्ष आभार या शुभकामना ज्ञापित नहीं की जाती है। इस आभासी दुनिया ने हमें वास्तविकता से कितना परे धकेल दिया है। अगर मैं यह कहूँ कि हमें पंगु बना दिया है तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। हमारे पास विचार करने तक का समय नहीं है। हम विचार क्यों करेंगे? जब हमें सब पका-पकाया मिल रहा है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ जो हैं हमारी सेवा में। ये हमारी संस्कृति को बिलकुल नहीं जानती, फिर भी हमारे लिए सन्देश तैयार करवाती हैं। और बिना विचार किए लग जाते हैं हम उन्हें फारवर्ड करने। बधाई सन्देश देखते ही हम पर नशा सा छा जाता है और हमारी उंगलियाँ फोन की स्क्रीन पर चलने लगती हैं। उनकी तेजी से लगता है हमें किसी से पिछड़ने का डर है। शायद मन-ही-मन हमारी होड़ है खुद को फारवर्ड घोषित करने की। चलो जो भी है। दे दी बधाइयाँ। मन गया त्योहार। हो गई इतिश्री। खैर, जो भी हो। क्या हमारा ज्ञान इतना संकुचित है कि हम खुद से एक बधाई सन्देश तक नहीं लिख पाते हैं और अंधी दौड़ में शामिल होकर एक ही सन्देश को सैकड़ों लोगों तक फारवर्ड करते रहते हैं। ऐसा करने के लिए झूठी शान की खातिर हमारा झूठा दंभ हमें उकासता है। हम भूल जाते है इस होड़ में हमारी रचनाधर्मिता मरती जा रही है। हमारी आने वाली पीढ़ियों में नवसर्जन का लोप हो रहा है।

इन हानियों को एक बार हम भूल जाते हैं और विचार करें, क्या यही हमारी संस्कृति है? यही हमारा धर्म है। क्या हमें इतना ही सिखाया गया है कि तीज-त्योहारों को घर बैठे-बैठे मना लेना चाहिए। मेरे ख्याल से नहीं। हम एक बार अपने बचपने की ओर लौटे तो पाएँगे; उन दिनों हमारे त्योहार क्षणिक नहीं होते थे। त्योहार की ख़ुमारी महीने भर पहले छाने लगती थी। योजनाएँ बनती थीं, किसको क्या उपहार देना है। किसको पत्र लिखना है। पहले रफ कार्य होता था, फिर फाइनल होता था। इन सारी तैयारियों में त्योहार का मजा दुगना और चौगुना होता जाता था। घर से दूर रहने वाले लोग त्योहार पर घर पहुँचते थे। परिवार के सब सदस्यों का एक-दूसरे से मिलना होता था। हमारे बाल-गोपाल या यूँ कहें हमारी नूतन पीढ़ी परिवार की जड़ों के विस्तार को पहचान जाती थी। आज आभासी दुनिया ने सब घाल-मेल कर दिया है। हम धरती के एक सिरे से दूसरे सिरे तक बधाई संदेश भेज रहे हैं परंतु पड़ोस में बैठे भाई-बहन नजर नहीं आ रहे हैं। संदेशों की भीड़ में औपचारिकता निभाने की खातिर कई बार आभासी सन्देश बेमन से हम अपनों को भेज तो देते हैं लेकिन न जाने क्यों हमारे मन के भाव बनने-बिगड़ने लगते हैं। हमारी आत्मा हमें अहसास कराती है कि कुछ गलत हो रहा है परन्तु हम आधुनिकता के चोंगे तले उन भावों को दबा देते हैं और उन्हें सिसकने तक का मौका नहीं देते हैं।

हजारों वर्षों के अनुभव से निकले निष्कर्ष को हम नकार नहीं सकते हैं कि बच्चे अनुकरण से सीखते हैं। आधुनिकता की अंधी दौड़ में हम अपने लाडलों की सृजनात्मकता, पारिवारिकता, सौहार्द भाव जैसे संस्कृति के मूल तत्वों से दूर करते जा रहे हैं। कुछ हद तक सैकड़ों-हजारों मील दूर बैठे अपने अजीजों तक आभासी सन्देश भेजना सही हो सकता है परन्तु वह सन्देश स्वयंरचित होना चाहिए। उसके अन्दर हमारे वे भाव होने चाहिए जो उसके बारे में हम सोचते हैं। विशेषज्ञ की बनाई पोस्ट को ही यदि हम शेयर करते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब हम कोने में बैठे हुए कुढ़ रहे होंगे कि हमारे बच्चे हजारों मील दूर बैठे आभासी मित्रों को बधाई संदेश दे रहे होंगे परन्तु संकोचवश नज़रअंदाज़ करेंगे। अब यदि देर हुई तो बहुत देर हो जाएगी। आओ! अभी से अपने नजदीकियों को परिजनों संग प्रत्यक्ष मिलें और बताएँ आप उन्हें आभासी मित्रों से अधिक अजीज हैं। आपका हाल हम परोक्ष नहीं प्रत्यक्ष जानेंगे। आपके प्रति अपने भावों को, 'वाह-वाह, अति सुन्दर, ओह! सो सैड' जैसे शब्दों के माध्यम से मरने नहीं देंगे।

महेन्द्र सिंह 'सागर'
प्राथमिक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक पाठशाला बुधसेली
खंड सिवानी, जिला भिवानी, हरियाणा

2019

दिसंबर माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 दिसंबर- विश्व एड्स दिवस
3 दिसंबर- विश्व दिव्यांग दिवस
4 दिसंबर- भारतीय नौसेना दिवस
7 दिसंबर- सशस्त्र सेना झंडा दिवस
8 दिसंबर- गीता जयंती
9 दिसंबर- अन्तरराष्ट्रीय भ्रष्टाचार विरोधी दिवस
10 दिसंबर- मानव अधिकार दिवस
14 दिसंबर- राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस
16 दिसंबर- विजय दिवस
25 दिसंबर- क्रिसमस दिवस
26 दिसंबर- शहीद ऊधम सिंह जयंती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Does it pay to speak English in India ?

There is a widely held belief that there are sizeable economic returns to English-language skills in India. This column seeks to estimate the wage returns to English skills in India. It is found that being fluent in English increases the hourly wages of men by 34% and of women by 22%. But the effects vary. Returns are higher for older and more educated workers and lower for less educated, younger workers, suggesting that the complementarity between English skills and education appears to have strengthened over time.

India is a linguistically diverse country - it has thousands of languages, of which 122 have over 10,000 native speakers (2001 Census), with English being 44th on the list of languages in India in terms of the number of speakers.

One in five Indian adults can speak English. Four per cent report that they can converse fluently in English, and an additional 16% report that they can converse a little in English (India Human Development Survey (IHDS) 2005).1 English-speaking ability is higher among men - 26% of men speak at least a little English, compared to 14% of women. Same is true for those belonging to so called higher castes, urban residents, and younger and better educated population. Almost 89% of individuals who have at least a Bachelor´s degree can speak English as compared to only 11% for those who have completed 5-9 years of schooling, and virtually nil for those who have less than four years of schooling. The reason could be that many public schools in India follow the "Three Language Formula"2 recommended by the central government, which generally leads to teaching of English language in middle school.

Due to the country's British colonial past, English remains an official language of the federal government and medium of instruction in educational institutions run by it. Therefore, to be

a government official or teacher (other than at low levels), one needs to be proficient in English. These occupations are considered attractive in India because they are white-collar jobs that provide secure employment and good benefits. Moreover, due to the rapid expansion of international trade and outsourcing in the post-liberalisation era, possessing English language skills has become even more lucrative. Despite this, surprisingly there are no estimates of the wage returns to English skills in India. The impediment appears to have been the lack of micro data containing measures of both earnings and English ability. In our study (Azam, Chin, and Prakash 2010), we quantify the English premium using IHDS 2005 data3.

How big are the returns to English in India?

If we look at the average hourly wages by English skill among male and female workers, there appear to be significant returns to English. Males who can speak fluent English earn a wage rate of Rs. 42 per hour as compared to a wage of Rs. 10 per hour for a non-English speaking male. The respective wage rates for females are Rs. 33 and Rs. 6 per hour. However, these figures probably overstate the returns because the averages have not been adjusted to take into account factors such as education levels and location that have a bearing on wage rates (with or without English skills). Hence, to obtain a credible estimate of the causal effect of English-language skills on wage rates, we focus on workers of the same age, gender, social group, educational attainment, secondary school leaving certificate test performance, district of residence and sector of residence (urban or rural), and then, within this group, compare the wages of those who speak English with those who do not.

Estimates from Table 1 suggest that for men, hourly wages are on average 34% higher for workers who speak fluent English and 13% higher for workers who speak a little English, relative to workers who speak no English. The return to being fluent is as large as the return to completing secondary school, and half as large as the return to completing an undergraduate degree. For women, the average return is 22% for fluent English and 10% for a little English.

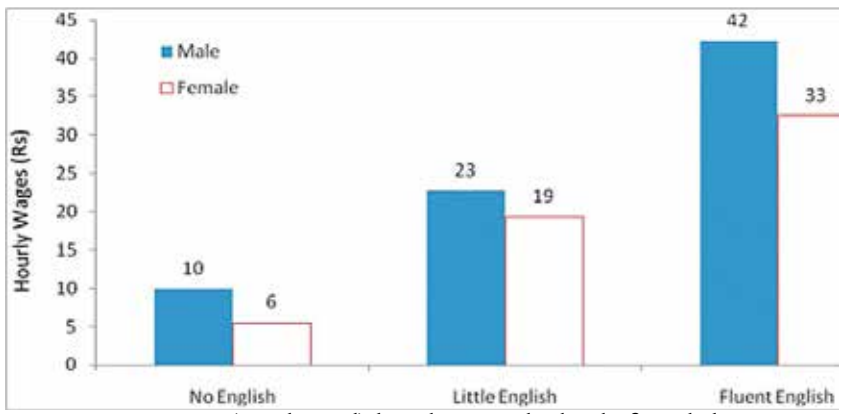

Figure 1. Average (unadjusted) hourly wages by level of English

Returns to English by age and education

We find that the returns to English-language skills are, on average, higher for older workers and for more educated workers. Most intriguing are the returns by both experience and education of the worker. To show this, we report in the last four rows of Table 1 the estimated returns to schooling for four groups of workers: less educated (less than Bachelor's degree) older (aged 36-65) workers, more educated (at least a Bachelor's degree) older workers, less educated younger (aged 18-35) workers, and more educated younger workers.

A striking finding is that older

	Returns to fluent ENGLISH	Returns to little ENGLISH	Returns to fluent ENGLISH	Returns to little ENGLISH
	FOR MEN		FOR WOMEN	
Average	34%	13%	22%	10%
No B.A., aged 36-65	53%	34%	49%	44%
With B.A., aged 36-65	28%	14%	15%	23%
No B.A., aged 18-35	13%	-6%	-11%	-9%
With B.A., aged 18-35	40%	17%	55%	29%

Table 1. Effect of English-language skills on wage ratesp

workers earn high returns to English regardless of their educational attainment while younger workers earn high returns only when they are highly educated. For example, older men without an undergraduate degree receive a 53% wage premium for being fluent in English, compared to 28% for older men with an undergraduate degree. In contrast, younger men without a degree receive a 13% wage premium for being fluent in English, compared to 40% for younger men with a degree. It is worth highlighting that, among younger men, the returns to English increase as educational attainment increases. Further, we find that English skills do not raise wages at all for younger men who have not completed their secondary school education.

These results are consistent with the idea that education and English skills have become more complementary over time. For example, at the entry level, workers with English skill may have been able to find a good job a few decades ago whereas now only the subset with more education would find a good job. This could be because there is now more competition for good jobs as the supply of educated workers has greatly expanded, or because there are new jobs that require both higher education as well as English skill to perform (such as many jobs in information technology (IT)).

Returns to English by geography

To the extent that jobs rewarding English tend to be located in cities (where higher levels of government, multinational firms, or IT firms tend to be located), all else equal, we might expect higher returns to English in urban areas. However, urban areas also tend to have a larger supply of English-proficient workers - both because urban schools produce more English speakers than rural schools, and because cities may attract English speakers from elsewhere. We find no evidence of a differential return to English by urban/ rural residence for men.

We also allow the returns to English to vary by historical English prevalence (share of the population reporting English as a mother tongue or a second language in the individual's district of residence according to the 1961 Census), and find lower returns to English in districts with high English prevalence. This is not surprising because this is consistent with the returns to English being lower in places where the supply of English-proficient workers is higher.

Returns to English by IT presence

We also look at the returns to English by presence of an IT firm. We find that though districts with an IT firm have more prevalence of English, they have significantly lower estimated returns to fluent English. This suggest that IT firms choose to locate in districts where English-proficient and educated workers are in greater supply, which is consistent with the findings of Shastry (2011).

Why should we care?

Quantifying the returns to English-language skills in India is of interest for several reasons. First and foremost, a deeper understanding of the returns to learning English will help individuals and policymakers in India make decisions about how much to invest in English skills.

But the amount to invest is the subject of active debate. In India, as well as in many other developing countries, there are some who favour promoting the local language as a way of making primary schooling more accessible, and strengthening national identity. At the same time, there are those who argue that learning English leads to economic prosperity given the role of English in the global economy. Hence, many Indians are willing to spend extra money on schools and tutors to gain English proficiency. Given that English skills are costly to acquire – it takes time, effort, and often money, to learn English – choosing the optimal amount to invest in English-language skills involves comparing expected costs with expected benefits. This study provides the first estimates of these expected benefits.

This study also provides insight on the more general question of the value of English in a context where English is not a prevalent language. English is often used as a working language and many countries, even ones that are not former British or American colonies, invest in English skills.

What does this mean for policy?

We find that there are large, significant returns to English-language skills in India. But the returns are considerably lower for younger workers – who

are more recent entrants into the labour market. For recent entrants, English skills help increase wages only when coupled with more education – those who have not completed their secondary schooling will not see their wages increase due to acquisition of English-language skills. English language skills are useful; however, benefits are achieved when these skills are accompanied by higher education. As a result, imparting English skills to adults may not necessarily raise their wages. Hence, policymakers need to be aware of the complementary nature of language-skills when designing policies.

The growth in the Indian economy, along with incredible advances in the services sector and growing middle-class, has created demand for new skills and job profiles. While, a diploma or a degree can provide employment, it is the worker's skills that lead to his/ her enhanced productivity and ability to reap advantages of new economic opportunities. Within this context, promotion of an education policy with a focus on acquiring English language skills becomes imperative. In this study, we uncovered some patterns in the returns to English skills that were previously un-documented for India and that are worth further exploration - the language skill-education complementarity, lower returns for lower castes, and lower returns in places with greater historical English prevalence.

Notes:

- The IHDS is a nationally representative dataset covering over 40,000 households located throughout India.
- The "Three Language Formula" calls for teaching in the mother tongue or regional language during primary school; introducing a second language (this may be Hindi in states where it is not a dominant language, or English or some other modern Indian language) after primary school; and introducing a third language after middle school.
- Closely related to our study are Rosenzweig (2006) and Chakraborty and Kapur (2008), who estimate the returns to attending a school with English as the medium of instruction – but the returns to attending an English-medium school is not in general the same as the returns to English-language skills. Clingingsmith (2007) and Shastry (2008) have also contributed on the topic of English and Indian economic development.

https://www.ideasforindia.in/topics/human-development/does-it-pay-to-speak-english-in-india.html

"Reprinted with permission from 'I4I' Ideas for India (www.ideasforindia.in)"

Mehtabul Azam
Oklahama State University
mazam@okstate.edu

Aimee Chin
University of Houston
achin@uh.edu

Nishith Prakash
University of Connecticut
nishith.prakash@uconn.edu

Positioning the Idea of Effective Mentoring: An investment in Teacher's Development

Quality of teachers is the most powerful school-related determinant of student success.Educators play a key role in building a vibrant learning system at school and develop the necessary skillsets in students to deal with challenges emerging in the new knowledge age.

The Indian education system has made a significant shift over the past few years, shifting from traditional teaching techniques such as memorisation to focusing on developing skillsets for the future with a focus on problem-solving and critical thinking. This means that the changing school learning environment can help teachers to better engage students, providing hands-on learning through tools to students, encourage them to collaborate with one another, and integrate technology in work.

It has been explored already to which extent effective teacher mentoring is important for developing classroom practice and the potential of teachers. The significant shift in the education system from academics to overall development of students is demanding schools to develop a learning ecosystem and enabling processes in which successful mentoring relationships can develop. The term 'learning ecosystem' refers to the conditions in which a school becomes a place for professional discussion, conducive atmosphere to inquiry and experimentation, and where professional learning of teachers is systematically encouraged through meeting or workshops.

What do we mean by mentoring?

The term 'mentor' is used to describe a knowledgeable, experienced, and highly proficient teacher who works with a teacher or less experienced colleague. A mentor is not an instructor and the mentees are not students; they are both learning partners.

We assume that mentors know a great deal about teaching and learning, students, parents and the school, this knowledge and know-how is invaluable to other teachers.

Why mentoring is important for school effectiveness?

- Having regular access to a classroom mentor is profoundly important to teachers and their development in term of acquiring new teaching skills, strategies, communication techniques, self -reflection and problem-solving capacity.
- Presence of a mentor in school enhances confidence, self-esteem and sense of identity among teachers' community by acknowledging, appreciating and disseminating what innovation a teacher brings to the school community.
- Mentor aids and provides opportunities to capture and analyse evidence of students learning, leading to valuable insights for further designing lesson plans or classroom changes
- Mentors act as a link between district administration and school and they also foster positive and productive relationships among all school staff demonstrating values of collaboration, shared challenges and teamwork.

Challenge with mentoring and its implication:

The government of Haryana has initiated a unique 'Saksham Ghoshna' program to achieve 80-percent grade-level competence amongst government school students by the end of 2019 through regular child assessments, teacher mentoring and school monitoring processes. Mentoring is seen as a priority, central to achieving students learning outcomes, capacity building of teachers and school improvement under the Saksham program.

Despite having a great emphasis by the state government of Haryana on school mentoring as a part of its education reform, as per my classroom observation it remains to be seen if there will be significant influence on the teachers' teaching practices and learning.

How enabling is our school culture,enabling structures and processes we have in place to support the professional knowledge of teachers? What might we need to put in place to make mentoring work for us?

The term 'enabling structure and cultures' refer to the school atmospheres of supportive leadership,trust in the principal, peer trust and respect,collective success, openness to improvement,time and places to meet and talk, interdependent teacher roles, communication structures, teacher empowerment and school autonomy.

Challenges at the School level

The elements of a school's learning ecosystem are called 'enabling structure' – specifically the scheduling for a regular staff meeting and space to reflect upon practices and share challenges and insights into classroom practice. Learning a schools ecosystem also includes professional learning communities, availability of resources for team development and classroom observation schedules.

- Poor condition of enabling structure in schools.
- Non-availability of resources and arrangements for teacher's professional development.
- Inadequate leadership and management competencies of school heads, time allotment and lower priority for teacher's self-development.

Challenges at the district level administration

Sometimes administrative factors make one or more of the schools enabling structure including time and places to meet and reflect into classroom practices,experimentation, teach-

er empowerment and school autonomy difficult or beyond the scope of a school to practically manage.

- For instance, if it is impractical for the district administration to manage expert mentor to each school teacher of the same subject discipline to provide classroom support, what could be the alternative steps to fill this gap?
- What if it were impractical for mentor and teacher to work in close physical proximity, how could the need for such nearness be addressed?
- What if school visit timetable has already been prepared and it is difficult to find enough time to meet and work together on a regular basis? What if the mentoring visit is infrequent and often unable to meet the need of both mentor-teacher?

Mentoring Visit : For example- English Lecturers at DIET (District Institute of Education & Training), Madina observed some challenges at Govt. Primary School, Rohtak-

1. Most of the students don't know how to read and write even in upper primary classes.
2. The challenge of irregularities, students often remain absent and some students migrate during festive and harvesting season for long.
3. Both poor parents' educational and socio- economic backgrounds influenced the education of their children.
4. By and large majority of parent's don't participate in parent-teacher meetings at school.

Teachers shared compulsion of syllabus completion on time and disclosing of non -teaching responsibilities etc. as their concerns in achieving any program goals.

Who is responsible for it?

In such challenging situations, what if the mentor is unable to offer support by which the teacher can foster a positive, productive relationship with all member of school staff, students, their families and the wider community?

What else might need to be in place to support mentor and teacher in such circumstances ?

Each mentor brings a stance to solve the problem which reflects his priorities, knowledge, values and beliefs. Being a mentor, what techniques and strategies do I need to know that help a teacher to impact child learning outcome?

What do the findings and field engagements suggest about mentoring?

1. Selecting subject competent mentors and paired with schoolteachers, (currently selected mentors irrespective of subject expertise mentor all primary teaching staff.)
2. Leadership at school level which promoted the process of improving the capabilities and skills of teachers through peer experience, exchange meets, technological advancement in education and workshops on advance classroom pedagogy .
3. Equipping selected mentors with interpersonal communication, pos-

itive outlook, data-driven problem-solving approach along with advanced knowledge of content and pedagogy.

Interaction with mentee teachers revealed that effective mentoring is made possible by addressing issues including physical accessibility to one another, carefully considering teaching loads and teacher's learning needs and appreciative inquiry approach by mentors.

Conclusion and Implication of findings:

Several researchers clearly identify that schools where mentoring was most effectively recognised and valued the importance of having time to collaborate, experiment and reflect. (e.g., Aitken & Sinnema, 2013).

The best school learning ecosystem allows teachers to observe others, to be observed by others, and to be part of groups in which teachers share together, grow together, and learn to respect one another's work.

Teacher's mentor need extra training on classroom transactional process, classroom observation tools, evidence-informed communication, data analysis and effective interpersonal skills in order to be effective. Mentors should remain in contact with teachers in order to share experiences and offer useful tips and strategies.Mentors should have experience teaching the same subject area for modelling and coaching mentees. It facilitates more in-depth discussions, of effective instructional strategies, important aspects to cover, and classroom management issues between mentor and teacher.

However, just assigning anyone to be a mentor is not enough.

Sunil Gill
Program Leader
Kaivalya Education Foundation
Rohtak & Jhajjar

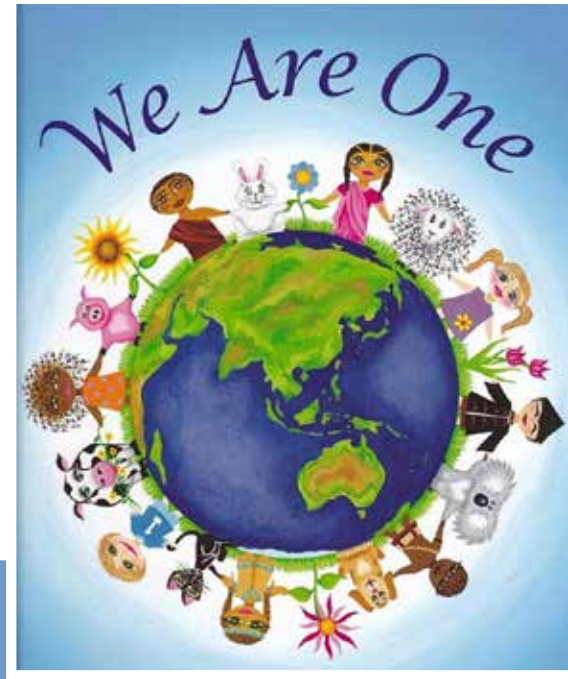

Do you judge people by their skin?
If God is the father to all of us
Black or white -aren't we kin ?

Do you judge people by their smell?
Sitting in the couch
You must deserve heaven;
Working hard and sweaty
A labourer hell ?

Do you judge people by how they speak?
This we learn post-birth from surroundings
Who in the womb does teach?

Do you judge people by their brain?
It takes a bit of heredity
We don't have control on;
Upbringing in the family;
Good education to train!

Do you judge people by their money?
Most of the rich are poor;
Empty pockets have welcoming space
Money comes from destiny...

~ Rajan

Snowden

RUPAM JHA

When I learnt that I was to travel to Himachal Pradesh on duty, I was a wee bit disappointed. Our team consisted of nine members and the others were really excited at the prospect. But me having had a long overhaul at Chandigarh, trips to Himachal Pradesh were frequent then. Also the exotica of other hill states seemed more at that point. But not having much choice in the matter, I set on my journey to Himachal Pradesh in the month of March 2019.

Boarding the Shatabdi from New Delhi railway station, I felt a wave of nostalgia. I had travelled that route many a times. From Chandigarh by road to Solan, stopping for lunch at Giani da Dhaba, Dharampur for amazing Punjabi food. Being in the hills is always an exhilarating feeling for me as I have spent my childhood in the hills. The light drizzle added to the cold and enhanced the charm of the hills.

That day we travelled for from Solan via Baddi and Nalagarh, to Bilaspur, halting for the night. Surprisingly Bilaspur was sans trucks as it was a Monday and it was also cold, misty and beautiful with the lake barely visible.

Manali beckoned us next morning and with us on this journey was the river Beas meandering all along. The long tunnel en-route, waterfalls galore all seemed to be joining in to give us the touristy feeling. Pandoh, a mid –point with its idyllic setting and power plant was the perfect place for lunch.

After Kullu, the snow clad mountains appeared closer and closer, almost as if reaching out to us. Our excitement grew and so did the cold, both matching their tempos. Welcoming us at Manali was freshly fallen snow. The cold notwithstanding, we dived into the snow. Our layers of woolens seemed inadequate and soon there was snow brushing against our skin, having entered our gloves and socks. Interacting with tourists at the Mall, it dawned upon us that other tourists too were unprepared for the cold. As the beginning of March was not the peak tourist

season, a lot of the resorts were shut.

Knowing that the Rohtang Pass was shut, we proceeded to Solang Valley the next morning. All along the route, snow was our companion. Solang Valley was like one had never seen before. I had done paragliding here earlier. But what one saw was a visual treat. The snow there was fresh and very deep. Hiring snow boots, as snow can be slippery; we began ascending the mountain path. Snow fights began and lolling in mirth, rolling in the snow we took in the snow filled ambience.

I wished I had hired a snowsuit so that I could have played more without the fear of getting wet. Not all tourists ventured deep into the snow, some enjoying the snow while sipping hot and sweet tea in one of the tea shacks. We decided to join them.

Being shutterbug happy, the result of which I have displayed just above, everyone's Facebook was activated. Lo and Behold! What do we see and feel, something flaky—Snowfall. Ecstasy being the correct emotion of the moment.

The traffic jam that followed brought us back to the real world. Of course we visited the famous temples there, Hadimba and Vashisth Temple.

By now, becoming blue with cold we decided to call it a day early.

Early next day, trekking down to the river front, the gurgle and gush of the Beas our companions, we ensconced ourselves on the rocky beach. With a heavy heart and matching heavy breakfast, the descent to Kullu begins. Bhuttico showrooms provide us with retail therapy at Kullu as we drape ourselves in the warmth of the shawls.

A long drive follows, empty roads, cold weather and scenic beauty accompany us all the way to Palanpur where we the weary travelers decide to stay overnight.

Snow clad mountains glistening in the sunshine greet us through the window panes in the wee hours of the morning. It was a lovely morning and the tea gardens said it all. Driving all the way to Dalhousie, a peaceful cantonment town, we had not anticipated so much of snow and so much of forested areas. Khajjiar was covered with snow and we had to go all the way downhill again to climb back to reach Mini Switzerland-Khajjiar.

The homeward bound day dawned and leaving the pristine hills we headed towards Chandigarh. Driving past the mystic Pong Dam, halting to seek the blessings of the Almighty at the Gurudwara Anandpur Sahib, lunch at an a/c dhaba at Ropar, touching upon the Sukhna Lake, we caught the Shatabdi train at Chandigarh. Delhi at last we say, carrying memories galore with us to our hearth.

Subject Specialist
SCERT Haryana,
Gurugram

SAVE THAT DROP OF OIL

As children we would read an advertisement which stated that we save that drop of oil or walk to our destination twenty years later. But unfortunately even after twenty years, we have not learnt our lesson.

The traffic has increased immensely even with the price of fuel sky- rocketing. Though there are reports of a drop in car sales, there is no reduction of poisonous fumes emitted from cars.

It would be cleaner air which we breathe if more people chose public transport over private vehicles.Public transport has developed beyond imagination but due to the surge in population the demand surpasses the supply. Also the last mile connectivity remains an issue.

Low floor CNG buses have reduced toxic emissions but have not cut it out totally. Metro is a wonderful way to commute and is widely used. The travel time is shorter, you do not see the snarls of traffic, the ride is smooth and safe, there is saving of fuel and conservation of the environment. Taxis booked through apps save us the hassle of parking. There has been many a tussle over parking lots.

Walking and cycling should be encouraged but can only be possible if the air quality is good. As it is our world, it is us who have to take the initiative to keep the air breathable.

Carpooling is a viable option. School authorities can take up this issue and co-ordinate with the PTA. Resident Welfare Association can incorporate carpooling in their agenda list.

Status symbol is often linked with the size of the car. Never mind the pollution, materialism becomes more important.Whereas the efforts of every individual should count. There should be a premium on public transport and not the other way round.

It has been noted that the Generation Y is not enthusiastic about learning how to drive. That is appreciable as the traffic, parking and maintenance of a car is all becoming difficult to surmount.

Pedestrian paths should be designated and clearly marked out. Cold weather calls for brisk walks after being all wrapped up.In balmy times, look out for the cool breeze. When it is sultry, remember toxins are being removed while you are sweating it out. Those on mean machines should ensure pedestrian safety.

Cycle tracks should be built in order to be able to make the modest cycle, a means of transport. Cycles with bar codes should be made available at Metro stations so that the last bit of the commute is made easier. Helmets should be made mandatory for all cyclists.

To encourage the use of public transport, efforts should be made to make the journey more comfortable. Travelators can be introduced so that the distance covered from the Metro drop off point to destinations close by can be easily accessed. Shuttle services too can serve the same purpose for longer distance.

CNG and other eco –friendly alternatives can

be delved upon. Solar energy, Geo-Thermal and Wind Energy too can be harnessed. Fuel efficient vehicles can be encouraged. Many a slogan about switching off engines at traffic junctions when the lights are red.Driving within speed limits for the benefit of all. Another habit to be kicked off is using the car as a seating space while waiting,with the air-conditioning on in full blast. Step down while waiting and take a stroll, it is good for the environment, good for you and good for mankind as well.

As oil is not being produced at the rate at which it is being demanded, conservation is the only form of production. There is no other choice. Any step taken in this direction is a step forward. Every drop conserved by you is your donation towards the environment.

Humanity can and humanity will reverse the process of resource depletion. There is a lot of power in humanity and can help develop a consciousness, a sense of responsibility towards the environment.

Oil is more precious than gold. Let us save it and gift it to our children. We do that with gold so why not with oil. When we plan fuel conservation, we plan not just for the year ahead but for the decades that lie ahead.

Reduce dependency on oil, oil imports cost very dear to the economy of a country. Be thrifty in this matter. Save it, and do remember that every drop counts. We are living in a world where health and fitness are a priority. So let us take a vow to clear the air and conserve fuel in our reservoir and not store fat in one's own reservoir. This can be done by enhanced walking and reduced car rides.

Rupam Jha
Subject Expert
SCERT Haryana, Gurugram

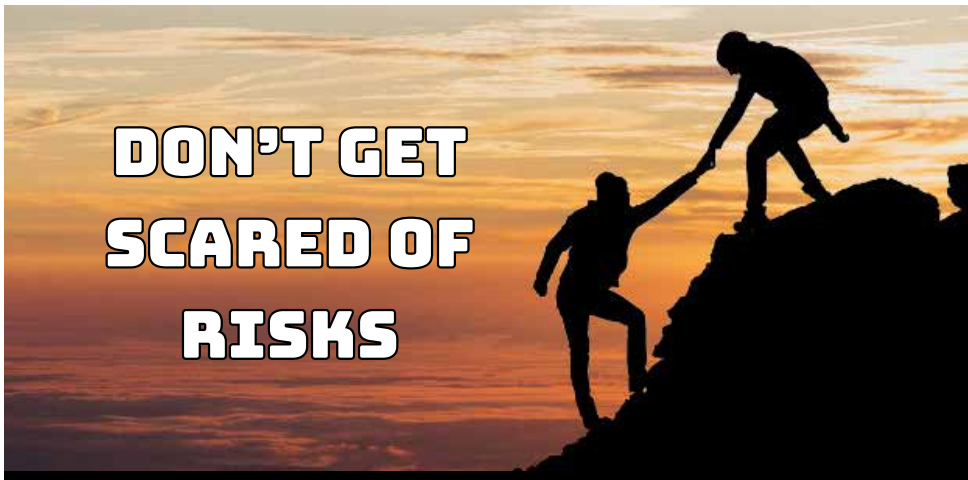

DON'T GET SCARED OF RISKS

Risks and challenges are a part of life. The more we find difficulties, stronger we will be. There are a few people who are living with such a cowardly attitude that they never take any initiative to find the solution of a problem. In any challenging situation, they are finding themselves unable to come forward and take responsibility and lead others. Instead of having a leadership attitude they just want to remain behind and follow others like sheep. The person who never takes risks can never grow in life. It is a law of nature, risks take you towards success. It is true that there are chances of failure as well but also possibilities of success. It is right that when anyone doesn't take risks he may be safe and far away from failures but there is nothing adventurous and joyous in his life. Life will be going on in the same routine and nothing enjoyable is there in life and finally no growth. A coward or a timid person can't relish the beauty of newness in life. He is just living with a negative approach and always thinking of the losing side of the life. The only way to come out of this cowardice is to understand the fact that God has given all the powers, talent, capability and strength to all human beings without any partiality. No one is born special. Specialty lies in the way of using the talent. The ultimate potential of everybody is almost the same in this world. The thing that matters is awakening that hidden potential and working in the right direction. Some people are able to awaken that potential by themselves but others may need some external source for initiation. Nothing matters in both the cases. The only thing that matters is under-standing our hidden potential and capability and working towards the right direction. Practically we can get rid of timidity by doing the things deliberately which we are afraid of. Once you have taken the initiative for a good cause you will find that you are getting help from many fronts and ultimately your risk has taken you to the heights.

Now, get ready and accept challenges with a positive attitude and reach the new heights…

Gunjan Goel
Educationist
Hisar

Thermocol
From Bane to Boon

Sh. Prabhat Kumar Saran

Water is one of the most important resources. It is one of the nature's precious gifts, which help in sustaining life on earth.Important limitation of today is the availability of water. It is now being realized that water will be replenished soon. Agriculture depends on the spatial and temporal variations of rainfall.Thus, the water of monsoons can be abundant during the season and rare in the non-monsoon season, when mostly needed. Water loss can be minimized from evaporation by storage reservoirs for the maximum use of limited supply. Control of evaporation has become one of the major water conservation strategies

Evaporation is a process by which liquid changes into vapour form with increase in temperature. Water molecules have constant motion and some gets the energy to break through water surface and escape into air as vapour. It is a beneficial phenomenon in regulating global water balance and it is responsible in contributing to huge losses from water bodies.

The average annual evaporation from water bodies varies in India from 50 cm to 300 cm which is higher than the rainfall received. Rain water conservation is needed for agriculture production. So, it is important to conserve water from open ponds or water bodies.

On the other hand,"Thermocol is a byproduct of polythene which can neither be recycled nor decomposed. They make soil infertile and end up as marine debris in water. It exudes extremely toxic gases on burning, which can cause respiratory problems and even death, if inhaled. The upper layer of thermocol melts when hot food is put on plates made of it, thus harmful chemical mix into the food and can cause digestive problems, even deadly diseases. Thermocol, like polythene, should have been banned much earlier in the state." But the reality is that if we purchase any equipment or appliance that is covered with huge amount of thermocol for its safety, rather what its effect on environment.

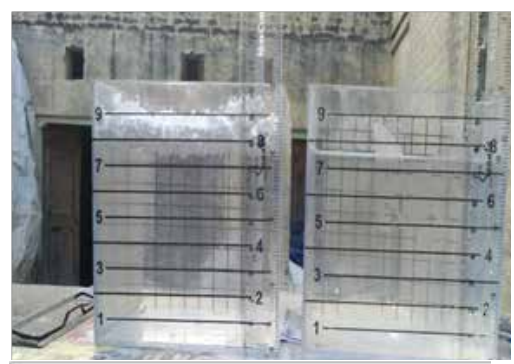

To cope with above major problem a minor research project has been done to reduce the effect on evaporation using thermocol as a barrier. To eliminate these issues was the motto behind minor research project carried out by two students of class 10th (Manjot Singh and Navdeep) of our school GSSS Baragudha district Sirsa, under the banner of National Children Science Congress (NCSC).

The method used here is experimental method. We have taken two decimetre cube which is filled with water upto the mark of 8cm (i.e., 80 mm) as shown below.

Then, one cube is filled with the waste thermocol to obstruct direct sunrays and kept on the roof top. This setup had been checked daily and observations were taken on alternate day (upto 34 days). The observation graph shown above, clearly indicates that cube with thermocol restrict the evaporation upto very high extent i.e., about 87% (as per our calculations).Therefore, use of thermocol will be good material to reduce evaporation from open water body.

From the above experiment it can be concluded that the presence of thermocol over water bodies will restrict the evaporation up to high extent. This means that more water will remain in water bodies if this practice is adopted by the society. This work has great significance in arid regions, where water scarcity is already a common problem.

Technically, this may be the best way for converting thermocol from a bane to boon for our society and solve the two major issues.

Lecturer in Physics
GSSS Baragudha, Sirsa

How to deal with inferiority complex

What is Inferiority complex? It is the feeling in which one feels less to another. People with inferiority complex assume other people have a competitive edge over everything. This is all due to the mindset of a person. It is the feeling when one compares himself with the others.

Symptoms of Inferiority Complex:

1. **Extreme sensitivity towards other people's opinions**

When a person is keen to know what other think about his opinion. It affects him from taking wise decision.

2. **Social withdrawal**

Different people have different opinion and by listening these opinions the chance of feeling inferior is high. They avoid social gatherings and feel shy to interact.

3. **Comparing**

When a person compares himself in each and every situation with others he may feel inferior if he doesn't get the same or desired results. You always think you're not as successful, or not as physically attractive.

4. **Imagining negative judgment**

When a person feels someone with negative judgment against him he feels insecure and it may lead to different health problems.

5. **Fear of Making Mistakes**

A person learns from his mistakes. But regular judgment makes one anxious.

6. **Criticism**

Cognize any form of criticism as a personal attack on our self esteem might send us into a spiral of self-enmity and discomfort.

How to Overcome Inferiority Complex:

1. **Deal with the cause and tackle the problem**

Find the root cause of your problem, understand the problem and try to take different measures to tackle it.

2. **Be kind to yourself**

Whatever the situation is, try to be calm. Do something that you enjoy the most. Take care of your needs, and hopefully, everything else will get easier.

3. **Surround yourself with people whom you trust**

The people whom you trust will help to get out from difficult situations. Try connecting with those people who make you feel good.

4. **Strength**

Strength defines the person characteristics. These are the good qualities a person possesses. Work on improving your strengths.

5. **Know why you feel inferior**

What is the cause of feeling inferior is to be examined. Try to overcome this by putting your efforts.

6. **Stop worrying about what others think**

Everyone has a different point of view. Some of them will be in favor and some against. So it is best if a person does what he wants.

7. **Build Your Self Confidence**

Feel confident when working and this will bring positive results.

Have a proper knowledge about work.

8. **Replace negative words with positive words**

Replacing negative words with positive helps to remain confident and gives you the boost to obtain better results.

9. **Understand that everyone has flaws**

Inferiority complex is mainly caused by one big misconception, which is that others have no flaws. You have to really understand and recognize that everyone has their own flaws, you're not the only one.

10. **Avoidance**

Avoidance means avoiding any external stimulus that could evoke a feeling of inferiority. The external stimulus includes any person or a particular situation. Avoiding persons who flagrantly put people down.

To conclude, allow me to remind you of Anthony Trollope, "Never think that you're not good enough. People will take you very much at your own reckoning."

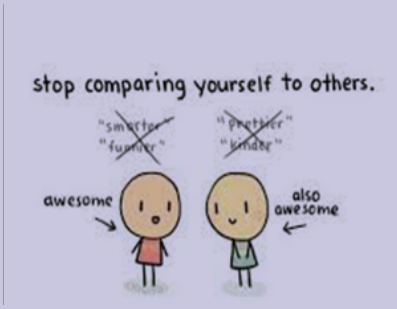

References:

https://www.pickthebrain.com/blog/8-strategies-help-let-go-inferiority-complex/

https://www.thrivetalk.com/inferiority-complex/

https://www.depressionalliance.org/inferiority-complex/

Akul Mahanjan
Intern (Can & Will Foundation)

Peaceful societies : exploring the role of a teacher

In a world where everyone speaks and few listen, the need for peace education remains largely unexpressed. Session after session, we drown our students in academic curriculum and co-curricular activities, whereas we should be immersing them in wisdom to lead a peaceful tomorrow.

Sounds a little harsh? Well, it was meant to be.

As educators and teachers to millennial students, it is absolutely essential that we not only acknowledge the world they live in but also prepare them for the world that we would leave them in. The world we are bestowing upon them isn't exactly a haven; in fact it is far from being one.

Is our education system really preparing them for future?

Arithmetic, multilingualism, and even STEM education may not be enough to equip them to live in a world that is in perpetual conflict with itself and its dwellers.

What is the need for peace education?

UN released a report called 'Behind the numbers: Ending School Violence and Bullying' in January 2019.

The fact alone that UN actually released a report specifically about violence and bullying in schools highlights the criticality of the issue.

The facts and figures in the report are quite shocking :

- 246 million children and young people experience school violence every year.
- It is noteworthy that school violence and bullying happens in all countries and causes children to drop out, poor grades and even mental health issues.
- The perpetrators of violence can be fellow students. School staff and even teachers. At times students face violence at home and report to teachers and/or share with friends.
- The drivers of violence are disability, gender, ethic, cultural, linguistic differences, social and economic status, sexual orientation and gender identity.

According to another report , in India alone, 84 percent of school going children and young people experience some form of violence.

What makes it worse is that a large majority of our institutions and teachers are not even equipped to address the issue in terms of legal, psychological and institutional resources.

Our institutions are at a disadvantage because we lack support systems and capacity to manage and deal with instances of violence, let alone take preventive measures.

What we can do is to start at the root and educate our children and young people. We need to develop sensitivity around the issues so that we are able to create a supportive framework

and build capacity in the caregivers.

How do we do that?

Well, we start by acknowledging that even though there might be no instances of violence in our schools, our schools still might not be 'safe spaces'.

As school leaders can

- Enforce national policies and develop our own policies.
- Allocate resources to support the policies.
- Organize trainings for teachers and all other school staff including housekeeping and transportation staff to build a safe environment in school.
- Partner with appropriate agencies for support and services.

Apart from putting systems, policies and resources in place, we, as teachers can do something that is far more effective and powerful.

We can do what we do everyday of our lives; we can educate our young learners to be peace loving and kind.

Only 'we' can educate them to be sensitive and considerate. We can show them how to respect differences, embrace diversity and hence, dissolve the drivers of violence.

Here are some small, little things you can do right in your classroom:

- Educate them to communicate and not just have a conversation. Give them the vocabulary and opportunity to express themselves. Tell them the exact words to define to their exact emotional states. This helps them understand what they are feeling and how to talk about it.

- Tell them, I mean literally tell them, that they are respected and in a safe space. This helps them to open up and be truthful. Also create and nurture an environment that is mutually respectful.
- Cultivate gratitude: Thank your students at every instance and encourage them to thank each other and others. Also thank your colleagues and other staff members. Another magic word is sorry. Use that too.
- Encourage them to listen with their minds and hearts. Show them how to respond with empathy. The monkey does as it sees. Listen to them with your heart and respond with empathy. Learning to listen helps students understand others better. Go around the classroom, encouraging every student to speak up, especially the ones who do not.
- Respect the views/opinions of your students, even if you disagree. This one is quite tricky. If a student says something that you don't agree with, tell the student that you respect their opinion. Then tell them what you think and state the reasons why. Then ask them the reason why they think a certain way. What you really have done is that you have demonstrated that every thought must have a logically sound reasoning and you have also enabled the student to find their reason.
- Breathe with them. As soon as you enter a classroom, instead of diving straight into transaction of education, calm down the class and have the students sit comfortably and breathe. Help them with breath rhythms, instructing them to inhale and exhale, count slowly till 5 and then start with the teaching. This would reorient them and you will have calmer, more productive classrooms.

Lastly, why should 'we' do this?

We should do this not only because we are role models for them but also we are the chosen ones to nurture the future. We are probably the only hope for the children and young persons. I do not appeal to the qualified and trained professional in you. I appeal to the caring and nurturing gardener in you who sows the seeds of knowledge in the minds of the young ones and nurtures them with the hope that they would one day grow into trees that would bear fruits of wisdom.

I hope that Hope survives and flourishes.

Neha Singh
Director
St.Kabir's School & Siddharth International School Hisar

ODE TO MOTHER EARTH

A place of life, a place of spring,
Where flowers grow and birds sing,
Green , Blue, Red and Pink,
Lots of colours, don't you think?

Every seed nurtured, every soul glad,
Some of the best time you ever had,
Peals of laughter, Tears of joy,
Happiness for every girl and boy

Cool streams run down the hills,
Nothing to pay, no more bills,
Trees sway in the gentle breeze,
Grass so long; It is up till your knees!

But suddenly darkness gains some power,
Bringing rain; a slight shower
Thick smoke hovers around
New inventions are soon found

Coal, oil, gas and noise
Stop for a moment, think with poise,
Is it true what beholds my eyes?
Paradise turned into world of cries,

Sadly, there's hope fading away,
Death waits all night and day.
'More electricity', the civilians demand,
'Pollution grows', they say unplanned,

Global warming is a new situation,
Or perhaps a realistic illusion.
Or could it be a message from God?
Or maybe a joke; a fraud!

Tree huggers all come together,
Hoping this won't last forever,

Few civilians have begun to realize,
What a horrific site might meet their eyes,

The governments can't see a cure,
For this problem never occurred before,
Politicians plan, plan and plan,
Solution still is far from man.

'Less electrical use' , the people shout,
But what about the companies and the laws they flout,

'Stop smoking', the children protest,
Summoning more civilians to do their best,

But right now the world remains unchanged,
A special operation ought to be arranged,
Death of millions wait in the future,
Unless we come back with ideas to nurture,

The weather is changing as fast as lightning,
Global warming becomes more frightening,
Animals live under the scare of extinction,
This is reality, not a joke; not a fiction.

But this is just my view of the story,
My dream is to see the earth back in its glory
I bet the aliens don't wanna come to rule,
Must have heard of global warming in school!

THE EARTH WILL COME TO A DREADFUL END,
UNLESS WE TAKE OUT TIME TO MEND.

Shabih Fatima
Class VII- A
Ahlcon International School, Delhi.

Letter from Santa

Hello Children,
Well usually people especially kids write letters to Santa Claus telling him what gifts they want for Christmas. What if we added a twist to that and did the opposite? Imagine you're Santa and you have to write a response or letter to anyone. It can be to yourself also from Santa's point of view as to how nice or difficult it must be for him to visit so many houses in different places on Christmas eve. Try it bring your own unique & original flavour to the letter. Have fun.

(Disclaimer: This letter is a work of fiction, humour and satire on our current times. It is not intended to defame anyone.)

Ho-ho-ho Ms. Singh, 25.12.2019

I got your letter asking me to stopover at your Delhi residence. There was so much smoke in the air; I could see more chimneys than houses.

I tried flying low in my sleigh but Rudolf kept coughing, so Im sorry to tell you i had to open up the oxygen masks you had asked for as gifts. His red nose had turned black with all the smog. I've had to increase the size of my sleigh, as all the kids these days ask for is big-screen TVs, laptops and high-end mobiles. It's hard to carry all that fragile stuff and impossible not to break them sliding down chimneys, so yes I just use the front door. It's very difficult to tell if the children have been good or naughty, as they spend all day in front of screens and we cannot monitor online content from the North Pole, due to bad network. All my local elves had to be replaced with elves from China and Japan so I could cope up with the demand. I've also outsourced to India.

I was trying to navigate the flyovers and reach South Delhi; as its kids there who demand the most gifts; I lost my way and landed up in Karol Bagh. When I greeted the Punjabis there with my customary Ho-ho-ho; they suddenly broke into a song, "Oh-ho-ho-ho, oh-ho-ho-ho, oh-ho ishq tera tadapave….".

They grabbed hold of me calling me 'Santa Singh' and started dancing the bhangra. The shopkeepers forced me to buy some ugly and overkill sweaters which looked too bulky even for the North Pole but they kept shouting in my ears- "Pashmina pure pashmina…."

I hastened back to the park where I had left my reindeer and found Prancer was slumped over and retching after eating some leftover 'chole-bhature' from the open dustbin. He also mistook the toxic foam floating on the Yamuna for snow and ate some. We dodged the crowds and sped away. When we were travelling by road so as to be able to find our way to your home we were chased by some stray dogs so we had to fly low again.

I somehow managed to reach your house; placed gifts under the undernourished Araucaria bush that you pass off for a Christmas tree, but at least you don't cut Fir trees. The reindeer helped themselves to the snacks you left for us. Those oily 'pakoras' and 'samosas' were spicy as hell but thanks to you, Rudolf's nose is red again.

Next Christmas if you continue to live in Delhi I might need Sonar. I'm heading back before you humans melt my polar ice caps too. I've made my sleigh amphibious just in case.

Yours in jest,
Santa Claus 'Singh'

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

आदरणीय संपादक जी,

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक पढ़ने का अवसर मिला। नवंबर माह में संविधान दिवस के उपलक्ष्य में संविधान की उद्देशिका व मुखपृष्ठ पर बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर का चित्र प्रासंगिक रहा। स्कूल एजुकेशन क्वालिटी इंडेक्स में प्रदेश की बढ़ती रैंकिंग देखना सुखद लगा। अध्यापक क्षमता संवर्धन का कार्यक्रम 'निष्ठा', छात्रा सुरक्षा के लिए छात्रावाहिनी योजना की विशद जानकारी मिली। हर्ष का विषय है कि इसी अंक में मेरे कल्चरल फेस्ट पर लिखे लेख को स्थान मिला। सत्यवीर नाहड़िया द्वारा विज्ञान शैक्षणिक यात्रा पर लिखा लेख खूब ज्ञानवर्धक था। शेष सामग्री भी रोचक व मनोरंजक थी। कुशल संपादक मंडल को दिल से बधाई।

प्रदीप मलिक
कला अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
इसराना, पानीपत

आदरणीय संपादक महोदय,

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का उत्तरोत्तर सुधरता रूप देखना सुखद लगता है। सभी स्थायी स्तंभ खूब सारी जानकारियों से भरे होते हैं। श्रेष्ठ कार्य करने वाले विद्यालयों, समर्पित भाव से विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में जुटे शिक्षकों व प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की उपलब्धियों को रेखांकित करने वाले लेख सभी के लिए प्रेरक होते हैं। सुनील अरोरा की कविता 'मेरी विज्ञान अध्यापिका' काफी पसंद आई। डॉ. सीमा शर्मा का सुदर्शन पूनिया पर लिखा लेख हर शिक्षक के मन में प्रेरणा व ऊर्जा का संचार करने वाला है। कुल मिलाकर एक सारगर्भित व ज्ञानवर्धक अंक के लिए पत्रिका की पूरी टीम को हार्दिक बधाई।

डॉ. ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद

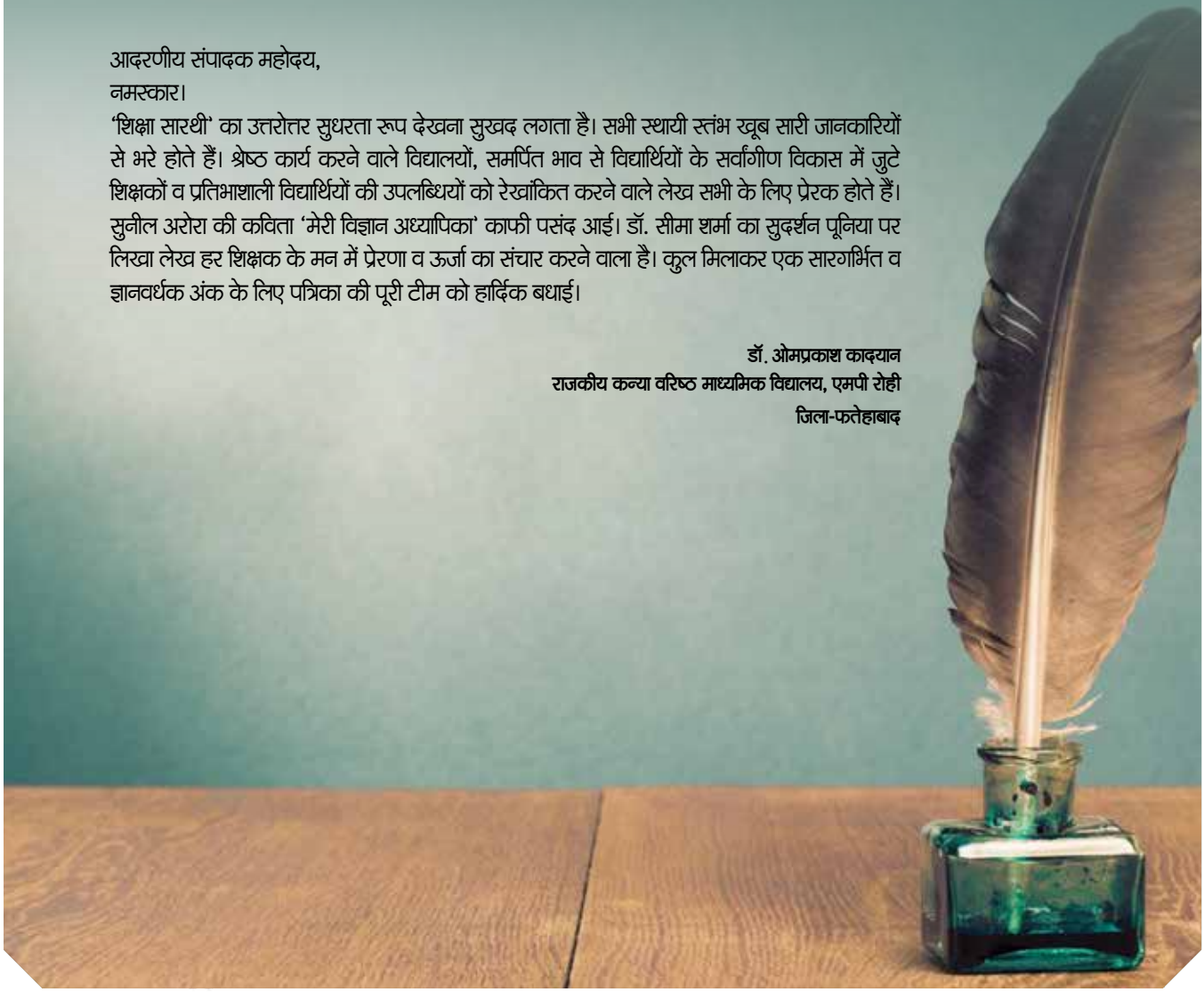

सरकारी स्कूल यो म्हारा

ये स्कूल बड़ा प्यारा, सरकारी स्कूल यो म्हारा,
खेल-कूद शिक्षा सक्षम की, संग गुरुओं का न्यारा।
स्कूल मॉर्निंग एसेम्बली की, होती पहली बारी,
सुन्दर लम्बी बाल कतारें, फूलों की सी क्यारी,
एक्टिविटी सारी गजब सै, राष्ट्रगान फिर नारा।
ये स्कूल बड़ा प्यारा, सरकारी स्कूल यो म्हारा।।

पहली-दूजी घंटी बाजै, सीखें गणित और भाषा,
घंटी-घंटी समय बीत ज्या, जागै नित नई आशा,
अज्ञान का पंछी दूर डिगरग्या, खुल्या जो ज्ञान पिटारा।
ये स्कूल बड़ा प्यारा, सरकारी स्कूल यो म्हारा।।

घंटी ज्ञान की पाँच गई, इब चूल्हे तै खुशबू आई,
मंत्र बोलै म्हारे गुरु जी, भोजन करते बहन और भाई,
सुस्ती तन की रही पास ना, भोजन लागै न्यारा।
ये स्कूल बड़ा प्यारा, सरकारी स्कूल यो म्हारा।।

पारी दूज अंदाज निराला, खेलण की इब बारी,
खो-खो कुश्ती और कबड्डी, होरी सै तैयारी,
खेल-कूद विज्ञान-कला, गायन संग भाईचारा।
ये स्कूल बड़ा प्यारा, सरकारी स्कूल यो म्हारा।।

सभी गुरुजी टीम भाव से, फर्ज हैं सारे निभाते,
बच्चे भी सग मस्त यहाँ, रोज स्कूल हैं आते,
सुनो 'कुमार' यो गीत सुनावै, विद्या मन्दिर यो म्हारा,
ये स्कूल बड़ा प्यारा, सरकारी स्कूल यो म्हारा।
ये स्कूल बड़ा प्यारा, सरकारी स्कूल यो म्हारा।।

सुदेश कुमार
अंग्रेजी अध्यापक
राजकीय माध्यमिक विद्यालय पाडला
खंड-खोल, रेवाड़ी

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/17-19

सक्षम हो अपना हरियाणा

जीवन में हम बढ़ते जाएँ, हम बच्चों ने मिल कर ठाना
सक्षम हो मेरा हरियाणा, सक्षम हो अपना हरियाणा

हिंदी हिंद का गौरव है हम इसकी शान बढ़ाएँगे
अंग्रेजी के महत्त्व को भी जन-जन तक पहुँचाएँगे
बहा संस्कृति का अविरल-जल भागीरथ कहलाएँगे
अपनी क्षमता का परचम, हम जग में लहराएँगे
नयी सुबह की नयी किरण का, आँगन-आँगन दीप जलाना
सक्षम हो मेरा हरियाणा, सक्षम हो अपना हरियाणा

जोड़-घटा भिन्न गुणा-भाग का खाता समझ में आता है
सूरज चाँद-सितारे धरती माता समझ में आता है
सागर का पानी बादल बरसाता समझ में आता है
जीव-जंतु और पेड़-पौधों से नाता समझ में आता है
पर्वत-घाटी नदियाँ-झरने, कुदरत का हैं ये नजराना
सक्षम हो मेरा हरियाणा, सक्षम हो अपना हरियाणा

हर बच्चा मेहनत के दम पर, उच्च-स्तर पर आया है
हरेक विषय और हरेक कला में खुद को निपुण बनाया है
गुरुजनों ने समय-समय पर उत्साह सदा बढ़ाया है
'सभी पढ़ेंगे तभी बढ़ेंगे', पल-पल यही सिखाया है
नया सवेरा नयी सोच से, शिक्षा का प्रकाश फैलाना
सक्षम हो मेरा हरियाणा, सक्षम हो अपना हरियाणा

सक्षम के पारस पत्थर से चमक उठे सरकारी स्कूल
अज्ञान-अँधेरा चीरा हमने, जब कर में धारा त्रिशूल
शिक्षा रूपी ज्ञान-हिंडोला, रहे हमारे बच्चे झूल
दुनिया की बगिया फिर महकी खिल गए रंग बसंती फूल
नयी क्रांति नयी पहल को, दुनिया भरने मॉडल माना
सक्षम हो मेरा हरियाणा, सक्षम हो अपना हरियाणा

-डॉ. लोकेश शर्मा
मौलिक मुख्याध्यापक,
राजकीय माध्यमिक विद्यालय, पोटली
यमुनानगर, हरियाणा

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114